...ल चिकित्सकों एवं
...षधाल...ों के लिये



बैद्यनाथ पंचाङ्ग

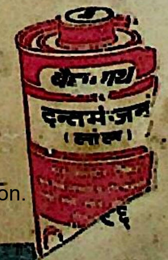
संवत् २०३१

आयुर्वेद भवन प्राइवेट लिमिटेड

दाँतों को चमकदार
और निरोग रखने के लिये

बैद्यनाथ
द... ...जन
लाल





विषयसूची

प्रमुख रोगानुसार बैद्यनाथ औषधियाँ

रोग व दवा

अतिसार—

कुटजारिष्ट
दुग्ध बटी

साधारण ज्वर—

मृत्युंजय रस
आनन्दभैरव रस

मियादी बुखार—

कस्तूरीभैरव रस वृ०
ब्राह्मी बटी
लक्ष्मीविलास रस नार०

मलेरिया बुखार—

प्राणदा
मलेरिया टेबलेट

सर्दी-जुकाम, इन्फ्लुएंजा—

महालक्ष्मीविलास रस
त्रिभुवनकीर्ति रस
हरतालगोदन्ती भस्म
जुकामो

जीर्णज्वर—

वसन्तमालती रस
जयमंगल रस
सुवर्णमालिनीवसन्त वृ०

अजीर्ण, मन्दाग्नि—

अग्निवर्धक बटी
राज बटी
क्षुधाकारी बटी
लवणभास्कर चूर्ण
हिंग्वष्टक चूर्ण

रोग व दवा

पेट-दर्द—

महाशंख बटी
शूलवर्जिनी बटी
अर्क पुदीना
शंखद्राव

गैस (पेट में वायु)—

गैसान्तक बटी
लशुनादि बटी
शंख बटी
हिंग्वष्टक चूर्ण

संग्रहणी—

स्वर्ण पर्पटी
लौह पर्पटी
चित्रकादि बटी

कब्जियत—

विरेचनी
इच्छाभेदी रस
पंचसकार चूर्ण
त्रिफला चूर्ण

आँव-पेचिश—

ईसब्बेल
क्लोरोडिन बी. पी. सी.
भुवनेश्वर रस

अतिसार (पतले दस्त)—

सिद्धप्राणेश्वर रस
पीयूषवल्ली रस
गंगाधर रस

कफ, खांसी—

कासामृत
केफटेब
च्यवनप्राश

रोग व दवा

वासावलेह
कफमिक्सचर
कास बटी
चन्द्रामृत रस
लवंगादि बटी

श्वास (दमा)—

श्वासचिन्तामणि रस वृ०
श्वासकुठार रस
श्वासकल्प
मल्लसिन्दूर
च्यवनप्राश स्पेशल
कनकासव

अम्लपित्त—

सूतशेखर रस नं० १
अम्लपित्तान्तक योग
धात्री लौह

पित्त-विकार (दाह-उष्णता)—

मोती पिष्टी नं० १
सूतशेखर रस नं० १
प्रवाल पिष्टी
कामदुघा रस
स्वर्णमाक्षिक भस्म

वात-विकार—

वातचिन्तामणि रस वृ०
योगेन्द्र रस
रसराज रस
महानारायण तैल
महाविषगर्भ तैल
रसोन तैल

बच्चों के रोग—

बालामृत
जन्मघूंटी

रोग व दवा

कुमारकल्याण रस
रसपीपरी (कस्तूरीयुक्त)
कुमारी आसव नं० ३
अरविन्दासव
शंखपुष्पी तैल

स्त्री-रोग—

अशोकारिष्ट
सुन्दरीकल्प
रजःप्रवर्तिनी बटी
प्रदरान्तक रस
पुष्यानुग चूर्ण

प्रसूत-रोग—

दशमूलारिष्ट
सौभाग्य बटी (प्रसूत)
प्रतापलंकेश्वर रस
सौभाग्यसुंठी पाक
सुपारी पाक

नेत्र-रोग—

आइ-आँख
नयनी (काजल)
नेत्रामृत सुरमा
सप्तामृत लौह

शारीरिक कमजोरी—

वसन्तकुसुमाकर रस
सिद्धमकरध्वज स्पेशल
मकरध्वज बटी
च्यवनप्राश स्पेशल
महाद्राक्षासव
मृतसंजीवनी सुरा
जीवनकल्प

रोग व दवा

दिमाग-कमजोरी—

ब्रेनटेब
सारस्वतारिष्ट
ब्राह्मी तैल
दिमागपौष्टिक रसायन

सिर-दर्द—

दर्दोना
शिरःशूलादिवज्र रस
हरताल गोदन्ती भस्म
षड्बिन्दु तैल
पेनबाम

मूत्र-विकार—

सुवर्णराजवंगेश्वर
बंग भस्म
चन्द्रप्रभा बटी
चन्दनासव

खून की कमी (पीलिया)—

लौह भस्म
मण्डूर भस्म
नवायस लौह
लौहासव
पुनर्नवादि मण्डूर

खून की खराबी—

सुरक्ता
रक्तशोधक बटी
अनन्त सालसा
रसमाणिक्य
सारिवाद्यरिष्ट

खून की खराबी—

चर्मरोगारि

रोग व दवा

सुरक्ता
अनन्त सालसा
चालमूंगरा तैल
गन्धक रसायन
महामञ्जिष्ठाद्यरिष्ट
घाव मलहम

तिल्ली, जिगर—

तिल्ली की दवा
कुमारी आसव
लीवरोल

अर्श (बवासीर)—

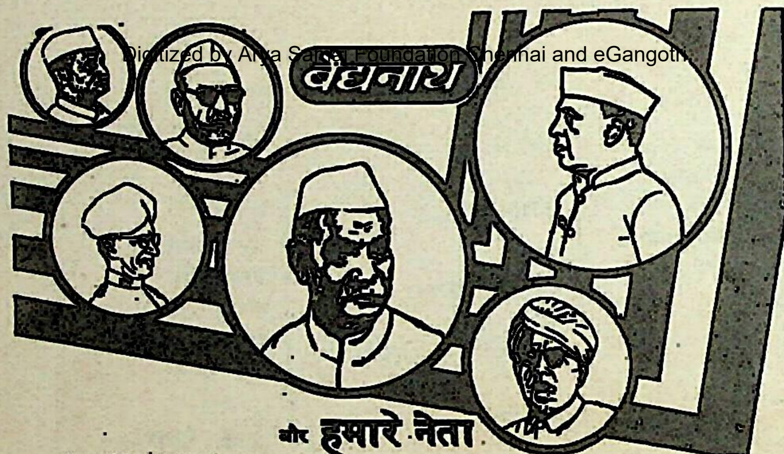
बवासीरमलहम
अर्शकुठार रस
अभयारिष्ट
अर्शोघ्नी बटी
अकीक भस्म

दिल के लिए—

स्वर्ण भस्म
मोती भस्म नं० १
जवाहरमोहरा नं० १
अभ्रक भस्म सहस्रपुटी
योगेन्द्र रस
अर्जुनारिष्ट
याकूती

चोट, मोच, जले-कटे पर—

सप्तगुण तैल
हीलर मलहम



भारतीय गणतन्त्र के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद की शुभ कामना :—

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्राइवेट लि० ने कांग्रेस-प्रदर्शनी में भारतीय औषधियों और आयुर्वेदीय रीति से चिकित्सा का प्रबन्ध किया। मैंने उसे देखा और सब प्रबन्ध को देखकर बहुत खुश हुआ। आयुर्वेद का पुनरुद्धार अत्यन्त आवश्यक है और इस प्रकार के प्रबन्ध से उसमें बहुत लाभ होगा। मैं इस संस्था की सफलता चाहता हूँ। —राजेन्द्रप्रसाद

भारतीय गणतन्त्र के द्वितीय राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ० राधाकृष्णन् की शुभ सम्मति :—

आयुर्वेद एक निर्दोष चिकित्सा-पद्धति है। यह केवल व्याधियों का विज्ञान न होकर स्वास्थ्य का विज्ञान है। यह मनुष्य को स्वस्थ और दीर्घजीवी बनाता है। जितना प्राचीन अनुभव आयुर्वेद का है, उतना किसी अन्य चिकित्सा-पद्धति का नहीं। यह कोई विशेष आश्चर्य की बात नहीं है कि जिन रोगों ने आज विदेशी चिकित्सा-विज्ञान को परेशान बना रखा है और जिनका निदान ढूंढ़ने में वे अपने को असमर्थ पा रहे हैं, उनकी सफल औषधि और उपचार आयुर्वेद में पुराने समय से विद्यमान हो। —सर्वपल्ली डॉ० राधाकृष्णन्

भारत के तृतीय राष्ट्रपति डॉ० जाकिर हुसैन की शुभ कामना :—

कोई भी राष्ट्र या विज्ञान केवल अपने गौरवपूर्ण अतीत या इतिहास के बल पर जिन्दा नहीं रह सकता। एक जगह पर रुककर बैठ जाने से किसी भी देश के जीवन में निष्क्रियता आ जाती है। निरन्तर नई शोध नहीं होने से विज्ञान में भी निर्जीवता आती है। किन्तु, मुझे यह देखकर खुशी हुई कि श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्रा० लि० अपने पुराने चिकित्सा-विज्ञान आयुर्वेद के पुनरुत्थान में नित्य नये शोध और नए उत्साह के साथ लगा हुआ है। मैं इस प्रतिष्ठान की सफलता की कामना करता हूँ। —डॉ० जाकिर हुसैन

प्राचीन आयुर्वेदीय संहिताओं के संशोधक, अखिल भारतीय आयुर्वेद-महासम्मेलन और विद्या-पीठ के भूतपूर्व सभापति, आयुर्वेदोद्धारक स्वर्गीय यादवजी त्रिकमजी आचार्य की सम्मति :—

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्रा० लि० में प्रस्तुत होनेवाली औषधिओं के नुस्खों को मैं जानता हूँ और औषधालय भी कई बार देखा है। मेरा जहाँ तक अनुभव है, इनके यहाँ विश्वसनीय दवाएं बनती हैं। जनता यहाँ की बनी दवाइयाँ विश्वास के साथ खरीदकर सेवन कर सकती है। मैं कार्यालय की दिन-प्रति-दिन उन्नति चाहता हूँ। —वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य

पं० जवाहरलाल नेहरू की शुभ सम्मति :—

इस बात में सन्देह की तनिक भी गुंजाइश नहीं है कि भारत की प्राचीन (आयुर्वेदीय) चिकित्सा-पद्धति का अत्यन्त सम्मानजनक इतिहास तथा विपुल ख्याति रही है। भूतकाल के ज्ञान और अनुभवों के इस विशाल भण्डार की उपेक्षा एक भयंकर भूल होगी। —जवाहरलाल नेहरू

लालबहादुर शास्त्री की शुभ सम्मति :—

इसमें सन्देह नहीं की आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा-पद्धतियाँ संसार को भारत की एक विशेष देन हैं। किन्तु, इनके समुत्थान एवं सुविकास के लिए इस समय अनुसंधान की विशेष आवश्यकता है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि यदि इनमें मनोयोगपूर्वक अनुसंधान पर ध्यान दिया जाय, तो रोग-शोक-पीड़ित मानव-समुदाय को इन चिकित्सा-पद्धतियों से बहुत लाभ पहुँचेगा।

—लालबहादुर शास्त्री



संवत् २०३१ का वर्ष-फल

संपादक —ज्यौतिषाचार्य पं० जनार्दन शास्त्री खुण्टे, काशी

जयति जगतः प्रसूतिर्विश्वात्मा सहजभूषणं नभसः।
द्रुतकनक सदृशः दशशतमयूखमालार्चितः सविता ॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा रविवार, दिनांक २४ मार्च, १९७४ से ३८४ दिनों तक उत्तर भारत में प्रभव और दक्षिण भारत में आनन्द नामक संवत्सरों का दैननन्दिन धर्मकृत्यों में उपयोग किया जायगा। संवत्सर जागतिक हवा का रुख है। गुरु के प्रथम विष्णुयुग का प्रथम संवत्सर प्रभव है। क्षय संवत्सर का सम्पूर्ण क्लेश सहन करके पुत्रोत्सव की तरह आनन्ददायक, प्राणियों का हितप्रदायक यह प्रभव होते हुए भी अनावृष्टि, तूफान, अग्नि-प्रकोप, महामारी सदृश महारोग, ज्वर, कफ, खाँसी से जन साधारण की रक्षा करने में पूर्ण सफल नहीं होगा। हाँ, आनन्द संवत्सर सभी को आनन्द देगा। सर्वशक्तिमान, भगवान की इच्छा के अनुरूप सीमित शक्तिवाले ग्रह भी अपना कार्य करते हैं। गुरु के दशम युग का इन्द्र अग्नि संयुक्त दैवत का तृतीय संवत्सर आनन्द है। इस वर्ष राजा ग्रहराज सूर्य है। उनका विरोधी पुत्र शनिदेव प्रधान मंत्री हैं। राजा सूर्य ही धान्येश, मध्य धान्येश भी हैं। वर्षा कम होना, दुधारू जीवों का दूध कम करना, जनता को उत्पीडन देना, धान्य, फल, फूल, वृक्ष आदि को नुकसान पहुँचाना, चोर, डाकू की वृद्धि करना, अग्नि प्रकोप का होना, शासक वर्ग की हत्या कराना आदि भयंकर कार्य राजा सूर्य के द्वारा प्रतिपादित होते हैं। प्रधान मंत्री शनि ही युद्धेश, अर्घेश, अग्रधान्येश भी बने हैं। शासकों का विरोध, उत्पात की वृद्धि, युद्ध का उद्घोष आदि उद्दण्ड कार्य शनि का हुआ करता है। देवगुरु बृहस्पति अर्थात् अनिष्ट नाशक एवम् रक्षक शक्ति इस वर्ष मन्त्रीमण्डल में नहीं हैं। छत्रेश, गणकेश चन्द्र है। उत्तम संगठन के कारण चन्द्र यशस्वी होगा। मंगल पूर्व धान्येश, कोषेश, क्षोधेश, सस्येश, अग्रधान्येश तथा नीरसेश हैं। वर्षा की कमी से सभी धान्य नष्ट करता है। हाथी, घोड़ा, गदहा, ऊँट, गाय, भैंस आदि पशुओं को रोगी बनाता है। तांबा, वस्त्र, गेहूँ, राई आदि तेलहन वस्तुओं को महंगा करता है। जनता में कोध की वृद्धि, कोष-खजाना की क्षति तथा उपयोगी वस्तुओं के अभाव कराकर निर्माण कार्य में बाधक बनना मंगलदेव का कर्त्तव्य है। बुध रसेश तथा व्यापारेश है। सब धान्य सुलभ कराना, दूध की प्रचुरता, देश की सुरक्षा, मनचाही वर्षा, जनसाधारण की उन्नति आदि बुध के कार्य हैं। शुक्र मेघेश, सैन्येश, दुर्गेश, स्वर्णपरीक्षेश, पश्चात्धान्येश, प्रतापेश, व्यवहारेश, फलेश, स्थूल-ग्रामेश बने हैं। प्रधान मंत्री शनि का घनिष्ठ मित्र एवम् गुरु होने के कारण सबसे बली ग्रह इस वर्ष शुक्र ही है। सर्वत्र आवश्यकतानुसार वर्षा होगी, फसल अच्छी होगी, भावों का नियंत्रण रहेगा

तथा सस्ती लाने का प्रयत्न करता रहेगा। इसी तरह अर्थ-व्यवस्था को मजबूत बनाये रखेगा सेना की वृद्धि करेगा। जनता सभी तरह से सुखी रहेगी। आधे विभाग शुभग्रहों के पा और आधे विभाग पापग्रहों के पास हैं। शुभग्रह बलशाली होने से शुभ फल अधिक होंगे जनता सुखी रहेगी। जगल्लग्न में छठे घर में शनि-मंगल का संयोग है। इससे युद्ध में विज मिलेगी, अर्थ व्यवस्था मजबत रहेगी। वर्षलग्न में भी छठे घर में शनि-केतु का साथ बैठना युद्ध में विजय और बलवानो की अधिक धाक की वृद्धि का प्रतीक है। तरुण वर्ग उत्साह के सा आगे आयेंगे। राज योग कारक शुक्र दोनों लग्न में है। ये विजयी, सुखी, ऐश्वर्यवान्, नीतिज्ञ यशस्वी, बली, उत्साही, पराक्रमी, मित्र बल युक्त, धनी, अनुशासनप्रिय, भाग्यवान्, उद्योगी व्यसनरहित विद्यारत, प्रभावी, सद्गुण संपन्न, सदाचारी बनाते हैं। इति शम्। शुभम् भवतु।

ग्रस्तास्त, खण्डग्रास तथा खग्रास चन्द्रग्रहण सम्बन्धी विचार

प्रथम ग्रहण—श्रीसंवत् २०३१, ज्येष्ठशुक्ल १५ मंगलवार, दि. ५ जून १९७४ को ज्येष्ठा नक्षत्र, वृश्चिक राशि पर ग्रस्तास्तखण्डग्रास चन्द्रग्रहण दिखेगा। *निशान वाले शहरोंमें व कमीश्नरी में ग्रस्तास्त नहीं भी होगा।

प्रथम ग्रहण			द्वितीय ग्रहण	
३ घं.	१४ मि.—	पूर्णग्रहणपर्व	—३ घ.	२९ मि.
बजकर	मि.	विवरण	बजकर	मि.
२४	५४	बिम्बमालिन्य	१७	५५
२.	९	ग्रहणस्पर्श	१८	५९
—	—	सम्मीलन	२०	५
३	४६	ग्रहण मध्य	२०	४३
—	—	उन्मीलन	२१	२२
५	२३	ग्रहणमोक्ष	२२	२८
६	३८	बिम्ब नैर्मल्य	२३	३१

चन्द्र ग्रहणों का स्पर्श तथा मोक्ष सभी जगह एक ही समयमें होता है।

द्वितीय ग्रहण—श्रीसंवत् २०३१ कार्तिक शुक्ल १५ शुक्रवार, २९ नवम्बर १९७४ को रोहिणी नक्षत्र, वृषभराशिपरखग्रास्त चन्द्रग्रहणदिखेगा।

प्रथम ग्रहण का	राशिफल	द्वितीय ग्रहण क
मेष	ऋण, रोग, क्लेश	तुला
वृष	स्त्री क्लेश	वृश्चिक
मिथुन	आनंदानुभव	ध
कर्क	अनेक चिन्ता	मक
सिंह	आधि, व्याधि	कुंभ
कन्या	ऐश्वर्य लाभ	मी
तुला	अर्थ हानि	मे
वृश्चिक	चोट लगेगी	वृ
धनु	मनस्ताप	मिथु
मकर	अर्थलाभ	क
कुंभ	मानहानि	सिं
मीन	ऋण, रोग	कन्य

ये फल ६ मासों में कभी भी होंगे।

कमीश्नरी व चन्द्रास्त शहरकानाम	बजे मि.	ग्रहणकाल घ. मि.	कमीश्नरी व चन्द्रास्त शहरकानाम	बजे मि.	ग्रहणकाल घं. मि.	कमीश्नरी व चन्द्रास्त शहरकानाम	बजे मि.	ग्रहणकाल घं. मि
अगरतल्ला	४–४१	२–३२	गंटक	४–४४	२–३५	पटना	५– २	२–५
इलाहाबाद	५–१६	३– ७	गोहाटी	४–३४	२–२५	भुवनेश्वर	५–११	३–
कटक	५–१०	३– १	डिब्रुगढ़	४–१८	२– ९	लखनऊ	५–१७	३–
कलकत्ता	४–५६	२–४७	देहरादून	५–२१	३–१२	वाराणसी	५–१२	३–
काठमाण्डु	४–५७	२–४८	ढाका	४–४५	२–३६	*सिमला	५–२३	३–
*कानपुर	५–३०	३–१४	दार्जिलिंग	४–४६	२–३७	सिलीगुड़ी	४–४६	२–३५
कोईमा	४–२५	२–१६	नैनिताल	५–१८	३– ९	हरिद्वार	५–२२	३–१

ऊपर दिये शहरों के अतिरिक्त शहरों में तथा उस कमीश्नरी में ग्रहण दिखेगा नहीं।

—०—

आय-व्यय देखने की विधि—आय-व्यय के अंकों को जोड़ कर उनमें से एक अंक घटा कर आठ से भाग देना चाहिए। शेष बचे अंकों का फल क्रमशः आगे दिया है—१ शेष में लाभ, २ में सौख्य, ३ में क्लेश, ४ में रोग, ५ मे निन्दा, ६ में सम्मान, ७ में विजय और ० यानि ८ में हानि।

१३॥, नेष्ट ३ शुक्र। २४-३१ से २-२ तक कुंभ, इष्ट ४, रेखा १२, A। २-२ से ३-३० तक मीन, इष्ट४, रेखा ९, नेष्ट १चन्द्र। ३-३०से ५-८तक मेष, इष्ट५, रेखा ९॥, A। १२ शनिवार, १८ मई। T। ५-८ से ७-० तक वृष, इष्ट ४, रेखा १२, F, १ रवि। ९-१४ से ११-३२ तक, कर्क, इष्ट ४, रेखा ९, E। २०-५से २२-४१ तक धनु, इष्ट ५, रेखा १२, D। २२-४१से २४-२७ तक(अ) मकर इष्ट ६, रेखा १४॥, नेष्ट ३ शुक्र। २४-२७ से १-५८ तक कुंभ, इष्ट ४, रेखा १२, A। १-५८ से ३-२६ तक मीन, इष्ट ४, रेखा ९, नेष्ट १ चन्द्र। ज्येष्ठशुक्लपक्षः—६ सोमवार २७ मई।O। २१-३३से २२-६ तक धनु, इष्ट ४, रेखा १०. D, ७ बुध। २२-६से २३-५२ तक मकर, इष्ट ६, रेखा ११॥, नेष्ट ८ चन्द्र। १-२३ से २-५१ तक मीन, इष्ट ४, रेखा ९, नेष्ट ६ चन्द्र। २-५१ से ४-२९ तक मेष, इष्ट ६, रेखा ११॥, A। ९ गुरुवार, ३० मई।Q। ८-२७से १०-४५ तक कर्क, इष्ट ४, रेखा १२, E, १ मंगल, । १५-१३से १७-३० तक तुला, इष्ट ४, रेखा १० नेष्ट ७ शुक्र, १० मंगल, १२ चन्द्र। १९-४८ से २१-५४ तक धनु, इष्ट ४, रेखा १०, नेष्ट ७ बुध, ७ शनि, ८ मंगल। २१-५४ से २३-४० तक मकर, इष्ट, ५, रेखा १०, नेष्ट; ७ मंगल। १-११ से २-३९ तक मीन, इष्ट ४, रेखा ९, नेष्ट ७ चन्द्र। आषाढ़शुक्लपक्षः—५ सोमवार, २४ जून।O। ५-४७ से ६-५० तक मिथुन, इष्ट ४, रेखा १५, L, १ रवि। ९-४से ११-२३ तक सिंह, इष्ट ४, रेखा ९, नेष्ट १ चन्द्र, ७ गुरु। ११-२३से १३-३६ तक(अ) कन्या, इष्ट ५, रेखा १०, A। १३-३६से १५-५३ तक तुला, इष्ट ४, रेखा ११॥, नेष्ट ८ शुक्र, १० मंगल। १५-५३ से १८-११ तक वृश्चिक, इष्ट ४, रेखा १०, *, ७ शुक्र। २०-१७ से २२-३ तक मकर, इष्ट ६, रेखा १३॥, नेष्ट ७ मंगल, ८ चन्द्र। २२-३ से २३-३४ तक कुंभ, इष्ट ४, रेखा ८॥, नेष्ट ७ चन्द्र। १-२ से २-४० तक मेष, इष्ट ६, रेखा १३॥, A। २-४०से ४-३६ तक वृष, इष्ट ४, रेखा ८॥, F। १० शनिवार, २९ जून। U। ८-५१ से ११-६ तक सिंह, इष्ट ५, रेखा १४, नेष्ट ७ गुरु। ११-६ से १३-१९ तक(अ) कन्या, इष्ट ६, रेखा १५, A।M। १५-३६से १७-५४तक वृश्चिक, इष्ट ४, रेखा१०,*, ७शुक्र। २०से २१-४६ तक मकर, इष्ट६, रेखा१३॥, नेष्ट ७ मंगल। २१-४६से २३-१७ तककुंभ, इष्ट ४, रेखा ८॥A। मार्गशीर्षकृष्णपक्षः—११ सोमवार, ९ दिसम्बर। U। २४-३९ से २-३१ तक कन्या, इष्ट ७, रेखा १८॥ A। अति M। पौषशुक्लः—५ शुक्रे, १७ जन.।L। २-३६से ४-३२ तक वृश्चिक, इ. ४, रे. ८,*, ३ शुक्र। ४-३२से ६-३८ तक धनु, इष्ट ४, रेखा ८॥, G। ६ शनौ, १८जन।T। ६-३८ से ८-१९ तक मकर, इष्ट ५, रे. १०, नेष्ट, १ रवि। ८-१९ से ९-५० तक कुंभ, इष्ट ३, रे. ९॥, A। ९-५० से ११-१८ तक मीन, इष्ट ४, रेखा ९, नेष्ट १ चन्द्र, १० मंगल। ११-१८ से १२-५६ तक (अ) मेष, इष्ट ५, रेखा १०, A। १२-५६ से १४-५२ तक वृष, इष्ट ४, रे. १२, ।C। १४-५२से १७-६ तक मिथुन, इष्ट ४, रेखा १०, H, ८ शुक्र। २१-३९ से २३-५२ तक कन्या, इष्ट ४, रेखा ८॥ नेष्ट ७ चन्द्र। २३-५२ से २-९ तक तुला, इष्ट ५, रेखा १०, नेष्ट ६ चन्द्र। ४-२७ से ६-३३ तक धनु, इष्ट ४, रे. ८॥, G। ७ रविवार, १९ जनवरी। V। ६-३३ से ८-१५ तक मकर, इष्ट ५, रेखा १०, नेष्ट १ रवि। ८-१५ से ९-४६ तक कुंभ, इष्ट ३, रे. ९॥, A।९-४६ से ११-१४ तक मीन, इष्ट ४, रे. ९, नेष्ट १ चन्द्र, १० मंगल। ११-१४ से १२-५२ तक (अ) मेष, इष्ट ५ रे. १०, A। १२-५२से १४-४८ तक वृष, इष्ट ४, रेखा १२, C। १४-४८ से १७-२ तक मिथुन, इष्ट ४, रे. १०, H, ८ शुक्र। २१-३५ से २३-४८ तक कन्या, इष्ट४, रेखा ८॥, नेष्ट ७ चन्द्र। २३-४८से २-५ तक (अ) तुला, इष्ट ५, रेखा १०, नेष्ट ६ चन्द्र।

माघकृष्णपक्षः—२ बुधवार, २९ जनवरी।O। २३-१० से १-२७ तक (अ) तुला, इष्ट ६, रेखा १५।A।M। १-२७से ३-४५तक वृश्चिक, इष्ट ५, रे. १२, *। ४ शुक्रवार ३१ जनवरी।P। २३-१ से १-१८ तक (अ) तुला, इष्ट ६, रेखा १५, A। १-१८से ३-३६ तक वृश्चिक, इष्ट ६, रेखा १७, *। ५-४२ से ७-२४ तक मकर, इष्ट ५, रेखा १०, नेष्ट १ रवि। ५ शनिवार, १ फरवरी।Q। ७-२४ से ८-५५ तक कुंभ, इष्ट ४, रेखा ८॥, नेष्ट ८ चन्द्र। १०-२३ से ११-५६ तक मेष, इष्ट ५, रेखा १०, नेष्ट ६ चन्द्र। १३-५७ से १६-११ तक मिथुन, इष्ट ५, रेखा १२, H। २२-५७ से १-१४ तक (अ) तुला, इष्ट ५, रेखा १०, A। १-१४ से ३-३२ तक वृश्चिक, इष्ट ६, रे. १७. *।

६ रविवार, २ फरवरी ।R। ५-३८ से ७-२० तक मकर, इष्ट ५, रेखा १०, नेष्ट १ रवि। ७-२० से ८-१९ तक कुंभ, इष्ट ४, रेखा ८।।, नेष्ट ८ चन्द्र। ८ सोमवार, ३ फरवरी। ।U। २०-३६ से २२-४९ तक कन्या, इष्ट ४, रेखा ११।।, नेष्ट ६ शुक्र। २२-४९ से १-६ तक (अ) तुला, इष्ट ५, रेखा १०, नेष्ट १ चन्द्र। १-६ से ३-२४ तक वृश्चिक, इष्ट ५, रेखा १०, *। ३-२४ से ५-२९ तक धनु, इष्ट ४, रेखा ११।।, G, ३ शुक्र, । १० बुधवार, ५ फरवरी। (व) ।W। ५-२३ से ७-५ तक मकर, इष्ट ६, रेखा १५, नेष्ट १ रवि। ११ गुरुवार, ६ फरवरी। (व) ।W। ७-५ से ८-३६ तक कुंभ, इष्ट ४, रेखा ८।।, A। १०-४ से ११-४२ तक मेष, इष्ट ५, रेखा १०, नेष्ट ८ चन्द्र। १३-३८ से १५-५२ तक मिथुन, इष्ट ५, रेखा १२, H, ६ चन्द्र।

माघशुक्लपक्षः—४ शनिवार, १५ फरवरी। L। २४-२० से २-३८ तक वृश्चिक, इष्ट ५, रेखा, १०, *। २-३८ से ४-४४ तक धनु, इष्ट ५, रे. १२ नेष्ट ७ शनि। ४-४४ से ६-३० तक मकर, इष्ट ५, रेखा १३, नेष्ट १ मंगल, ३ शुक्र। ५ रविवार, १६ फरवरी ।T। ६-३० से ७-५६ तक कुंभ, इष्ट ३, रेखा १०, नेष्ट १ रवि। ९-२४ से ११-२ तक मेष, इष्ट ५ रेखा ११।।, नेष्ट १० मंगल। ११-२ से १२-५८ तक (अ) वृष, इष्ट ४, रेखा १२, F। २४-१५ से २-३३ तक वृश्चिक, इष्ट ५, रेखा १०, *। २-३३ से ४-३९ तक धनु, इष्ट ५, रेखा १३, नेष्ट ७ शनि। ४-३९ से ६-२५ तक मकर, इष्ट ५, रे. १३, नेष्ट १ मंगल, ३ शुक्र। ६ सोमवार, १७ फरवरी ।V। ६-२५ से ७-५३ तक कुंभ, इष्ट ३, रेखा १०, नेष्ट १ रवि। ९-२१ से १०-५९ तक मेष, इष्ट ५, रेखा ११।।, नेष्ट १० मंगल। १०-५९ से १२-५५ तक (अ) वृष, इष्ट ४, रे. १२, F। ९ गुरुवार, २० फरवरी। (व) X। २४-४ से २-१८ तक वृश्चिक, इष्ट ५, रेखा १०, *, ७ चन्द्र। २-१८ से ४-२४ तक धनु, इष्ट ५, रे. १२, नेष्ट ६ चन्द्र, ७ शनि। ४-२४ से ६-१० तक मकर, इष्ट ४, रेखा ८, नेष्ट १ मंगल, ३ शुक्र। १० शुक्रवार, २१ फरवरी। (व) रोहिणीकेत्वाक्रान्त, (व) मृगशीर्ष केतु भुक्त, दोनों चन्द्रभुक्त हैं। ६-१० से ७-३६ तक कुंभ, इष्ट ३, रेखा १०, नेष्ट १ रवि। ९-४ से १०-४२ तक मेष, इष्ट ५, रेखा १३।।, नेष्ट १० मंगल। १४-५२ से १७-१० तक कर्क, इष्ट ५, रेखा १५, नेष्ट ७ मंगल, ७ बुध। २४-४ से २-१३ तक वृश्चिक, इष्ट ५, रेखा १०, A. ७ चन्द्र, १-३५ तक, बाद ८ चन्द्र। २-१३ से ४-१९ तक धनु, इष्ट ५, रेखा १२, नेष्ट ७ शनि, ८ चन्द्र। ४-१९ से ५-१० तक मकर, इष्ट ४ रेखा ८, G। फाल्गुनकृष्णपक्षः—२ गुरुवार, २७ फरवरी। (व) ।P। ४-२ से ५-४२ तक मकर, इष्ट ४, रेखा ८, नेष्ट १ मंगल, ३ शुक्र, ८ चन्द्र। ३ शुक्रवार, २८ फरवरी। (व) ।Q। ७-१० से ८-३८ तक मीन, इष्ट ५, रेखा १०, नेष्ट ६ चन्द्र। ८-३८ से १०-१६ तक मेष, इष्ट ४, रेखा ८।।, नेष्ट ६ चन्द्र, ९-४१ बजे से १० मंगल भी। ४ शनिवार, १ मार्च। (व) ।R। २३-२४ से १-२७ तक (अ) वृश्चिक, इष्ट ६, रेखा १५, *। ५ रविवार, २ मार्च ।U। २४-३८ से १-३८ तक वृश्चिक इष्ट ५, रेखा १०, *। १-३८ से ३-४४ तक धनु, इष्ट ६ रेखा १७, नेष्ट ७ शनि। ६ सोमवार, ३ मार्च ।U। ७-४० से ८-२५ तक मीन, इष्ट ५, रेखा १२, नेष्ट ८ चन्द्र। ८-२५ से १०-३ तक मेष, इष्ट ४, रेखा ८।।, नेष्ट ७ चन्द्र, १० मंगल। १६-३१ से १८-४६ तक सिंह, इष्ट ४, रेखा १०, नेष्ट ७ रवि, ७ गुरु, ८ शुक्र। गोधूली शुभ है १७-५९ बजे। १८-४६ से १९-५९ तक कन्या, इष्ट ४, रेखा १२, नेष्ट ६ गुरु, ७ शुक्र। ८ बुधवार, ५ मार्च, (व) ।W। ६-५० से ८-१८ तक मीन, इष्ट ५, रेखा १०, नेष्ट कोई नहीं। ८-१८ से ९-५६ तक मेष, इष्ट ४, रेखा ८।।, नेष्ट ८ चन्द्र, १० मंगल। १६-२४ से १८-३९ तक सिंह, इष्ट ४, रेखा १०, नेष्ट ७ रवि, ७ गुरु, ८ शुक्र। गोधूलि १८ बजे शुभ है। १० शुक्रवार, ७ मार्च (व) मूलराहुभुक्त, चन्द्रभुक्त है। २३-१ से १-१९ तक (अ) वृश्चिक, इष्ट ६, रेखा १५, *। १-१९ से २-५९ तक धनु इष्ट ५, रेखा १२, नेष्ट ७ शनि। कल्याणमस्तु।

यात्रा मुहूर्त तथा ग्रहों का बल-विचार

यात्रा-विचार—जन्मराशि या नाम राशि से जिस दिन यात्रा करनी हो, उस दिन की चन्द्रराशि पर्यन्त गिनने पर जो संख्या हो उसी को चन्द्रमा जानना चाहिये। इसका फल इस प्रकार है। पहले में शुभ, दूसरे में मानस-सन्तुष्टि, तीसरे में धन-प्राप्ति, चौथे में कलह, पाँचवें में ज्ञानवृद्धि, छठे में धन, सातवें में राज-सम्मान, आठवें में प्राण-संशय, नवें में धन-लाभ, दसवें में सिद्धि, ग्यारहवें में जय-लाभ और बारहवें चन्द्रमा में हानि। आवश्यक हो, तो चन्द्र का जप, दान करके जायें। **चन्द्रनिवास**—मेष, सिंह, और धनु का पूर्व में, वृष, कन्या और मकर का दक्षिण में; मिथुन, तुला और कुंभ का पश्चिम में तथा वृश्चिक, कर्क और मीन का चन्द्रमा उत्तर में रहता है। यात्रा में चन्द्रमा सामने रहने पर अर्थ-लाभ, दाहिने में सुख-सम्पदा, पीठ-पीछे प्राणनाश और बाएँ रहने पर धन-क्षय होता है। कृष्णपक्ष में ताराबल भी देखें १-१०-१९- व ७ वीं तारा वर्ज्य है।

दिशाशूल-विचार—सोम, शनि को पूरब, बृहस्पति को दक्षिण, शुक्र, रवि को पश्चिम, मंगल, बुध, को उत्तर दिशा में दिशाशूल रहता है, अतः उस दिन उधर जाना मना है। रवि, गुरु, शुक्र को रात में। सोम, मंगल, शनि को दिन में, दिशाशूल नहीं होता। बुधबार को दिशाशूल २४ घंटे रहता है।

शुभ तिथियाँ—दुष्ट योग रहित २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५, कृष्णपक्ष की प्रतिपदा शुभ है।

शुभ-नक्षत्र—अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती।

योगिनी-विचार—योगिनी दाहिने-सुख, पीठ-पीछे-वाँछित फल, बाएँ-धन का नाश और सम्मुख में मृत्युकारक है। यह फल मुहुर्तचिन्तामणि यात्रा-प्रकरण श्लोक ३१ के 'संमुखवामगा न शस्ताः" तथा स्वरोदय और विजय कल्पलता के—"पृष्ठतो दक्षिणे वापि योगिनीगमने हिता। वाम-संमुखयोर्नेष्टा वायुमेवं विचिन्तयेत्" के आधार से है। योगिनी १, ९ तिथियों को पूर्व में, २, १० को उत्तर में; ३, ११ को अग्निकोण में; ४, १२ को नैऋत्य में; ५, १३ को दक्षिण में; ६, १४ को पश्चिम में। ७, १५ को वायव्य में; ८, ३० को ईशान्य में रहती है। जन्म-तिथि, जन्म-वार और जन्म-नक्षत्र में तथा खराब ग्रह की दशा होगी तब भी यात्रा करना मना है।

ग्रहबल—उपनयन में बटु को गुरु बल व शाखेश, वर्णेश का बल रहना अत्यावश्यक है। विवाह में वर को रवि बल, वधू को गुरुबल तथा दोनों को चन्द्र बल होना ही चाहिये। वैसे तो प्रत्येक कार्य में चन्द्र बल रहना ही चाहिये। बटु तथा वर, वधू की राशि से—३-६-१०-११ वें स्थान में से किसी स्थान में रवि होगा और क्रम से ९-१२-४-५ वें स्थान में शनि छोड़कर और कोई ग्रह नहीं होगा तो रवि का बल है समझा जायगा। इसी प्रकार से १-३-६-७-१०-११ तथा शुक्ल पक्ष में २-५-९ वें स्थान में भी चन्द्र होगा तथा क्रम से ५-९-१२-२-४-८ स्थान में बुध छोड़ कर कोई अन्य ग्रह नहीं होगा तो चन्द्र का बल है, समझा जायगा। इसी प्रकार से २-५ ७-९-११ वें स्थान में गुरु होगा तथा क्रम से १२-४-३-१०-८ वें स्थान में कोई अन्य ग्रह नहीं होगा तो गुरु का बल है, समझें। नीचेका स्थान अन्यग्रहस्थानं या विद्धस्थान है। चक्रमें सब स्पष्ट है।

ग्रह	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध
स्वस्थान	३ ६ १० ११	१ ३ ६ ७ १० ११	३ ६ ११	२ ४ ६ ८ १० ११
अन्यग्रह स्थान	९ १२ ४ ५	५ ९ १२ २ ४ ८	१२ ९ ५	५ ३ ९ १ ८ १२
पिता-पुत्र	शनि बाधक नहीं है	बुध बाधक नहीं है। शुक्ल पक्ष में २-५-९ भी शुभ है		चन्द्र बाधक नहीं होगा

ग्रह	गुरु	शुक्र	शनि	राहु-केतु
स्वस्थान	२ ५ ७ ९ ११	१ २ ३ ४ ५ ८ ९ ११ १२	३ ६ ११	३ ६ ११
अन्यग्रह-स्थान	१२ ४ ३ १० ८	८ ७ १ १० ९ ५ ११ ३ ६	१२ ९ ५	१२ ९ ५
पिता-पुत्र			रवि बाधक नहीं है।	

विविध मुहूर्ताः

नाम मुहूर्त	नक्षत्र नाम	तिथि	वार	लग्न
बीज बोने का मुहूर्त	राहु के नक्षत्र से गणना है। क्रम से ८, ३, १, ३, १, ३, १, ३, ४ नक्षत्र शुभाशुभ है।	शुभ तिथि	केवल मंगल वर्ज्य है	शुभलग्न
जल-पूजन मुहूर्त	श्रवण, पुष्य, पुन, म.ह.मू.अनु.में कुँवा (जल) पूजना शुभ होता है।	४।९।१४ ३० रहित	चं.बु. गु.	२।३।४।६ ७।९।१२
चौलकर्म मुहूर्त	ज्ये.मृ.रे.चि.ह.अश्वि.अभि.स्वा.श्र.पुन. ध.श.शुक्ल मेंतारा बल जरूरी है।	२।३।५।७ १०।११।१३	बु. गु.शु.	२।३।४।६ ७।९।१२
वधू-प्रवेश मुहूर्त	रो.अनु.पुष्य.ह.चि.स्वा.मू.श्र.ध.म.उ३ रे. अश्वि. मृ.	४।९।१४।३० रहित	गु.शु. चं.	२।३।६।९ ४।७।१२

ग्रहोंके स्वरूप तथा उन्नति के उपाय

अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड में पृथ्वी केन्द्र करके शनि कक्षा तक एक ब्रह्माण्ड है जिसमें हम सब रहते हैं। इस ब्रह्माण्ड में-रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु, ये नवग्रह हैं। इनसे ज्यादा कोई ग्रह नहीं है। इनमें सर्वदा उदित व सर्वदा मार्गी रहनेवाले रवि और चन्द्र दो ग्रह हैं, जो क्रम से ग्रहराज व ग्रहराज्ञि हैं। मंगलादि पंच ताराग्रह हैं, वे कभी वक्री, कभी मार्गी और कभी दिखते हैं तो उदित कहे जाते हैं कभी लुप्त होते हैं तो उनका अस्त हुआ कहते हैं। इनमें गुरु, शुक्र, अस्त को तारा अस्त कहते हैं। राहु, केतु तमो ग्रह है वे सर्वदा वक्री ही चलते हैं। ग्रहणकाल में मात्र वे छायारूप में काले, नीले, भूरे आदि रंग में दिखते हैं। धार्मिक कार्यों में इन्हीं नव ग्रहों का पूजन, जप, दानादि किया जाता है। इनके अलावे कोई ग्रह नहीं हैं, न उसका कोई परिणाम होता है। कोई-कोई पंचांगकार वरुण (हर्षल), प्रजापति (नेप्च्युन), यम (प्लेटो) ऐसे तीन ग्रह और देते हैं, कुछ लोग उसको आधार मानकर फलादेश भी कहते हैं, वे काकतालीय न्याय के हैं। इस सम्बन्ध में तर्क की कसौटी पर बहुत विचार है, तब वे ठहरते नहीं, भाग जाते हैं। अतः आगम प्रमाण के द्वारा ऋषि-परम्परा में योगज प्रत्यक्ष से तथा ऋतंभरा प्रज्ञा से उक्त नवग्रह तर्क की भी कसौटी पर ठहरते हैं, उनकी प्रत्येक क्रिया का हमारे ब्रह्माण्ड की प्रत्येक जड़, चेतन, सब वस्तु पर प्रभाव पड़ता है। कुछ बुद्धिमान मनुष्य ग्रहों के परिणामों को सत्य मानते, कुछ बुद्धिमान् लोग बिलकुल नहीं मानते, यह भी उन ग्रहों के ही परिणाम है। ग्रहों के कारण किसी-किसी का इस चमत्कारपूर्ण अद्भुत विज्ञान पर विश्वास बैठता है और ग्रहों के ही कारण विश्वास नहीं भी बैठता है। ग्रहोंके ही कारण कोई राजा की तरह सुख भोगता है, कोई भीख माँगता है तो कोई भिखारी राजा हो जाता है। भारतीय विद्वान् आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक भेद से प्रत्येक वस्तु के तीन रूप देखते हैं। वेद मन्त्रों में ग्रहों के ये तीनों रूप देखने को मिलते हैं। जैसे—सूर्य विराट पुरुष की आत्मा है, चन्द्र मन है, इत्यादि यह आध्यात्मिक स्वरूप है। पादहीन अरुणसारथी द्वारा प्रचालित एकचक्र रथ में द्विभुज सूर्य मूर्ति सूर्य का आधिदैविक रूप विराजमान है। हैड्रोजन वायु का विशिष्ट दाब यह सूर्य का आदिभौतिक स्वरूप है। आधिभौतिक चन्द्र पर राकेट लेकर मानव पहुँचेया न कि आधिदैविक या आध्यात्मिक चन्द्र पर। आराधना आधिदैविक रूप की होती है। आप, हम ग्रहों को रोज प्रणाम करके अपनी मनोकामना की पूर्ति और उन्नति कर सकते हैं। अतः आओ, हम सब उन्नति व दोषपरिहार के लिये नवग्रहों के आधिदैविक रूपों को प्रणाम करें, दान दें, जप करें। रत्न पहनें विहित औषध करें। औषधि मिश्रित जल से स्नान करके सुखी बनें। जयतु नवग्रहाः।

चैत्र शुक्लपक्षः संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७४, बंग १३८०। याम्यगोलः, उत्तरायणं, वसन्तर्तुः। २४ मार्च से ६ अप्रैल तक।

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगा.	चन्द्रचारः	दि.मा. घ. प.	स्टै. टा. सू. उ.	स्टै. टा. सू. अ.	मु.	वं.	लो.	अं.	वा.
र.	१	५२	२४	उ.	२७	१३	ब्र.	५६	१०	किं	२२	०	सुस्थिर	मी. ६० ०	३० १२	६ ०	६ ९	२९	१०	३	२४	र.
सो.	२	५१	४३	रे.	२७	२२	ऐं.	५२	१५	बा.	२२	४	मातंग	मी. २७ २२	३० १६	५ ५९	६ १०	३०	११	४	२५	सो.
मं.	३	४९	४७	अ.	२६	२१	वै.	४७	२६	तै.	२०	४५	अमृत	मे. ६० ०	३० १९	५ ५८	६ १०	१	१२	५	२६	मं.
बु.	४	४६	४७	भ.	२४	२७	वि.	४१	४८	व.	१८	१७	काण	मे. ३८ ४५	३० २३	५ ५७	६ १०	२	१३	६	२७	बु.
गु.	५	४२	५१	कृ.	२१	४१	प्री.	३५	२८	बव	१४	४९	लुम्ब	वृ. ६० ०	३० २७	५ ५६	६ १०	३	१४	७	२८	गु.
शु.	६	३८	३	रो.	१८	१६	आ.	२८	३५	कौ.	१०	२७	मित्र	वृ. ४६ २०	३० ३१	५ ५५	६ ११	४	१५	८	२९	शु.
श.	७	३२	४१	मृ.	१४	२४	सौ.	२१	१४	गर	५	२२	वज्र	मि. ६० ०	३० ३४	५ ५४	६ ११	५	१६	९	३०	श.
र.	८	२६	५४	आ.	९	१८	शो.	१३	३८	बव	२६	५४	ध्वांक्ष	मि. ५१ ५६	३० ३८	५ ५३	६ १२	६	१७	१०	३१	र.
सो.	९	२०	५३	पुन	६	९	अ.	६० ५	० ३	कौ.	२०	५३	धूम्र	क. ६० ०	३० ४२	५ ५२	६ १२	७	१८	११	१	सो.
मं.	१०	१४	५०	पु.	६० ३	० ४	धृ.	५०	४०	गर	१४	५०	प्रवर्ध	क. ५८ ३५	३० ४४	५ ५१	६ १३	८	१९	१२	२	मं.
बु.	११	८	५९	पु.	५५	३२	वृ.	४३	२९	व.	८	५९	चर	सिं. ६० ०	३० ४९	५ ५०	६ १३	९	२०	१३	३	बु.
गु.	१२	२ ५८	३ ३८	पू.	५३	२१	ध्रु.	३६	५०	बा.	३	३	गद	सिं. ६० ०	३० ५३	५ ४९	६ १४	१०	२१	१४	४	गु.
शु.	१४	५४	२९	उ.	५२	८	व्या.	३०	५०	गर	२६	४३	शुभ	सिं. ८ ३	३० ५६	५ ४८	६ १४	११	२२	१५	५	शु.
श.	१५	५१	१६	ह.	५१	१०	ह.	२५	४०	व.	२२	५१	मृत्यु	कं. ६० ०	३१ ०	५ ४७	६ १४	१२	२३	१६	६	श.

नववर्षारम्भ, अभ्यङ्गस्नान, वासन्तनवरात्रारंभ, गुडीपाडवा, श्रीघनवाम्येश्वर शृंगार*
चन्द्रदर्शन। चन्द्रव्रत। वैधृति २-५३ से। पंचक १६-५६ तक। [‡उत्सव। वैधृति १ तक।
गणगौर। एकमासगौरी व रामका आन्दोलनव्रतारम्भ। सौभाग्यतृतीया। मन्वादि।#
वैनायकीचतुर्थी। भद्रा १३-१६ से २४-४० तक। [#मत्स्यजयन्ती १४ बजे जन्मो-‡
अनन्तादिनागपूजा। लक्ष्मीपूजा। हयव्रत। कल्पादि। [†स्थापन करें। ध्वजा फहरावें।¤
स्कन्दको दौनापत्रार्पण। [*विद्याव्रतारंभ। कल्पादि। वत्सदेवजयन्ती। पंचक। कलश†
भास्करकादमनकोत्सव। महागौरीप्रदक्षिणा १८-५८ से। भद्रा १८-५८ से ५-४८b
श्रीअन्नपूर्णाष्टमी। महाष्टमी। महागौरीप्रदक्षिणा १६-३९ तक। भवानी जयन्ती।ת
अप्रैल ४। महानवमी। श्रीरामजयन्ती। नवमी पक्ष का पारणा। [תरेवती का सूर्यc
दशमीपक्षकापारणा। भद्रा २२-३७ से। [c११-२४ बजे। ८ अशोककलियोंकाप्राशन।
कामदाएकादशी सबकी। भद्रा ९-२६ तक।µ। [µवैशाखस्नानारंभ आजसे भी।
अनङ्गत्रयोदशी। प्रदोष व्रत। श्रीकृष्ण का दोलोत्सव। श्रीविष्णुका दमनकोत्सव।µ
श्रीनृसिंहदोलोत्सव। भैरव, शिव, एकवीराको दौनापत्रार्पण। भद्रा ३-३६ से। धेनु
पौर्णमासव्रत। श्रीहनुमज्जयन्ती। भद्रा १४-५६ तक। मन्वादि।µ। [‡महावीर जयन्ती।

१ पंक्ति, ३१ मार्च शनिवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह। [¤पंचांग फल सुने। निम्बपत्र प्राशन करे। [bतक। सूर्यको दौनापत्रार्पण। २ पंक्ति, ६ अप्रैल शुक्रवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१	१०	१०	१०	२	७	१
१६	२४	१९	११	०	५	२९	२९
२४	२९	४३	३७	३	१०	४२	४२
१	४५	५८	४	२५	१३	१५	१५
५९	३५	७९	१२	५७	३	३ ११	३ ११
१४	५	९	३	२६	२४	व.	व.

२ मंगल, केतु — १ — १२ रवि — बुध, गुरु, ११ शुक्र — १० — ३ चन्द्र, शनि — ९ — ४ — ८ राहु — ५ — ६ — ७

पक्षफल

नवरात्रमें बादल रहेंगे। छिटपुट वर्षा की संभावना है। स्कूटरोंकी अनेक दुर्घटनायहोंगी। खेल, कूदमें अपनी विजय रहेगी। उपद्रवीतत्त्व शांत रहेंगे। कोयला, उद्योग प्रगति करेगा। तांबेकी व नवीननवीन आधुनिकद्रव्योंकी खाने मिलेंगी।

२ मंगल, केतु — १ — १२ रवि — बुध, गुरु, ११ शुक्र — १० — ३ शनि — ९ — ४ — ६ चन्द्र — ८ राहु — ५ — ७

र.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१	१०	१०	१०	२	७	१
२२	२८	२७	१३	५	५	२९	२९
१८	०	५४	२१	५४	३१	२३	२३
५१	४२	२	२४	१७	५१	९	९
५९	३५	८३	१२	५९	३	३ ११	३ ११
१	१७	४३	४०	५१	५७	व.	व.

ज्येष्ठ कृष्णपक्षः संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७४, बंग १३८१। सौम्यगोलः, उत्तरायणं, वसन्तर्तुः। ७ मई से २१ मई तक।

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचारः	घ.	प.	दि.मा. घ.	प.	स्टै.टा. सू.उ. घं.	मि.	स्टै.टा. सू.अ. घं.	मि.	मु.	बं.	सां.	अं.	वा.	
मं.	१	२०	३३	वि.	१७	५०	व.	३४	२७	कौ.	२०	३३	श्रीवत्स	तु.	२	२	३२	४२	५	२०	६	२९	१४	२४	१७	७	मं.	वटसावित्रीव्रतका विशेष—यह व्रत ३ प्रकार का है। १ उपवास बिना किये ही, दूसरा a
बु.	२	२२	६	अनु	२२	७	म.	३३	५२	गर	२२	६	सौम्य	वृ.	६०	०	३२	४५	५	१९	६	३०	१५	२५	१८	८	बु.	नारदजयन्ती। भद्रा २-४१ बजे से। [a उपवास करके और तीसरा ३ दिन उपवास b
गु.	३	२४	४४	ज्ये.	२७	२९	शि.	३४	१०	व.	२४	४४	कालदं.	वृ.	२७	२९	३२	४८	५	१९	६	३०	१६	२६	१९	९	गु.	संकष्ट चतुर्थी, चन्द्रोदय २१-२४ बजे। भद्रा १५-१३ तक। [b करके पूजा का।
शु.	४	२८	३२	मू.	३३	३४	सि.	३५	१०	बा.	२८	३२	सुस्थिर	ध.	६०	०	३२	५१	५	१८	६	३१	१७	२७	२०	१०	शु.	जो स्त्री ३ दिन उपवास नहीं कर सकती वह पहले दिन नक्त करें, दूसरे दिन अयाचित c
श.	५	३३	५	पू.	४०	७	सा.	३६	३८	कौ.	०	४९	मातंग	ध.	५६	४५	३२	५४	५	१८	६	३१	१८	२८	२१	११	श.	कृत्तिका का सूर्य १२-१० बजे। [c रहें व तीसरे दिन व्रत करें और आरोग्य रखें।
र.	६	३८	९	उ.	४६	३९	शु.	३८	१८	गर	५	३७	अमृत	म.	६०	०	३२	५६	५	१७	६	३२	१९	२९	२२	१२	र.	भद्रा २०-३२ बजे से। [h तक। स्नान करके यथाशक्ति गोदान दें। अमृतसिद्धियोग।*
सो.	७	४३	१६	श्र.	५२	४६	शु.	३९	५१	व.	१०	४३	सिद्धि	म.	६०	०	३२	५९	५	१६	६	३२	२०	३०	२३	१३	सो.	भद्रा ९-३३ बजे तक। [d वृष संक्रान्ति १९-१९ बजे। पर्वकाल १२ बजे से १८-३३ h
मं.	८	४७	५९	ध.	५८	१०	श.	४०	५७	बा.	१५	३८	उत्पात	म.	२५	२८	३३	२	५	१६	६	३३	२१	३१	२४	१४	मं.	कालाष्टमी। तीसरी शीतलाष्टमी ७-४८ तक माताका पूजनकर भोजन भी होजायें। d
बु.	९	५२	०	श.	६०	०	ऐं.	४१	२७	तै.	२०	०	मानस	कुं.	६०	०	३३	४	५	१५	६	३३	२२	१	२५	१५	बु.	वैधृति २१-५० बजे से। पंचक। बंगज्येष्ठ २। तामिल वैशाख २। सर्वार्थसिद्धियोग।
गु.	१०	५४	५६	श.	२	२९	वै.	४१	२	व.	२३	२८	वज्र	कुं.	४९	५३	३३	७	५	१५	६	३४	२३	२	२६	१६	गु.	वैधृति २१-४० तक। पंचक। भद्रा १४-३८ से ३-१३ तक। वैधृतिसबकामोंमें वर्ज्य है।
शु.	११	५६	५०	पू.	५	४१	वि.	३९	४६	बव	२५	५३	ध्वांक्ष	मी.	६०	०	३३	९	५	१४	६	३४	२४	३	२७	१७	शु.	अपरा, अचला, एकादशी सब की। पंचक। बिना मांगे मिले वह खाना अयाचित है।
श.	१२	५७	२०	उ.	७	३७	प्री	३७	२८	कौ.	२७	५	धूम्र	मी.	६०	०	३३	१२	५	१४	६	३५	२५	४	२८	१८	श.	पंचक। [f का फल होता है। तीनों प्रकार के व्रतवाली सब गौड़ोंका वटसावित्री व्रत।
र.	१३	५६	३२	रे.	८	१७	आ.	३४	८	गर	२६	५६	प्रवर्ध.	मी.	८	१७	३३	१४	५	१४	६	३५	२६	५	२९	१९	र.	प्रदोष। पंचक ८-३३ तक। भद्रा ३-५१ से। गौड़ोंका ३ दिनों का वटसावित्री व्रतारंभ।
सो.	१४	५४	२९	अ.	७	४६	सौ	२९	४९	व.	२५	३०	रक्ष	मे.	६०	०	३३	१६	५	१३	६	३६	२७	६	३०	२०	सो.	मासशिवरात्रि। भद्रा १५-२५ तक। केवल प्रदोषकाल में ही भोजन करना नक्त है।
मं.	३०	५१	२२	भ.	६	१२	शो	२४	४१	चतु	२२	५६	मुसल	मे.	२०	३६	३३	१९	५	१३	६	३६	२८	७	३१	२१	मं.	दर्शश्राद्ध। भाऊका अमावस्या। भौमवती अमावास्या गंगास्नान से ही सहस्रगोदान[

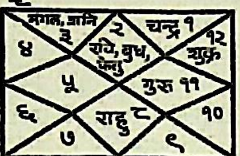
७ पंक्ति, १४ मई मंगलवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह। [*पंचक १७-२७ से ८ पंक्ति, २१ मई मंगलवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१२	२	१	१०	११	२	७	१
२९	२०	१०	१९	१६	८	२७	२७
१९	४०	१३	५५	४३	५७	२२	२२
३२	५३	५८	९	५७	१	११	११
५७	३९	१२२	९	६७	६	३ ११	३ ११
५३	१३	१३	१	४५	३६	व.	व.



पक्षफल

७ सोमवार, १३ मई को बुधका पश्चिमोदय होगी। लू चलना आरंभ होगा। फलों की फसल संतोष जनक रहेगी। उपद्रवीतत्व अमानुषताका व्यहार करेंगे। कुछ पार्टियां मिलकर आंदोलन चलायेंगी। रेल-बस-ट्रक-राह चलतु भी लूटे जायंगे। बाहरके अतिथि का सम्मान होगा।



र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	२	१	१०	११	२	७	१
६	२४	२३	२०	२४	९	२६	२६
४	३१	३८	५५	४०	४४	५९	५९
१५	११	५३	३४	२३	३३	५४	५४
५७	३६	१०४	८	६८	६	३ ११	३ ११
४४	२३	०	६	२७	५९	व.	व.

ज्येष्ठ शुक्लपक्षः संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७४, बंग. १३८१ सौम्यगोलः, उत्तरायणं, ग्रीष्मर्तुः २२ मई से ४ जून तक।

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचारः	घ.	प.	दि.मा. घ.	प.	स्टे.टा. सू.उ.		स्टे.टा. सू.अ.		मु.	बं.	सौ.	अं.	वा.
बु.	१	४७	१९	कृ.	३	४९	अ.	१८	४७	किं	१९	२१	सिद्धि	वृ.	६०	०	३३	२१	५	१२	६	३७	२९	८	१	२२	बु.
गु.	२	४२	२५	रो.	[illegible]	[illegible]	सु.	१२	१४	बा.	१४	५२	उत्पात	वृ.	२८	५०	३३	२३	५	१२	६	३७	३०	९	२	२३	गु.
शु.	३	३६	५४	आ.	५२	५६	धृ.	[illegible]	[illegible]	तै.	९	४०	पद्म	मि.	६०	०	३३	२५	५	१२	६	३८	१	१०	३	२४	शु.
श.	४	३१	०	पुन	४८	४७	गं.	५०	१०	व.	३	५७	छत्र	मि.	३४	४९	३३	२७	५	११	६	३८	२	११	४	२५	श.
र.	५	२४	५१	पु.	४४	४२	वृ.	४२	३१	बा.	२४	५१	श्रीवत्स	क.	६०	०	३३	२९	५	११	६	३९	३	१२	५	२६	र.
सो.	६	१८	४१	आ.	४०	५५	ध्रु.	३५	०	तै.	१८	४१	सौम्य	क.	४०	५५	३३	३१	५	११	६	३९	४	१३	६	२७	सो.
मं.	७	१२	४०	म.	३७	३७	व्या	२७	४६	व.	१२	४०	कालदं	सिं	६०	०	३३	३३	५	११	६	४०	५	१४	७	२८	मं.
बु.	८	७	२	पू.	३४	५९	हृ.	२१	०	बव	७	२	सुस्थिर	सिं	४९	३३	३३	३५	५	१०	६	४०	६	१५	८	२९	बु.
गु.	९	[illegible]	[illegible]	उ.	३३	१२	व.	१४	४९	कौ.	१	५५	मातंग	कं.	६०	०	३३	३७	५	१०	६	४१	७	१६	९	३०	गु.
शु.	११	५४	१०	ह.	३२	२५	सि.	९	२०	ग.	२५	५४	अमृत	कं.	६०	०	३३	३८	५	१०	६	४१	८	१७	१०	३१	शु.
श.	१२	५१	४७	चि.	३२	४९	व्य.	४	४०	बव	२२	५९	काण	कं.	२	३६	३३	४०	५	१०	६	४२	९	१८	११	१	श.
र.	१३	५०	३६	स्वा	३४	२२	व.	[illegible]	[illegible]	कौ.	२१	१२	लुम्ब	तु.	६०	०	३३	४१	५	१०	६	४२	१०	१९	१२	२	र.
सो.	१४	५०	४०	वि.	३७	१४	शि.	५६	२६	गर	२०	३८	मित्र	तु.	२१	३१	३३	४३	५	९	६	४३	११	२०	१३	३	सो.
मं.	१५	५२	५	अ.	४१	१५	सि.	५५	४२	व.	२१	२३	वज्र	वृ.	६०	०	३३	४४	५	९	६	४३	१२	२१	१४	४	मं.

करिदिन। करवीरव्रत। गंगादशहरारंभ। सांपातिक ज्येष्ठ ३। सर्वार्थ सिद्धियोग। चन्द्रदर्शन। गुरुवार, रोहिणीव मृगशीर्ष तीनो शुभ हैं परंतु इनका संयोग अशुभ है।β रम्भाव्रत ३। महाराणाप्रताप का जन्मदिन ३।β[μ रोहिणीका सूर्य २४-३५ बजे। वैनायकी चतुर्थी। उमावतार, पूजन व्रत। भद्रा ६-४६ से १७-३५ बजे तक।μ [θ दूसरेदिन उदकुंभदान दें। भद्रा १५-३२ से २-५० तक। व्यतीपात ८-५४ से। विन्ध्यवासिनी पूजा, शृंगार। झांसीकी महाराणी लक्ष्मीबाई का श्राद्धदिन ६।† भद्रा १०-१५ से २१-७ बजे तक। [†अरण्यषष्ठी। जामातृषष्ठी बंगालमें। श्रीअन्नपूर्णाष्टमी। शुक्लादेवीपूजा। सुस्थिर व प्रवर्धमान योग [§पाप नष्ट होते हैं। गंगादशहरा। आजकेगंगास्नान से ही ३ कायिक, ४ वाचिक, ३ मानसिक ये दशविध§ निर्जलाएकादशीस्मार्तोंकी। निर्जलाव्रत करने से १२ एकदशीकरने का श्रेय होता हैθ जून ६। निर्जलाएकादशी वैष्णवों की। चंपकद्वादशी। व्यतीपात ७-२ बजे तक। प्रदोषव्रत। दाक्षिणात्योंका त्रिदिनात्मक वटसावित्रीव्रतारंभ। [γ भद्रा १३-४२ तक।Λ भद्रा १-२५ से। [* या बिना उपवास किये ही पूजा का वटसावित्रीव्रत सकता।γ पौर्णिमाव्रत। देवस्नान पौर्णिमा। विल्वत्रिरात्रिव्रत। ३ या १ दिन उपवास करके*

९ पंक्ति, २९ मई बुधवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह। [β जमादिउलअव्वल ५ [Λचन्द्रग्रहण १० पंक्ति, ४ जून मंगलवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	२	२	१०	१२	२	७	१
१३	२९	५	२१	३	१०	२६	२६
४५	४६	४३	५६	२०	४१	३४	३४
२९	११	४	२१	२२	२७	२६	२६
५७	३६	७८	६	६९	७	३/५५	३/५५
३३	३०	२४	५६	६	१७	व.	व.

९



पक्षफल

कुछ आंदोलन चलता ही रहेगा। बैंक व डाकखानोंके गमनके मामले सामने आयेंगे। ज्वरप्रकोप, फोड़ों से जनता त्रस्त रहेगी। पशुओंको भी रोगहोंगे। दुकानों की लूट होने की संभावना है। लू का प्रकोप रहेगा, जनहानि होगी।

१०

शनि, बुध ३	२	शुक्र १	मंगल ४	रवि, केतु	१२	५	गुरु ११
६	८ चन्द्र, राहु	१०	७	९			

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	३	२	१०	१२	२	७	१
१९	३	१३	२२	१०	११	२६	२६
३०	२५	१	३५	४६	२५	१५	१५
२६	१९	२५	४१	३	३४	२०	२०
५७	३६	५७	६	६९	७	३/५५	३/५५
२६	३५	११	१	३२	२८	व.	व.

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचारः			दि. मा.		स्टै. टा. सू. उ.		स्टै. टा. सू. अ.		मु.	वं.	सा.	अं.	वा.
[illegible]	१	२०	३३	वि.	१७	५०	व.	३४	२७	कौ.	२०	३३	श्रीवत्स	तु.	२	२	३२	४२	५	२०	६	२९	१४	२४	१७	७	मं.
[illegible]	२	२२	६	अनु	२२	७	प.	३३	५२	गर	२२	६	सौम्य	वृ.	६०	०	३२	४५	५	१९	६	३०	१५	२५	१८	८	बु.
[illegible]	३	२४	४४	ज्ये.	२७	२९	शि.	३४	१०	भ.	२४	४४	कालदं.	वृ.	२७	२९	३२	४८	५	१९	६	३०	१६	२६	१९	९	गु.
[illegible]	४	२८	३२	मू.	३३	३४	सि.	३५	१०	बा.	२८	३२	सुस्थिर	ध.	६०	०	३२	५१	५	१८	६	३१	१७	२७	२०	१०	शु.
[illegible]	५	३३	५	पू.	४०	७	सा.	३६	३८	कौ.	०	४९	मातंग	ध.	५६	४५	३२	५४	५	१८	६	३१	१८	२८	२१	११	श.
[illegible]	६	३८	९	उ.	४६	२९	शु.	३८	१८	गर	५	३७	अमृत	म.	६०	०	३२	५६	५	१७	६	३२	१९	२९	२२	१२	र.
[illegible]	७	४३	१६	श्र.	५२	४६	शु.	३९	५१	भ.	१०	४३	सिद्धि	म.	६०	०	३२	५९	५	१६	६	३२	२०	३०	२३	१३	सो.
[illegible]	८	४७	५९	ध.	५८	१०	ब्र.	४०	५७	बा.	१५	३८	उत्पात	म.	२५	२८	३३	२	५	१६	६	३३	२१	३१	२४	१४	मं.
[illegible]	९	५२	०	श.	६०	०	ऐं.	४१	२७	तै.	२०	०	मानस	कुं.	६०	०	३३	४	५	१५	६	३३	२२	१	२५	१५	बु.
[illegible]	१०	५४	५६	श.	२	२९	वै.	४१	२	व.	२३	२८	वज्र	कुं.	४९	५३	३३	७	५	१५	६	३४	२३	२	२६	१६	गु.
[illegible]	११	५६	५०	पू.	५	४१	वि.	३९	४६	बव	२५	५३	ध्वांक्ष	मी.	६०	०	३३	९	५	१४	६	३४	२४	३	२७	१७	शु.
[illegible]	१२	५७	२०	उ.	७	३७	प्री	३७	२८	कौ.	२७	५	धूम्र	मी.	६०	०	३३	१२	५	१४	६	३५	२५	४	२८	१८	श.
[illegible]	१३	५६	२२	रे.	८	१७	आ.	३४	८	गर	२६	५६	प्रवर्ध.	मी.	८	१७	३३	१४	५	१४	६	३५	२६	५	२९	१९	र.
[illegible]	१४	५४	२९	अ.	७	४६	सौ	२९	४९	भ.	२५	३०	रक्ष	मे.	६०	०	३३	१६	५	१३	६	३६	२७	६	३०	२०	सो.
[illegible]	३०	५१	२२	भ.	६	१२	शो	२४	४१	चतु	२२	५६	मुसल	मे.	२०	३६	३३	१९	५	१३	६	३६	२८	७	३१	२१	मं.

ज्येष्ठ कृष्णपक्षः संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७४, पंग १३८१ । सौम्यगोलः, उत्तरायणं, बसन्तर्तुः । ७ मई से २१ मई तक ।

वटसावित्रीव्रतका विशेष—यह व्रत ३ प्रकार का है। १ उपवास बिना किये ही, दूसरा a
नारदजयन्ती। भद्रा २-४१ बजे से। [a उपवास करके और तीसरा ३ दिन उपवासb
संकष्ट चतुर्थी, चन्द्रोदय २१-२४ बजे। भद्रा १५-१३ तक। [bकरके पूजा का।
जो स्त्री ३ दिन उपवास नहीं कर सकती वह पहले दिन नक्त करें, दूसरे दिन अयाचितc
कृत्तिका का सूर्य १२-१० बजे। [c रहें व तीसरे दिन व्रत करें और आरोग्य रखें।
भद्रा २०-३२ बजे से। [h तक। स्नान करके यथाशक्ति गोदान दें। अमृतसिद्धियोग।*
भद्रा ९-३३ बजे तक। [dवृष संक्रान्ति१९-१९ बजे। पर्वकाल १२ बजे से १८-३३h
कालाष्टमी। तीसरी शीतलाष्टमी ७-४८ तक माताका पूजनकर भोजन भी होजायें।d
वैधृति २१-५० बजे से। पंचक। बंगज्येष्ठ २। तामिल वैशाख २। सर्वार्थसिद्धियोग।
वैधृति २१-४० तक। पंचक। भद्रा १४-३८से ३-१३ तक। वैधृतिसबकामोंमें वर्ज्य है।
अपरा, अचला, एकादशी सब की। पंचक। बिना मांगे मिले वह खाना अयाचित है।
पंचक। [f का फल होता है। तीनों प्रकार के व्रतवाली सब गौड़ोंका वटसावित्री व्रत।
प्रदोष। पंचक ८-३३ तक। भद्रा ३-५१से। गौड़ोंका ३ दिनों का वटसावित्री व्रतारंभ।
मासशिवरात्रि। भद्रा १५-२५ तक। केवल प्रदोषकाल में ही भोजन करना नक्त है।
वर्षश्राद्ध। भाऊका अमावस्या। भौमवती अमावास्या गंगास्नान से ही सहस्रगोदान[f

[illegible] पंचित, १४ मई मंगलवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह। [*पंचक १७-२७ से ८ पंचित, २१ मई मंगलवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१२	२	१	१०	११	२	७	१
२९	२०	१०	१९	१६	८	२७	२७
१९	४०	१३	५५	४३	५७	२२	२२
३२	५३	५८	९	५७	१	११	११
५७	३९	१२२	९	६७	६	३/५५	३/५५
५३	१३	१३	१	४५	३६	व.	व.



पक्षफल

७ सोमवार, १३ मई को बुधका पश्चिमोदय होगी। लू चलना आरंभ होगा। फलों की फसल संतोष जनक रहेगी। उपद्रवीतत्व अमानुषता का व्यहार करेंगे। कुछ पार्टियां मिलकर आंदोलन चलायेंगी। रेल-बस-ट्रक-राह चलतु भी लूटे जायंगे। बाहरके अतिथि का सम्मान होगा।



र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	२	१	१०	११	२	७	१
६	२४	२३	२०	२४	९	२६	२६
४	३१	३८	५५	४०	४४	५९	५९
१५	११	५३	३४	२३	३३	५४	५४
५७	३६	१०४	८	६८	६	३/५५	३/५५
४४	२३	०	६	२७	५९	व.	व.

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचारः			वि. मा. घ. प.		स्टं. टा. सू. उ.		स्टं. टा. सू. अ.		मु.	बं.	सां.	अं.	वा.
बु.	१	४७	१९	कृ.	३	४९	अ.	१८	४७	किं	१९	२१	सिद्धि	वृ.	६०	०	३३	२१	५	१२	६	३७	२९	८	१	२२	बु.
गु.	२	४२	२५	रो.	[illegible]	[illegible]	सु.	१२	१४	बा.	१४	५२	उत्पात	वृ.	२८	५०	३३	२३	५	१२	६	३७	३०	९	२	२३	गु.
शु.	३	३६	५४	आ.	५२	५६	धृ.	[illegible]	[illegible]	तै.	९	४०	पद्म	मि.	६०	०	३३	२५	५	१२	६	३८	१	१०	३	२४	शु.
श.	४	३१	०	पुन	४८	४७	गं.	५०	१०	व.	३	५७	छत्र	मि.	३४	४९	३३	२७	५	११	६	३८	२	११	४	२५	श.
र.	५	२४	५१	पु.	४४	४२	वृ.	४२	३१	बा.	२४	५१	श्रीवत्स	क.	६०	०	३३	२९	५	११	६	३९	३	१२	५	२६	र.
सो.	६	१८	४१	आ.	४०	५५	ध्रु.	३५	०	तै.	१८	४१	सौम्य	क.	४०	५५	३३	३१	५	११	६	३९	४	१३	६	२७	सो.
मं.	७	१२	४०	म.	३६	३७	व्या	२७	४६	व.	१२	४०	कालदं	सिं	६०	०	३३	३३	५	११	६	४०	५	१४	७	२८	मं.
बु.	८	७	२	पू.	३४	५९	ह.	२१	०	बव	७	२	सुस्थिर	सिं	४९	३३	३३	३५	५	१०	६	४०	६	१५	८	२९	बु.
गु.	९	[illegible]	[illegible]	उ.	३३	१३	व.	१४	४९	को.	१	५५	मातंग	कं.	६०	०	३३	३७	५	१०	६	४१	७	१६	९	३०	गु.
शु.	११	५४	१०	ह.	३२	२५	सि.	९	२०	व.	२५	५४	अमृत	कं.	६०	०	३३	३८	५	१०	६	४१	८	१७	१०	३१	शु.
श.	१२	५१	४७	चि.	३२	४६	व्य.	४	४०	बव	२२	५९	काण	कं.	२	३६	३३	४०	५	१०	६	४२	९	१८	११	१	श.
र.	१३	५०	३६	स्वा	३४	२२	व.	[illegible]	[illegible]	कौ.	२१	१२	लुम्ब	तु.	६०	०	३३	४१	५	१०	६	४२	१०	१९	१२	२	र.
सो.	१४	५०	४०	वि.	३७	१४	शि.	५६	२६	गर	२०	३८	मित्र	तु.	२१	३१	३३	४३	५	९	६	४३	११	२०	१३	३	सो.
मं.	१५	५२	५	अ.	४१	१५	सि.	५५	४२	म.	२१	२३	वज्र	वृ.	६०	०	३३	४४	५	९	६	४३	१२	२१	१४	४	मं.

ज्येष्ठ शुक्लपक्षः संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७४, वंग. १३८१
सौम्यगोलः, उत्तरायणं, ग्रीष्मर्तुः २२ मई से ४ जून तक।

करिदिन । करवीरव्रत । गंगादशहरारंभ । सांपातिक ज्येष्ठ ३ । सर्वार्थ सिद्धियोग ।
चन्द्रदर्शन । गुरुवार, रोहिणीव मृगशीर्ष तीनो शुभ हैं परंतु इनका संयोग अशुभ है ।β
रम्भाव्रत ३ । महाराणाप्रताप का जन्मदिन ३ ।β[μ रोहिणीका सूर्य २४-३५ वजे ।
वैनायकी चतुर्थी । उमावतार, पूजन व्रत । भद्रा ६-४६ से १७-३५ वजे तक ।μ
[θ दूसरेदिन उदकुंभदान दें । भद्रा १५-३२ से २-५० तक । व्यतीपात ८-५४ से ।
विन्ध्यवासिनी पूजा, शृंगार । झांसीकी महारानी लक्ष्मीबाई का श्राद्धदिन ६ ।†
भद्रा १०-१५ से २१-७ वजे तक । [†अरण्यषष्ठी । जामातृषष्ठी बंगालमें ।
श्रीअन्नपूर्णाष्टमी । शुक्लादेवीपूजा । सुस्थिर व प्रवर्धमान योग [§पाप नष्ट होते हैं ।
गंगादशहरा । आजकेगंगास्नान से ही ३ कायिक, ४ वाचिक, ३ मानसिक ये दशविध§
निर्जलाएकादशीस्मार्तोंकी । निर्जलाव्रत करने से १२ एकादशीकरने का श्रेय होता हैθ
जून ६ । निर्जलाएकादशी वैष्णवों की । चंपकद्वादशी । व्यतीपात ७-२ वजे तक ।
प्रदोषव्रत । दाक्षिणात्योंका त्रिदिनात्मक वटसावित्रीव्रतारंभ । [γ भद्रा १३-४२ तक।Λ
भद्रा १-२५ से । [* या विना उपवास किये ही पूजा का वटसावित्रीव्रत सबका ।γ
पौर्णिमाव्रत । देवस्नान पौर्णिमा । विल्वत्रिरात्रिव्रत । ३ या १ दिन उपवास करके*

९ पंक्ति, २९ मई बुधवार के ५-२९ वजे के स्पष्टग्रह । [β जमादिउलअव्वल ५ [Λचन्द्रग्रहण १० पंक्ति, ४ जून मंगलवार के ५-२९ वजे के स्पष्टग्रह ।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	२	२	१०	१२	२	७	१
१३	२९	५	२१	३	१०	२६	२६
४५	४६	४३	५६	५०	४१	३४	३४
२९	११	४	२१	२२	२७	२६	२६
५७	३६	७८	६	६९	७	[illegible]	[illegible]
३३	३०	२४	५६	६	१७	व.	व.

९
मंगल, बुध, शनि ३ | २ | शुक्र १ | ४ | रवि, केतु | १२ | चन्द्र ५ | गुरु ११ | ६ | राहु ८ | १० | ७ | ९

पक्षफल

कुछ आंदोलन चलता ही रहेगा । बैंक व डाकखानोंके गमनके मामले सामने आयेंगे । ज्वर-प्रकोप, फोड़ों से जनता त्रस्त रहेगी । पशुओंको भी रोगहोंगे । दुकानों की लूट होने की संभावना है । लू का प्रकोप रहेगा, जनहानि होगी ।

१०
शनि, बुध ३ | २ | शुक्र १ | मंगल ४ | रवि, केतु | १२ | ५ | गुरु ११ | ६ | चन्द्र, राहु ८ | १० | ७ | ९

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	३	२	१०	१२	२	७	१
१९	३	१३	२२	१०	११	२६	२६
३०	२५	१	३५	४६	२५	१५	१५
२६	१९	२५	४१	३	३४	२०	२०
५७	३६	५७	६	६९	७	[illegible]	[illegible]
२६	३५	११	१	३२	२८	व.	व.

आषाढ़ कृष्णपक्षः संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७४, बंग १३८१। सौम्यगोलः, उत्तरायणं, ग्रीष्मर्तुः। ५ जून से २० जून तक।

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचारः	घ.	प.	दि. मा. घ.	प.	स्टे. टा. सू. उ.		स्टे. टा. सू. अ.		मु.	चं.	सौ.	अं.	वा.
बु.	१	५४	३५	ज्ये.	४६	२४	सा.	५५	५१	बा.	२३	२०	ध्वांक्ष	वृ.	४६	२४	३३	४६	५	९	६	४३	१३	२२	१५	५	बु.
गु.	२	५८	१६	मू.	५२	२०	शु.	५६	४६	तै.	२६	२५	धूम्र	ध.	६०	०	३३	४७	५	९	६	४४	१४	२३	१६	६	गु.
शु.	३	६०	०	पू.	५८	४७	शु.	५८	१०	व.	३०	३०	प्रवर्ध.	ध.	६०	०	३३	४८	५	९	६	४४	१५	२४	१७	७	शु.
श.	३	२	४३	उ.	६०	०	ब्र.	५९	५२	भ.	२	४३	रक्ष	म.	१५	२६	३३	४९	५	९	६	४५	१६	२५	१८	८	श.
र.	४	७	४२	उ.	५	२१	ऐं.	६०	०	बा.	७	४२	अमृत	म.	६०	०	३३	५०	५	९	६	४५	१७	२६	१९	९	र.
सो.	५	१२	४५	श्र.	११	३३	ऐं.	१	२७	तै.	१२	४५	सिद्धि	म.	४४	२०	३३	५१	५	९	६	४५	१८	२७	२०	१०	सो.
मं.	६	१७	२७	ध.	१७	६	वै.	२	४१	व.	१७	२७	उत्पात	कुं.	६०	०	३३	५२	५	९	६	४६	१९	२८	२१	११	मं.
बु.	७	२१	२७	श.	२१	४०	वि.	३	२१	बव	२१	२७	मानस	कुं.	६०	०	३३	५३	५	९	६	४६	२०	२९	२२	१२	बु.
गु.	८	२४	२४	पू.	२५	८	प्री.	३	८	कौ.	२४	२४	मुद्गर	कुं.	९	१६	३३	५३	५	९	६	४७	२१	३०	२३	१३	गु.
शु.	९	२६	१९	उ.	२७	१७	आ.	[illegible]	[illegible]	गर	२६	१९	केतु	मी.	६०	०	३३	५४	५	९	६	४७	२२	३१	२४	१४	शु.
श.	१०	२६	४९	रे.	२८	१३	शो.	५६	५२	भ.	२६	४९	धाता	मी.	२८	१३	३३	५५	५	९	६	४७	२३	३२	२५	१५	श.
र.	११	२६	२	अ.	२७	५४	अ.	५२	४४	बा.	२६	२	आनंद	मे.	६०	०	३३	५५	५	९	६	४८	२४	१	२६	१६	र.
सो.	१२	२४	४	भ.	२६	३१	सु.	४७	४५	तै.	२४	४	चर	मे.	४०	५८	३३	५६	५	१०	६	४८	२५	२	२७	१७	सो.
मं.	१३	२१	०	कृ.	२४	२०	धृ.	४२	०	व.	२१	०	गद	वृ.	६०	०	३३	५६	५	१०	६	४८	२६	३	२८	१८	मं.
बु.	१४	१६	५७	रो.	२१	१७	शू.	३५	३५	श.	१६	५७	शुभ	वृ.	४९	२९	३३	५६	५	१०	६	४८	२७	४	२९	१९	बु.
गु.	३०	१२	४	मृ.	१७	४१	गं.	२८	३७	ना.	१२	४	मृत्यु	मि.	६०	०	३३	५७	५	१०	६	४९	२८	५	३०	२०	गु.

वर्षाके ग्रह योग:—वर्षाऋतुमें जब मंगल या शनि राशिचार करेगा तब अथवा I
[I शनि के उदय या अस्तके समय भी जलराशि का ही चन्द्र जल बरसाता है। A
भद्रा १७-२१ से। प्रवर्धमानयोग १७-२१ तक। बुधशुक्र के बीच में रवि न होगा ७
संकष्टचतुर्थी, चन्द्रोदय २१-२८ बजे। भद्रा ६-१४ तक। [७ और ये पासमें आयेंगे *
मृगशीर्ष का सूर्य ९-२ बजे। अमृतसिद्धियोग ७-१७ बजे तक। [* तो वर्षा होगी।
पंचक २२-५३ से। वैधृति ५-४४ बजे से। वर्षाप्रश्नकर्ता के क्षितिजमें वर्षा होती हैं।
पंचक। भद्रा १२-८ से २४-५६ बजे तक। वैधृति ६-१३ बजे तक। वर्षा एकसाथ #
कालाष्टमी। पंचक। सर्वार्थसिद्धियोग १३-४९ बजे तक। [#देश भर नहीं होती।
बोधीशीतलाष्टमी ७-३२ तक माता का पूजन, भोजन भी हो जायें। पंचक।
शचीपूजन। पंचक। भद्रा ३-१८ से [† ११-३४ तक। स्नानकर वस्त्र, अन्नादि दान दें।
पंचक १६-२६ तक। भद्रा १५-५३ तक। मिथुनसंक्रान्ति ५-१० बजे। पर्व ५-१० से †
योगिनीएकादशी सबकी। योगिनीएकादशी विधान से करने से कुष्ट नष्ट होगा। µ
सोम व पक्ष प्रदोषव्रत। धन व पुत्रार्थी सोमप्रदोष किया करें। [µ बंग आषाढ़ १।
मासशिवरात्रि। भद्रा १३-३४ से २४-४५ बजे तक। चिटी अंडालेकर चलती है तो, ×
[× अथवा पंखवाले लंबे टिड्डी जैसे कीडे उडते है तो, उस क्षितिज में वर्षा होती है।
दर्शश्राद्ध। हलपूजन। गुरुवार को मृगशीर्ष नक्षत्र का संयोग अशुभफलदायक है।

११ पंक्ति, १३ जून गुरुवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह। [Aकरिदिन] १२ पंक्ति, २० जून गुरुवार के ५-९ बजे के स्पष्टग्रह।

११ पंक्ति स्पष्टग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	३	२	१०	१२	२	७	१
२८	८	१९	२३	२१	१२	२५	२५
६	५५	१३	२३	१४	३३	४६	४६
४८	३	०	५४	२१	३३	४१	४१
५७	३६	२०	४	७०	७	३ ११	३ ११
२०	४३	९	३१	८	४०	व.	व.

११ (कुण्डली): ४ मंगल; ३ बुध, शनि; २ रवि, केतु; १ शुक्र; १२; ११ चन्द्र, गुरु; १०; ९; ८ राहु; ७; ६; ५

पक्षफल

८गुरुवार, १३ जून को शनिका पश्चिमास्त होगा। १२सोमवार, १७जूनको बुध वक्री होगा, ३०गुरुवार, २०जून को बुध का पश्चिमास्त होगा। १०जून को शनिको मिथुनराशिमें गये १वर्ष होगा। युद्धवार्ता तथा छूट, पुट हमलेबाजी आरंभ होगी। विग्रहशान्त्यर्थ प्रयास होंगे।

१२ (कुण्डली): ४ मंगल; ३ रवि, चन्द्र, बुध, शनि; २ केतु; १ शुक्र; १२; ११ गुरु; १०; ९; ८ राहु; ७; ६; ५

१२ पंक्ति स्पष्टग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	३	२	१०	१२	२	७	१
४	१३	१९	२३	२९	१४	२५	२५
४७	१२	५९	५१	२६	२७	२४	२४
५७	२९	३	४७	३२	३०	२४	२४
५०	३६	[illegible]	३	७०	७	३ ११	३ ११
१७	५१	व.	१६	३२	४६	व.	व.

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचारः			दि. मा. घ. प.		स्टै. टा सू. उ.		स्टै. टा सू. अ.		मु.	ई.	सौ.	अं.	वा.	आषाढ़ शुक्लपक्षः संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७४, फसली सन् १३८१. सौम्यगोलः, उत्तरायणं, ग्रीष्मर्तुः। २१ जून से ४ जुलाई तक।
शु.	१	६	२३	आ.	१३	४१	वृ.	२१	१७	बव	६	२३	पद्म	मि.	५५	३४	३३	५७	५	१०	६	४९	२९	६	३१	२१	शु.	चन्द्रदर्शन। रामरथोत्सव। रथयात्रा, जगन्नाथपुरीमें मेला। आर्द्राका सूर्य ९-५७बजे θ
श.	२	[illegible]	[illegible]	पुन	९	२१	ध्रु.	१३	४५	कौ.	०	३९	छत्र	क.	६०	०	३३	५७	५	१०	६	४९	१	७	१	२२	श.	जमादिउस्सानी। सांपातिक आषाढ़। [θस्त्रीस्त्रीयोग। चन्द्र, चन्द्रनाड़ी। बादल रहेंगे।
र.	४	४८	१४	पु.	५	२३	व्या.	[illegible]	[illegible]	व.	२१	२२	श्रीवत्स	क.	६०	०	३३	५७	५	११	६	४९	२	८	२	२३	र.	वैनायकी चतुर्थी। भद्रा १३-४४से २४-२९ बजेतक। सर्वार्थसिद्धियोग ७-२० बजेतक।
सो.	५	४२	१०	आ.	[illegible]	[illegible]	व.	५१	१५	बव	१५	१२	सौम्य	क.	१	२९	३३	५७	५	११	६	४९	३	९	३	२४	सो.	शाकव्रत में वर्ज्यंतरकारियां—फल, मूल, पुष्प, पत्र, अंकुर, काण्ड, त्वग्वाली शाका सुंठी, λ
मं.	६	३६	२९	पू.	५५	१३	सि.	४४	२१	कौ	९	२०	धूम्र	सिं.	६०	०	३३	५६	५	११	६	५०	४	१०	४	२५	मं.	कुमारषष्ठी। व्यतीपात २२-५५ बजे से। [λ हरिद्रा, जीरक। तथा इस मासमें φ
बु.	७	३१	१७	उ.	५३	१७	व्य.	३८	२	गर	३	५३	प्रवर्ध	सिं.	९	४४	३३	५६	५	११	६	५०	५	११	५	२६	बु.	विवस्वतसप्तमी। सूर्यपूजा। व्यतीपात २०-२४ तक। भद्रा १७-४२ से ४-४९बजेतक।
गु.	८	२६	५३	ह.	५२	१०	व.	३२	२४	बव	२६	५३	रक्ष	कं.	६०	०	३३	५६	५	१२	६	५०	६	१२	६	२७	गु.	श्रीअन्नपूर्णाष्टमी। [φ पौर्णिमा इन तीन दिनोंमें से कभी भी चातुर्मास्यव्रतारंभ करें
शु.	९	२३	१९	चि.	५२	१५	व.	२७	३५	कौ	२३	१९	मुसल	कं.	२२	१३	३३	५५	५	१२	६	५०	७	१३	७	२८	शु.	[गंही शाकव्रत है। भद्रा १३-१ बजे तक। चातुर्मास्यव्रतारम्भ। एकादशी, द्वादशी ǂ
श.	१०	२०	४८	स्वा	५३	२१	शि.	२३	३८	गर	२०	४८	सिद्धि	तु.	६०	०	३३	५५	५	१२	६	५०	८	१४	८	२९	श.	गिरिजापूजा दशमी। मन्वादि १०। भद्रा १-१६ बजे से। [μ शाक न खाना। ग
र.	११	१९	३०	वि.	५६	४	सि.	२०	४१	भ.	१९	३०	उत्पात	तु.	४०	२६	३३	५४	५	१३	६	५०	९	१५	९	३०	र.	शयनीएकादशी सब की। श्रीविष्णुका क्षीराब्धिमें शयनोत्सव। आज से मासभर μ
सो.	१२	१९	२६	अनु	५९	५२	सा.	१८	४५	बा	१९	२६	मानस	वृ.	६०	०	३३	५३	५	१३	६	५०	१०	१६	१०	१	सो.	जुलाई ७। सोम शपक्षप्रदोषव्रत। पुत्र व धनार्थी सोमप्रदोषव्रत किया करें। सिद्धियोग ॥
मं.	१३	२०	४२	ज्ये	६०	०	शु.	१७	५१	तै.	२०	४२	मुद्गर	वृ.	६०	०	३३	५३	५	१३	६	५०	११	१७	११	२	मं.	[गहोनेवाली कोई भी शाक व घाममें पहले से सुखाई गयी शाक खानेसे व्रत भंग होगा।
बु.	१४	२३	८	ज्ये	४	४७	शु.	१७	४९	व.	२३	८	ध्वांक्ष	वृ.	४	४७	३३	५२	५	१४	६	५०	१२	१८	१२	३	बु.	पौर्णिमाव्रत। कोकिलाव्रत। सूर्यास्तसे २१-१४ बजेतक श्रीशिवका शयनोत्सव*
गु.	१५	२६	४३	मू.	१०	२०	ब्र.	१८	४२	बव	२६	४३	धूम्र	ध.	६०	०	३३	५१	५	१४	६	५०	१३	१९	१३	४	गु.	गुरुपौर्णिमा। व्यासपूजा। मन्वादि १५। [*करें। भद्रा १४-२९ से ३-१२ बजे तक।

१३ पंक्ति, २७ जून गुरुवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

१४ पंक्ति, ४ जुलाई गुरुवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	३	२	१०	१	२	७	१
११	१७	१७	२४	७	१४	२५	२५
२८	३०	२३	१०	४१	२१	२	२
४३	४७	०	४२	१७	५९	७	७
५७	२६	[illegible]	१	७०	७	[illegible]	[illegible]
१३	५८	व.	५७	५२	४८	व.	व.

१३

मंगल ४ | ३ रवि, बुध, शनि | शुक्र, केतु २ | १ | ५ | चन्द्र ६ | १२ | ७ | ९ | गुरु ११ | राहु ८ | १०

पक्षफल

आरंभमें वर्षा होकर रुकेगी। किसान प्रसन्न रहेंगे। नौका, पानीजहाज, रेल, विमान (हवाईजहाज) की दुर्घटना चलेगी। सत्तीका रुख है। यज्ञ-याग खूब होंगे। मंगलकार्यों की धूम रहेगी। लूट, पाट चलतीही रहेगी। शासन कड़ा होता जायगा। शान्ति रहेगी।

१४

मंगल ४ | ३ रवि, बुध, शनि | शुक्र, केतु २ | १ | ५ | ६ | १२ | ७ | चन्द्र ९ | गुरु ११ | राहु ८ | १०

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	३	२	१०	१	२	७	१
१८	२१	१३	२४	१५	१५	२४	२४
९	४९	१९	२०	५८	१६	३९	३९
४	५१	१	२३	२५	३८	५०	५०
५७	३७	[illegible]	०	७१	७	[illegible]	[illegible]
११	५	व.	३७	१३	४८	व.	व.

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचारः			दि.मा. घ.	प.	स्टै.टा. सू.उ.		स्टै.टा. सू.अ.		मु.	वं.	सां.	अं.	वा.
शु.	१	३१	६	पू.	१६	५२	ऐं.	१९	५३	को.	३१	६	प्रवर्ध.	ध.	३३	३०	३३	५०	५	१४	६	५०	१४	२०	१४	५	शु.
श.	२	३६	२	उ.	२२	२५	वै.	२१	३१	तै.	३	२४	रक्ष	म.	६०	०	३३	४९	५	१५	६	५०	१५	२१	१५	६	श.
र.	३	४१	४	श्र.	२९	४६	वि.	२३	९	व.	८	३३	गद	म.	६०	०	३३	४८	५	१५	६	५०	१६	२२	१६	७	र.
सो.	४	४५	४८	ध.	३५	२७	प्री.	२४	२८	वव	१३	२६	शुभ	म.	२	३६	३३	४६	५	१६	६	५०	१७	२३	१७	८	सो.
मं.	५	४९	४९	श.	४०	१५	आ.	२५	१४	को.	१७	४९	मृत्यु	कुं.	६०	०	३३	४५	५	१६	६	५०	१८	२४	१८	९	मं.
बु.	६	५२	५१	पू.	४३	५८	सौ.	२५	१२	गर.	२१	२०	पद्म	कुं.	२७	१७	३३	४४	५	१६	६	५०	१९	२५	१९	१०	बु.
गु.	७	५४	४८	उ.	४६	२६	शो.	२४	१८	भ.	२३	४	छत्र	मी.	६०	०	३३	४३	५	१७	६	५०	२०	२६	२०	११	गु.
शु.	८	५५	२५	रे.	४७	३४	अ.	२२	२३	बा	२५	७	श्रीवत्स	मी.	४७	३४	३३	४१	५	१७	६	५०	२१	२७	२१	१२	शु.
श.	९	५४	४३	अ.	४७	३५	सु.	१९	२५	तै.	२५	४	सौम्य	मे.	६०	०	३३	४०	५	१८	६	४९	२२	२८	२२	१३	श.
र.	१०	५२	४९	भ.	४६	२३	धृ.	१५	२९	व.	३	४६	कालदं	मे.	६०	०	३३	३८	५	१८	६	४९	२३	२९	२३	१४	र.
सो.	११	४९	४८	कृ.	४४	२३	शू.	१०	४०	बव	२१	१९	सुस्थिर	मे.	०	५३	३३	३६	५	१९	६	४९	२४	३०	२४	१५	सो.
मं.	१२	४५	४९	रो.	४१	३०	गं.	५८	४३	कौ.	१७	४९	मातंग	वृ.	६०	०	३३	३५	५	१९	६	४९	२५	३१	२५	१६	मं.
बु.	१३	४१	०	मृ.	३९	५७	ध्रु.	५१	४९	गर	१३	२५	अमृत	वृ.	१०	४४	३३	३३	५	१९	६	४९	२६	१	२६	१७	बु.
गु.	१४	३५	३५	आ.	३४	३	व्या.	४४	३०	भ.	८	१८	कण	मि.	६०	०	३३	३१	५	२०	६	४८	२७	२	२७	१८	गु.
शु.	३०	२९	४०	पुन	२९	५४	ह.	३६	५६	चतु	२	३८	लुम्ब	मि.	१५	५६	३३	२९	५	२०	६	४८	२८	३	२८	१९	शु.

श्रावण कृष्णपक्षः संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७४, बंग १३८१. सौम्यगोलः। उत्तरायणं। ग्रीष्मर्तुः। ५ से १९ जुलाई तक।

श्रावणमासभर श्रीविष्णु, श्रीशिव या दोनो को अभिषेक करें। एक भुक्त, नक्तव्रतA
वैधृति १३-५१ तक।[B पुनर्वसुकासूर्य ११-४९ बजे। स्त्रीपुरुष योग। चन्द्र, चन्द्रनाडी,J
भद्रा ८-४१ से २१-४१ बजे तक। [A करें। अशून्यशयनव्रत चन्द्रोदय १९-२७ बजे।B
संकष्ट चतुर्थी, चन्द्रोदय २१-१३ बजे। पंचक ६-१८ से। पंचक में पलंग न बिने।
मौनापञ्चमी। नागपूजा। बंगाली एवं मरुस्थलियोंकी नागपंचमी। पंचक, शांति करें।
पंचक। भद्रा रात २-२४ बजे से। पंचक मे दक्षिण की यात्रा इंधन संग्रह, मना है।
पंचक। भद्रा दिनके १४-३१ बजे तक। सर्वार्थ सिद्धि योग रातके ११-५१ बजे से।
कालाष्टमी। पंचक २४-१९ बजे तक। सर्वार्थ सिद्धयोग २४-१९ बजे तक।
[C दान दें। दक्षिणायन, देवों की रात्रि, दैत्योंका दिनारंभ। [Jमध्यम वर्षा होगीM
भद्रा १४-४९ से २-२६ बजे तक। [Dपुण्य होगा। स्नान करके घृतधेनु, सुवर्ण, छत्रC
कामदा एकादशीसबकी। शनिवार व नवमी के संयोग से सिद्धातिथि शुभ होती है।
कर्कसंक्रान्ति २४-४९ बजे, संक्रान्ति-पर्व सूर्योदय से १८-४९ तक १२ बजे से अधिकD
प्रदोषव्रत। भद्रा २१-४३ बजे से। बंग श्रावण ४। [Fचन्द्रनाडी। बादल रहेंगे।
मासशिवरात्रि। भद्रा ८-३९ बजे तक। [Eसूर्य १३-७ बजे। स्त्री स्त्री, योग। चन्द्र,F
दर्शश्राद्ध। दीपपूजन। स्नान, दान की श्रावणी अमावस्या। मन्वादि ३०। पुष्य कालE

१५ पंक्ति, १२ जुलाई शुक्रवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह। [Mवैधृति १३-११ से

१६ पंक्ति, १९ जुलाई शुक्रवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	३	२	१०	१	२	७	१
२५	२६	१०	२४	२५	१६	२४	२४
४६	४६	५३	१९	२९	१८	१४	१४
३५	५८	२६	५१	३५	५०	२२	२२
५७	३७	६२	५६	७१	७	५१	५१
१३	१४	व.	व.	३७	४४	व.	व.

१५

मंगल ४ | ३ रवि, बुध, शनि | शुक्र, केतु २ | १ | ५ | ६ | चन्द्र १२ | ७ | ९ | ११ गुरु | राहु ८ | १०

पक्षफल

३ रविवार, ७जुलाई को गुरु वक्री होगा। ६ बुधवार, १० जुलाई को बुधका पूर्वोदय होगा। ८शुक्रवार, १२ जुलाई को बुध मार्गी होगा। १२ मंगलवार, १६ जुलाई को शनि का पूर्वोदय होगा। शांतिवार्ता सफल होगी। हड़ताल, घेरावों पर प्रतिबन्ध लगेंगे। वर्षा नहीं होगी।

१६

मंगल ५ | रवि ४ | चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि ३ | २ केतु | ६ | ७ | १ | राहु ८ | १० | १२ | ९ | गुरु ११

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	४	२	१०	२	२	७	१
२	१	१३	२४	३	१७	२३	२३
२७	८	१	९	५१	१२	५२	५२
१८	०	५२	१०	५७	४१	५	५
५७	३७	४०	५८	७१	७	५५	५५
१७	२३	१०	व.	५७	३८	व.	व.

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचारः			दि. मा.		स्टै. टा. सू. उ.		स्टै. टा. सू. अ.		मु.	वं.	सां.	अं.	वा.	श्रावण शुक्लपक्षः संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७४, बंग १३८१ । सौम्यगोलः, दक्षिणायनं, वर्षर्तुः । २० जुलाईसे ३ अगस्त तक ।
श.	१	२३	३१	पु.	२५	४३	व.	२९	१४	बव	२३	३१	मित्र	क.	६०	०	३३	२७	५	२१	६	४८	२९	४	२९	२०	श.	चन्द्रदर्शन। सर्वार्थसिद्धि योग १५-३८ बजेतक। पुष्य नक्षत्र में कहीं की भी यात्रा होगी।
र.	२	१७	१८	आ.	२१	४४	सि.	२१	३४	कौ.	१७	१८	वज्र	क.	२१	४४	३३	२५	५	२१	६	४७	१	५	३०	२१	र.	रज्जब ७ । व्यतीपात १४-० से । व्यतीपात, भद्रा में दिया खोया मिलता नहीं है।
सो.	३	११	१४	म.	१८	१०	व्य.	१४	१५	गर	११	१४	ध्वांक्ष	सिं.	६०	०	३३	२३	५	२२	६	४६	२	६	३१	२२	सो.	मधुश्रवातीज । मधुश्रावणी। ठकुराणीतीज । वैनायकीचतुर्थी। व्यतीपात ११-४ तक ॥
मं.	४	५	३०	पू.	१५	९	व.	७	१३	म.	५	३०	धूम्र	सिं.	२९	३७	३३	२१	५	२२	६	४७	३	७	१	२३	मं.	नागपंचमी । नागपूजन । भद्रा ७-३४ तक । सांपातिक श्रावण ५ । [α भद्रा २०-४३ से।
बु.	५	५६	५६	उ.	१३	१	र.	५४	५५	वा.	०	१७	प्रवर्ध.	कं.	६०	०	३३	१८	५	२३	६	४७	४	८	२	२४	बु.	कल्कि जयंती ६, सायंकालमें पूजन, जन्मोत्सव करके अर्घ्य दें। भक्तं श्रियाल षष्ठी।
गु.	७	५२	१२	ह.	११	४१	सि.	४९	५५	गर	२४	६	रक्ष	कं.	४१	३४	३३	१६	५	२३	६	४६	५	९	३	२५	गु.	तुलसी जयन्ती। भद्रा २-१६ वजे से। यायीजयदयोग में पैदा हुए बालक दत्तक जाते हैं।
शु.	८	४९	३६	चि.	११	२७	सा.	४५	४४	न.	२०	५४	मुसल	तु.	६०	०	३३	१४	५	२४	६	४५	६	१०	४	२६	शु.	श्रीअन्नपूर्णाष्टमी। शिवको पवित्रा चढ़ावें । भद्रा १३-४६ तक। स्थायीजयो १० तक।
श.	९	४८	१४	स्वा.	१२	२४	शु.	४२	३३	वा.	१८	५५	सिद्धि	तु.	५९	५	३३	११	५	२४	६	४५	७	११	५	२७	श.	[γ १३-३१ वजे से। चन्द्र, चन्द्रनाडी। स्त्री पुरुषयोग। रिमझिम वर्षा होती रहेगी।
र.	१०	४८	१३	वि.	१४	३९	शु.	४०	२३	तै.	१८	१४	उत्पात	वृ.	६०	०	३३	९	५	२५	६	४४	८	१२	६	२८	र.	[β दधिव्रत है। वैधृति २१-१ वजे से। विंध्याचलमें भगवती मां का शृंगार होगा।
सो.	११	४९	१६	अनु.	१८	९	ब्र.	३९	१५	व.	१८	४५	मानस	वृ.	६०	०	३३	७	५	२५	६	४४	९	१३	७	२९	सो.	पुत्रदाएकादशी सबकी। भद्रा १२-५५ से १-७ तक। यायीजययोग १२-४१ तक।
मं.	१२	५१	३७	ज्ये.	२२	४६	ऐं.	३८	५८	बव	२०	२६	मुद्गर	वृ.	२२	४६	३३	४	५	२६	६	४३	१०	१४	८	३०	मं.	श्रीविष्णु को पवित्रा चढ़ावें। दधिव्रतारम्भ। आजसे मास भर दधी न खाना ही β
बु.	१३	५५	८	मू.	२८	२०	वै.	३९	३४	कौ.	२३	२३	केतु	ध.	६०	०	३३	१	५	२६	६	४३	११	१५	९	३१	बु.	प्रदोषव्रत। वैधृति २१-१६ बजे तक। [† १८-१४ वजे तक। आश्लेषाका सूर्य x
गु.	१४	५९	३०	पू.	३४	३४	वि.	४०	४४	गर	२७	१९	धाता	ध.	५०	१२	३२	५९	५	२७	६	४२	१२	१६	१०	१	गु.	अगस्त ८। भद्रा रात्रिशेष ५-१५ बजेसे। [δ हयग्रीव जयंती। झूलन पौर्णिमा। भद्रा †
शु.	१५	६०	०	उ.	४१	६	प्री.	४२	१७	म.	३१	५८	आनंद	म.	६०	०	३२	५६	५	२७	६	४१	१३	१७	११	२	शु.	वरलक्ष्मी पूजा। बलभद्र जयंती। नारली पौर्णिमा। रक्षाबंधन १८-१४ बजे से। δ
श.	१५	४	२६	श्र.	४७	२९	आ.	४३	५५	बव	४	२६	सुस्थिर	म.	६०	०	३२	५३	५	२७	६	४१	१४	१८	१२	३	श.	अमरनाथयात्रा। ऋग्वेदियों व सब याजुषोंकी श्रावणी। सुस्थिर प्रवर्धमान क्रमशः है।

१७ पंक्ति, २६ जुलाई शुक्रवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह ।

१८ पंक्ति, ३ अगस्त शनिवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह ।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	४	३	१०	२	२	७	१
९	५	१९	२३	१२	१८	२३	२३
८	३०	३६	४९	१६	५	२९	२९
[illegible]	५	२३	५	३१	३५	४८	४८
५७	३७	७६	३६	७२	७	३/११	३/११
२०	३१	३३	व.	१३	२८	व.	व.

१७

मंगल ५	रवि ४	बुध, शुक्र, शनि ३
६	चन्द्र ७	केतु २
राहु ८	१०	१
९	गुरु ११	१२

पक्षफल

उच्चवर्णीय, धनी स्त्रियों को बिमारियाँ आयेंगी। पर्वत शिखर गिरेंगे। वर्षा के अभावमें किसान चिंतित होंगे। तेल, तेलहन, द्रवद्रव्य सस्ते होंगे। कहीं-कहीं छात्र आंदोलन आरंभ होंगे। बस, ट्रक दुर्घटना में जन-धन हानि के योग हैं।

१८

मंगल ५	रवि, बुध ४	शुक्र, शनि ३
६	७	केतु २
राहु ८	चन्द्र १०	१
९	गुरु ११	१२

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	४	३	१०	२	२	७	१
१५	१०	१	२३	२१	१९	२३	२३
४९	३०	५१	१५	५५	४	४	४
५१	४९	४१	२४	४८	२५	२०	२०
५७	३७	१०९	४/८८	७२	७	३/११	३/११
२४	४१	३५	व.	३७	१२	व.	व.

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचारः			दि. मा. घ.	प.	स्टै. टा. सू. उ.		स्टै. टा. सू. अ.		मु.	पं.	सौ.	अं.	वा.
र.	१	९	३२	ध.	५३	२१	सौ.	४५	१७	कौ.	९	३२	मातंग	म.	२०	२५	३२	५१	५	२८	६	४०	१५	१९	१३	४	र.
सो.	२	१४	१९	श.	५८	२३	शो.	४६	८	गर	१४	१९	अमृत	कुं.	६०	०	३२	४८	५	२८	६	४०	१६	२०	१४	५	सो.
मं.	३	१८	२७	पू.	६०	०	अ.	४६	१६	भ.	१८	२७	काण	कुं.	४६	२७	३२	४५	५	२९	६	३९	१७	२१	१५	६	मं.
बु.	४	२१	३७	पू.	२	१८	सु.	४५	२९	बा.	२१	३७	पद्म	मी.	६०	०	३२	४२	५	२९	६	३८	१८	२२	१६	७	बु.
गु.	५	२३	३९	उ.	५	३	धृ.	४३	४४	तै.	२३	३९	छत्र	मी.	६०	०	३२	३९	५	३०	६	३८	१९	२३	१७	८	गु.
शु.	६	२४	२५	रे.	६	३२	शू.	४०	५७	व.	२४	२५	श्रीवत्स	मी.	६	३२	३२	३६	५	३०	६	३७	२०	२४	१८	९	शु.
श.	७	२३	५०	अ.	६	४६	गं.	३७	१०	बव	२३	५०	सौम्य	मे.	६०	०	३२	३३	५	३१	६	३६	२१	२५	१९	१०	श.
र.	८	२२	३	भ.	५	५२	वृ.	३२	२९	कौ.	२२	३	कालदं.	मे.	२०	२४	३२	३१	५	३१	६	३५	२२	२६	२०	११	र.
सो.	९	१९	९	कृ.	४	०	ध्रु.	२६	५८	गर	१९	९	सुस्थिर	वृ.	६०	०	३२	२७	५	३२	६	३५	२३	२७	२१	१२	सो.
मं.	१०	१५	१५	रो.	[illegible]	[illegible]	व्या	२०	४२	भ.	१५	१५	रक्ष	वृ.	२९	३५	३२	२४	५	३२	६	३४	२४	२८	२२	१३	मं.
बु.	११	१०	३१	आ.	५४	१	ह.	१३	५०	बा.	१०	३१	मुसल	मि.	६०	०	३२	२१	५	३२	६	३३	२५	२९	२३	१४	बु.
गु	१२	[illegible]	[illegible]	पुन	४९	५४	व.	[illegible]	[illegible]	तै.	५	८	सिद्धि	मि.	३५	५६	३२	१८	५	३३	६	३२	२६	३०	२४	१५	गु.
शु.	१४	५३	१२	पु.	४५	४१	व्य.	५१	११	भ.	२६	१५	उत्पात	क.	६०	०	३२	१५	५	३३	६	३१	२७	३१	२५	१६	शु.
श.	३०	४७	२	आ.	४१	३८	व.	४३	२१	चतु	२०	७	मानस	क.	४१	३८	३२	१२	५	३४	६	३१	२८	१	२६	१७	श.

भाद्रपद कृष्णपक्षः संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवी सन् १९७४, बंग १३८१। सौम्यगोलः, दक्षिणायनं, वर्षर्तुः। ४ अगस्तसे १७ अगस्त तक।

इनदोमासोंमें एकान्न खानेसे धन, धान्य, आयु, आरोग्य बढ़ता है। पंचक १३-३८ से। अशून्य शयन व्रत, चन्द्रोदय १९-१५ बजे। पंचक। भद्रा रात के २४-१ बजे से। कज्जली तीज। अंगारकी चतुर्थी, स्नान, दान, श्राद्धपर्व। संकष्टचतुर्थी, चन्द्रोदयλ पंचक। [λ२०-२०-बजे। बहुला चतुर्थी। आजसे जन्मभर, या २१ वर्ष या १ वर्ष, याρ पंचक। [ρ कम से कम आज चतुर्थी व्रत करें। पंचक। भद्रा १२-५२ बजे तक। हलषष्ठी। ललहीछठ। रांधनछठ। सुपौवन। पंचक ८-७ बजेतक। भद्रा१५-१६से* शीतलासप्तमी। कालाष्टमी। श्रीकृष्णजन्माष्टमी स्मार्तों की। [*३-९ बजे तक। श्रीकृष्णजयन्ती वैष्णवोंकी। नन्दोत्सव। गोकुलाष्टमी। [θ छेदे। बंगभाद्रपक्ष ५ गोगानवमी। भद्रा २४-२५ बजे से। [ϕ योग। चन्द्र, चन्द्रनाड़ी। वर्षामध्यम होगी। भद्रा ११-३८ तक। [π १२-१६तक। स्नानकरके छत्र, सुवर्णदानदें। स्त्री-स्त्री ϕ जया एकादशी सबकी। [ω सिंह संक्रान्ति १२-१६ बजे। सं० पर्व ५-५२ बजे से π प्रदोषव्रत। रात्रिशेष ५-१६ से भद्रा व व्यतीपात ५-७ से। २७वां स्वतन्त्रता-दिन। मासशिवरात्रि। भद्रा १६-२ बजे तक। व्यतीपात २-१ बजे तक। मघाकासूर्य व ω वर्षाश्राद्ध। पिठोराव्रत। पोला। कुशोत्पाटिनी अमावास्या। "ॐ हुंफट्" मन्त्र से कुशθ

१९ पंक्ति, ११ अगस्त शनिवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	४	३	१०	३	२	७	१
२४	१५	१७	२२	१	२०	२२	२२
२७	३२	३०	३१	३८	०	३८	३८
३	५८	२१	२३	०	५९	५२	५२
५७	३७	१२३	८	७२	६	३ ५ ५	३ ५ ५
३५	५३	२	व.	५९	५४	व.	व.

१९
मंगल ५
४ रवि, बुध, शुक्र
शनि ३
२ केतु
६
७
चन्द्र १
राहु ८
१०
९
१२
गुरु ११

पक्षफल

५ गुरुवार, ८ अगस्त को बुध का पूर्वास्त होगा। १४ शुक्रवार १६ अगस्त को मंगल का पश्चिमास्त होगा। पक्षान्त में अच्छी वर्षा होगी। नदी, नाले बाढ़से व्याप्त होंगे। शासन के विरुद्ध आंदोलन आरंभ होगा। शासन खूब कड़ा होगा। दमनचक्र चलेगा। शान्ति होगी।

२० पंक्ति, १७ अगस्त शुक्रवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

२०
६
५ रवि, मंगल
चन्द्र, बुध, ४ शुक्र
३ शनि
७
राहु ८
केतु २
९
गुरु ११
१
१०
१२

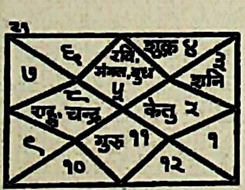
र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	३	१०	३	२	७	१
०	१९	२९	२१	८	२०	२२	२२
१२	२०	४६	५२	५६	४१	१९	१९
५२	४१	११	३५	३६	३८	४६	४६
५७	३८	१२०	५ १ ३	७३	६	३ ५ ५	३ ५ ५
४३	३	३९	व.	१६	३६	व.	व.

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचारः	घ.	प.	दि. मा. घ.	प.	स्टै. टा. सू. उ.		स्टै. टा. सू. अ.		मु.	पं.	सां.	अं.	वा.	अ. भाद्रपद शुक्लपक्षः संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७४, बंग १३८१. सौम्यगोलः। दक्षिणायनं। वर्षर्तुः। १८ अगस्त से १ सि. तक।
र.	१	४०	५९	म.	३७	५४	प.	३६	१	किं.	१४	१	मुद्गर	सिं.	६०	०	३२	९	५	३४	६	३०	२९	२	२७	१८	र.	अधिकभाद्रपदमासारंभ। अधिकमास के नियमोंका आरंभ। [µदत्तक जासकते हैं।
सो.	२	३५	१५	पू.	३४	४३	शि.	२८	५०	बा.	८	७	केतु	सिं.	४९	८	३२	५	५	३५	६	२९	३०	३	२८	१९	सो.	चन्द्रदर्शन। आक्रामक, वादी, यायीजयदयोग १९-४१ वजे से। इसमें पैदाहुएµ
मं.	३	३०	४	उ.	३२	२२	सि.	२२	११	तै.	२	४०	धाता	कं.	६०	०	३२	२	५	३५	६	२८	१	४	२९	२०	मं.	भद्रा ४-४३ वजे से। सर्वकार्यसाधक सर्वार्थसिद्धियोग सायंकाल १८-३२ वजेतक।
बु.	४	२५	३६	ह.	३०	४७	सा.	१६	११	म.	२५	३६	आनंद	कं.	६०	०	३१	५९	५	३५	६	२७	२	५	३०	२१	बु.	वैनायकीचतुर्थी। भद्रा १५-४९ वजे तक। आनंदयोग १५-४९ से १७-५४ वजे तक।
गु.	५	२१	५८	चि.	३०	१५	शु.	१०	५४	बा.	२१	५८	चर	कं.	०	३१	३१	५६	५	३६	६	२६	३	६	३१	२२	गु.	आज १४-२३ वजे तक पश्चिम दिशा की यात्रा की जायें तो कार्य साधक हो सकेगी।
शु.	६	१९	२१	स्वा	३०	५५	शु.	६	२८	तै.	१९	२१	गद	तु.	६०	०	३१	५२	५	३६	६	२५	४	७	१	२३	शु.	सांपातिक भाद्रपद ६। उत्तरदिशाकी यात्रा १३-२० वजे से १७-५८तक सफल होगी।
श.	७	१७	५७	वि.	३२	५०	ब्र.	३	१	व.	१७	५७	शुभ	तु.	१७	२१	३१	४९	५	३७	६	२४	५	८	२	२४	श.	भद्रा १२-४८ से १-२५ वजेतक। त्रिपुष्करयोग १२-४८ वजेतक। [*मनाना चाहिए।
र.	८	१७	४६	अनु	३६	३	ऐं.	[illegible]	[illegible]	बव	१७	४६	मृत्यु	वृ.	६०	०	३१	४५	५	३७	६	२३	६	९	३	२५	र.	श्रीअन्नपूर्णाष्टमी। राधाष्टमी। यह वर्षगांठपर्व होने से अधिक व शुद्ध दोनोंमासोंमें*
सो.	९	१८	५६	ज्ये.	४०	२२	वि.	५८	३६	कौ.	१८	५६	पद्म	वृ.	४०	२२	३१	४२	५	३८	६	२२	७	१०	४	२६	सो.	दक्षिणदिशाकीयात्रा २१-४७ से सफलहोगी। [ϕवैधृति ५-५१ से रात्रिशेष ५-१७तक।
मं.	१०	२१	१६	मू.	४५	४४	प्री.	५८	५७	गर.	२१	१६	छत्र	ध.	६०	०	३१	३९	५	३८	६	२१	८	११	५	२७	मं.	भद्रा २-५० वजे से। दिशाशूलके वार, समय छोड़कर यात्रामें सभी वार शुभ होते हैं।
बु.	११	२४	४६	पू.	५१	४८	आ.	५९	५७	भ.	२४	४६	श्रीवत्स	ध.	६०	०	३१	३५	५	३८	६	२०	९	१२	६	२८	बु.	कमला, पद्मा, पुरुषोत्तमी एकादशीसबकी। भद्रा १५-३२ वजे तक। सर्वार्थ†
गु.	१२	२९	८	उ.	५८	१७	सौ.	६०	०	बा.	२९	८	सौम्य	ध.	८	२५	३१	३२	५	३९	६	१९	१०	१३	७	२९	गु.	सर्वार्थ सिद्धियोगरातके ४-५८ वजे तक। [† सिद्धियोग १५-३२ से २-२१ बजे तक।
शु.	१३	३४	६	श्र.	६०	०	सौ.	१	२३	कौ.	१	३७	धूम्र	म.	६०	०	३१	२८	५	३९	६	१८	११	१४	८	३०	शु.	प्रदोषव्रत। पूर्वाफाल्गुनीका सूर्य ८-१९ बजे। स्त्रीपुरुषयोग, रविचन्द्रनाड़ी। अच्छीπ
श.	१४	३९	१६	श्र.	४	४३	शो.	२	२७	गर	६	४१	सुस्थिर	म.	३७	४३	३१	२५	५	४०	६	१७	१२	१५	९	३१	श.	पंचक २०-४५ से। भद्रा २१-२२ से। पंचकमें दक्षिणयात्रा मना है। [πवर्षा होगी।
र.	१५	४४	९	ध.	१०	४३	अ.	४	२१	भ.	११	४३	मातंग	कुं.	६०	०	३१	२१	५	४०	६	१६	१३	१६	१०	१	र.	पौर्णिमाव्रत। पंचक। सितम्बर१। भद्रा १०-२१ तक। उत्तरकी यात्रा १०-२१बजे से।

२१ पंक्ति, २५ अगस्त शनिवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

२२ पंक्ति, १ सितम्बर शनिवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	४	१०	३	२	७	१
७	२४	१५	२०	१८	२१	२१	२१
५५	२५	१९	५४	४३	३२	५४	५४
१०	४६	३२	५२	४५	५७	१८	१८
५७ ५३	३८ १५	१११ १	[illegible] व.	७३ २४	६ ३	[illegible] व.	[illegible] व.



पक्षफल

१५रविवार, १सितम्बर को बुध का पश्चिमास्त होगा। पूर्वीय व दक्षिणप्रान्तों में वर्षा का अभाव रहेगा। इतरत्र अच्छी वर्षा होगी। शत्रु की दुर्नीतिका प्रकाशन होगा। रेल-मार्ग, पूल क्षति-ग्रस्त होंगे। हवाईजहाज की दुर्घटना दिखती है।



र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	४	१०	३	२	७	१
१४	२८	२७	२०	२७	२२	२१	२१
४०	५४	४८	०	१९	१४	३२	३२
४७	६	५८	४५	३३	४७	१	१
५८ ३	३८ २७	१०१ ५५	[illegible] व.	७३ ५०	५ ४८	[illegible] व.	[illegible] व.

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचारः			दि. मा.		स्टै.टा. सू. उ.		स्टै.टा. सू. अ.		मु.	मं.	सा.	अं.	वा.	अ भाद्रपद कृष्णपक्षः संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७४ बंग १३८१। सौम्यगोलः, दक्षिणायनं, वर्षर्तुः, २ से १६ सितम्बर तक।
सो.	१	४८	२४	श.	१५	५९	सु.	५	१७	बा.	१६	१७	अमृत	कुं.	६०	०	३१	१८	५	४०	६	१५	१४	१७	११	२	सो.	अधिक भाद्रपद कृष्णपक्षारंभ। पंचक। अमृतसिद्धियोग १२-४ बजे तक शुभ है।
मं.	२	५१	४१	पू.	२०	८	धृ.	५	३२	तै.	२०	३	काण	कुं.	४	६	३१	१४	५	४१	६	१४	१५	१८	१२	३	मं.	पंचक। अशून्यशयनव्रत, चन्द्रोदय १८-५६ बजे। त्रिपुष्करयोग १३-४४ बजे तक।
बु.	३	५३	५२	उ.	२३	१२	शू.	४	५२	व.	२२	४७	लुम्ब	मी.	६०	०	३१	११	५	४१	६	१३	१६	१९	१३	४	बु.	पंचक। भद्रा १४-४८ से रात के ३-१४ बजे तक। पंचक में दक्षिणयात्रा मना है।
गु.	४	५४	४४	रे.	२४	५७	गं.	३	१९	बव	२४	१८	मित्र	मी.	२४	५७	३१	७	५	४१	६	१२	१७	२०	१४	५	गु.	संकष्टचतुर्थी, चन्द्रोदय २०-४ बजे। पंचक १५-४० बजे तक। ईंधन संग्रह न करें।
शु.	५	५५	१२	अ.	२५	२९	वृ.	[illegible]	[illegible]	कौ.	२४	३१	वज्र	मि.	६०	०	३१	४	५	४२	६	११	१८	२१	१५	६	शु.	[ठ संक्रान्तिपर्व १२-३३ बजे से सायं ६-१ बजे तक। स्नानकर गृह, वस्त्र दानदें।
श.	६	[illegible]	२९	भ.	२४	४९	व्या	५२	३	गर	२३	२९	ध्वांक्ष	मि.	३९	२३	३१	०	५	४२	६	१०	१९	२२	१६	७	श.	भद्रा २-४६ बजे से। त्रिपुष्करयोग २-४६बजे से, इसमें जो भी शुभाशुभ होगा वहµ
र.	७	४९	५०	कृ.	२३	७	हृ.	४७	७	भ.	२१	१५	धूम्र	वृ.	६०	०	३०	५६	५	४३	६	९	२०	२३	१७	८	र.	भद्रा १४-१३ बजे तक। त्रिपुष्करयोग १४-५८ तक। [µतीन बार पुनःपुनः होगा।
सो.	८	४६	२	रो.	२०	३५	व.	४०	५७	बा.	१७	५६	प्रवर्ध	वृ.	४८	५७	३०	५३	५	४३	६	८	२१	२४	१८	९	सो.	कालाष्टमी। पुष्य, हस्त, अनुराधा, अश्विनीनक्षत्र में किसी भी दिशाकी यात्रा कर$
मं.	९	४१	२४	मृ.	१७	१९	सि.	३४	९	तै.	१३	४३	रक्ष	मि.	६०	०	३०	४९	५	४३	६	७	२२	२५	१९	१०	मं.	व्यतीपात १९-२३ बजे से। [$ सकते हैं। चन्द्र सम्मुख हैं समझें। सफल रहेंगे।
बु.	१०	३६	७	आ.	१३	३४	व्य.	२६	५१	व.	८	४६	मुसल	मि.	५५	२९	३०	४६	५	४४	६	६	२३	२६	२०	११	बु.	व्यतीपात १६-२८ तक। भद्रा ९-१४ बजे से २०-११ तक। [†वर्षामध्यम होगी।
गु.	११	३०	२०	पुन	९	२७	व.	१९	१६	बव	३	१४	सिद्धि	क.	६०	०	३०	४२	५	४४	६	५	२४	२७	२१	१२	गु.	कमला, पद्मिनी, पुरुषोत्तमीएकादशीसबकी। आज से अधिकमासके शेष दानपर्व हैं।
शु.	१२	२४	१७	पु.	५	१३	प.	११	३१	तै.	२४	१७	उत्पात	क.	६०	०	३०	३९	५	४४	६	४	२५	२८	२२	१३	शु.	प्रदोषव्रत। उत्तराफाल्गुनीका सूर्य २-३१ बजे। स्त्री-स्त्रीयोग। रवि, चन्द्रनाड़ी।†
श.	१३	१८	९	आ.	[illegible]	[illegible]	शि.	[illegible]	[illegible]	व.	१८	९	मानस	क.	१	५	३०	३५	५	४५	६	३	२६	२९	२३	१४	श.	मासशिवरात्रि। भद्रा १३-१ से २३-४९ बजे तक। दमादको ३३ अपूपदान दें।
र.	१४	१२	१०	पू.	५३	५६	सा.	४८	४८	श.	१२	१०	छत्र	सिं.	६०	०	३०	३१	५	४५	६	२	२७	३०	२४	१५	र.	दर्शश्राद्ध। [× अधिक मास के व्रतों की पूर्णता। कन्यासंक्रांति १२-३३ बजे।ठ
सो.	३०	६	३१	उ.	५१	१९	शु.	४१	५४	ना.	६	३१	श्रीवत्स	सिं.	८	१७	३०	२७	५	४६	६	१	२८	३१	२५	१६	सो.	सोमवतीअमावास्या स्नान, दान, श्राद्धपर्व ८-२२ बजे तक। चन्द्रकूपयात्रा।×

२३ पंक्ति, ९ सितम्बर रविवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

२४ पंक्ति, १६ सितम्बर रविवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	५	१०	४	२	७	१
२२	४	१०	१८	७	२२	२१	२१
२५	२	५०	५७	११	५८	६	६
५७	२६	११	१९	१९	३४	३३	३३
५८ १८	३८ ४१	९२ २०	व.	७४ ९	५ ९	व.	व.

२३

मंगल, बुध ६ | ५ रवि, शुक्र | ४ | ३ शनि | ७ | राहु ८ | २ चन्द्र, केतु | ९ | गुरु ११ | १ | १० | १२

पक्षफल

विद्युत कष्ट चल ही रहा था, और भी बढ़ेगा। कल, कारखानों में मजदूर—मालिकों में झगडे होंगे। वर्षा के अच्छे योग है। सर्वत्र वर्षा होगी। किसान प्रसन्न होंगे। फसल संतोषजनक रहेगी। जनरंजक बिल आयेगा। शुभ होगा।

२४

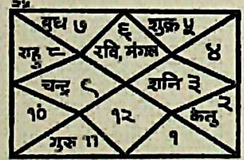
मंगल, बुध ६ | ५ रवि, चन्द्र, शुक्र | ४ | ३ शनि | ७ | राहु ८ | केतु २ | ९ | गुरु ११ | १ | १० | १२

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	५	१०	४	२	७	१
२९	८	२१	१८	१५	२३	२०	२०
१४	३३	१२	२	५१	३२	४४	४४
४४	५५	२	३८	५	५८	१६	१६
५८ ३२	३८ ५५	८४ ५	व.	७४ २३	४ ३२	व.	व.

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचारः	घ.	प.	दि. मा. घ.	दि. मा. प.	स्टै. टा. सू. उ.		स्टै. टा. सू. अ.		मु.	बं.	सां.	अं.	वा.	भाद्रपद शुक्लपक्षः संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७४, वंग १३८१. सौम्यगोलः। दक्षिणायनं। शरदृतुः। १७ सि. से १ अक्टूबर तक।
मं.	१	६	३६	ह.	४९	३२	शु.	३५	४०	बव	१	२३	सौम्य	कं.	६०	०	३०	२४	५	४६	५	५९	२९	१	२६	१७	मं.	चन्द्रदर्शन। विश्वकर्मापूजा। सामवेदियोंकी श्रावणी, अपराह्नमें। वंग आश्विन ६।
बु.	३	५३	२२	चि.	४८	४६	ब्र.	३०	६	तै.	२५	१०	कालदं	कं.	११	९	३०	२०	५	४६	५	५८	१	२	२७	१८	बु.	हरितालिकातीज। वराहजयन्ती १३-१५ वजे जन्मोत्सव। मन्वादि ३। सायान ८।
गु.	४	५०	४८	स्वा	४९	१०	ऐं.	२५	२४	व.	२	५	सुस्थिर	तु.	६०	०	३०	१७	५	४७	५	५७	२	३	२८	१९	गु.	वरदगणेशचतुर्थी। ढेलाचौथ। चौथचन्द्र। चन्द्रास्त २०-२१ वजे। चन्द्रदर्शननिषेध।
शु.	५	४९	२६	वि.	५०	४९	वै.	२१	३६	बव	२०	७	मातंग	तु.	३५	२४	३०	१३	५	४७	५	५६	३	४	२९	२०	शु.	ऋषि पंचमी। वैधृति १४-२५ तक। [वैनायकीचतुर्थी। भद्रा १४-३७ से २-६ तक।
श.	६	४९	१८	अनु	५३	४२	वि.	१८	५१	कौ.	१९	२२	अमृत	वृ.	६०	०	३०	९	५	४७	५	५५	४	५	३०	२१	श.	लोलार्कषष्ठी, सूर्यषष्ठी। कार्तिकेयदर्शन। ज्येष्ठागौरीआवाहन। [वैधृति १५-५७ से
र.	७	५०	३१	ज्ये.	५७	४५	प्री.	१७	३	गर.	१९	५५	काण	वृ.	५७	४५	३०	६	५	४८	५	५४	५	६	३१	२२	र.	ज्येष्ठागौरीपूजा। सन्तानसप्तमी। मुक्ताभरण सप्तमी। अपराजितापूजा। भद्रा २-० से
सो.	८	५२	५४	मू.	६०	०	आ.	१६	१४	भ.	२१	४३	लुम्ब	ध.	६०	०	३०	२	५	४८	५	५३	६	७	१	२३	सो.	श्री अन्नपूर्णाष्टमी। ज्येष्ठागौरी विसर्जन। १६ दिनों का महालक्ष्मी व्रतारंभ।
मं.	९	५६	२८	मू.	२	५४	सौ.	१६	१८	बा.	२४	४१	छत्र	ध.	६०	०	२९	५८	५	४९	५	५२	७	८	२	२४	मं.	[† भद्रा १४-३० वजे तक। सांपातिक आश्विन ७। [प्रचुर वर्षा होने का योग है।
बु.	१०	६०	०	पू.	८	५०	शो.	१७	६	तै.	२८	४१	श्रीवत्स	ध.	२५	२७	२९	५४	५	४९	५	५१	८	९	३	२५	बु.	[वामन जयंती, १२ वजे जन्मोत्सव करें। पंचक ३-४६ से। भद्रा ७-५२ वजे तक।
गु.	१०	०	५४	उ.	१५	१६	अ.	१८	२१	गर	०	५४	सौम्य	म.	६०	०	२९	५१	५	४९	५	५०	९	१०	४	२६	गु.	भद्रा १९-११ वजे से। हस्तकासूर्य १७-४१ वजे। स्त्री, पुरुषयोग। रवि, चन्द्रनाडी।
शु.	११	५	६	श्र.	२१	४६	सु.	१९	५२	भ.	५	६	धूम्र	म.	५४	५१	२९	४७	५	५०	५	४९	१०	११	५	२७	शु.	परिवर्तिनी, पंपा, दान एकादशी सबकी। श्रवण द्वादशी। विष्णुपरिवर्तनोत्सव।
श.	१२	११	९	ध.	२७	५५	धृ.	२१	१५	बा.	११	९	प्रवर्ध.	कुं.	६०	०	२९	४३	५	५०	५	४८	११	१२	६	२८	श.	शनिप्रदोषव्रत। पयोव्रतारम्भ, मासभर दूध व दूधके बने पदार्थ न खानाही पयोव्रत है।
र.	१३	१६	५	श.	३३	२३	शू.	२२	१५	तै.	१६	५	रक्ष	कुं.	६०	०	२९	४०	५	५१	५	४७	१२	१३	७	२९	र.	पंचक। शनिवार, सोमवार व मंगलवार की यात्रा में दिन में दिशाशूल नहीं होता।
सो.	१४	२०	२७	पू.	३७	५१	गं.	२४	३८	व.	२०	२७	मुसल	कुं.	२१	४४	२९	३६	५	५१	५	४६	१३	१४	८	३०	सो.	अनन्त चतुर्दशी। पौर्णिमाव्रत। इन्द्रपौर्णिमा। पंचक। भद्रा १४-२ से २-४३ वजेतक।
मं.	१५	२३	५१	उ.	४१	१३	वृ.	२२	९	बव	२३	५१	सिद्धि	मी.	६०	०	२९	३२	५	५१	५	४५	१४	१५	९	१	मं.	अक्टूबर १०। अथर्ववेदियोंकी श्रावणी। प्रौष्ठपदीश्राद्ध। पंचक। दक्षिणयात्रानकरें।

२५ पंक्ति, २३ सितम्बर रविवार के ५-२९ वजे के स्पष्टग्रह।

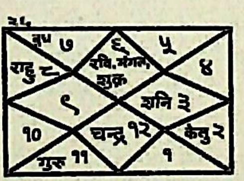
र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	६	१०	४	२	७	१
६	१३	०	१७	२४	२४	२०	२०
५	६	३३	१०	३२	३	२१	२१
४	५८	१४	५५	२३	१७	५९	५९
५८	३९	७४	३/२	७८	४	३/५	३/५
४८	८	३०	व.	३५	६	व.	व.



पक्षफल

फसल, वृक्षों में, और फल-फलों में कीड़े लगकर नुकसान होगा। बिजली कष्ट चलताही रहेगा। शत्रुके खुरापातका मुंहतोड़ जवाब दिया जायगा। और सर्वत्र प्राय: शांति रहेगी। छात्र प्रसन्न रहेंगे। उत्सवों की धूम रहेगी। हवा मंदीहोगी।

२६ पंक्ति, १ अक्टूबर सोमवार के ५-२९ वजे के स्पष्टग्रह।



र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	६	१०	५	२	७	१
१३	१८	९	१६	४	२४	१९	१९
५५	२०	३७	१७	२९	३२	५६	५६
४५	५६	४९	५१	४०	३१	३१	३१
५८	३९	५८	६/४	७४	३	३/५	३/५
५९	२४	११	व.	४६	१४	व.	व.

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचारः	घ.	प.	दि.मा. घ.	प.	स्टै.टा. सू.उ.		स्टै.टा. सू.अ.		मु.	चं.	सौ.	अं.	वा.
बु.	१	२६	८	रे.	४३	१६	ध्रु.	२०	५०	कौ.	२६	८	उत्पात	मी.	४३	१६	२९	२९	५	५२	५	४४	१५	१६	१०	२	बु.
गु.	२	२७	७	अ.	४४	५	व्या.	१८	२३	गर	२७	७	मानस	मे.	६०	०	२९	२५	५	५२	५	४३	१६	१७	११	३	गु.
शु.	३	२६	४७	भ.	४३	४३	ह.	१४	५७	भ.	२६	४७	मुद्गर	मे.	५८	२१	२९	२१	५	५३	५	४२	१७	१८	१२	४	शु.
श.	४	२५	१४	कृ.	४२	१४	व.	१०	३१	बा.	२५	१४	केतु	वृ.	६०	०	२९	१८	५	५३	५	४१	१८	१९	१३	५	श.
र.	५	२२	३१	रो.	३९	५८	सि.	[illegible]	[illegible]	तै.	२२	३१	धाता	वृ.	६०	०	२९	१४	५	५४	५	४०	१९	२०	१४	६	र.
सो.	६	१८	४९	मृ.	३६	५२	व्य.	५२	३१	व.	१८	४९	आनंद	वृ.	८	२५	२९	१०	५	५४	५	३९	२०	२१	१५	७	सो.
मं.	७	१४	१६	आ.	३३	१३	प.	४५	१४	बव	१४	१६	चर	मि.	६०	०	२९	७	५	५४	५	३८	२१	२२	१६	८	मं.
बु.	८	९	३	पुन	२९	११	शि.	३७	४२	कौ.	९	३	मद	मि.	१५	१२	२९	३	५	५५	५	३७	२२	२३	१७	९	बु.
गु.	९	[illegible]	[illegible]	पु.	२४	५७	सि.	२९	५६	गर	३	२२	शुभ	क.	६०	०	२८	५९	५	५५	५	३६	२३	२४	१८	१०	गु.
शु.	११	५१	२०	आ.	२०	४८	सा.	२२	३	बव	२४	२२	मृत्यु	क.	२०	४८	२८	५६	५	५६	५	३५	२४	२५	१९	११	शु.
श.	१२	४५	२३	म.	१६	५४	शु.	१४	१९	कौ.	१८	२२	पद्म	सिं	६०	०	२८	५२	५	५६	५	३४	२५	२६	२०	१२	श.
र.	१३	३९	४६	पू.	१३	२५	शु.	[illegible]	[illegible]	गर	१२	३५	छत्र	सिं	२७	४३	२८	४८	५	५७	५	३३	२६	२७	२१	१३	र.
सो.	१४	३४	४३	उ.	१०	२६	ऐं.	५३	१४	म.	७	१५	श्रीवत्स	कं.	६०	०	२८	४५	५	५७	५	३२	२७	२८	२२	१४	सो.
मं.	३०	३०	२२	ह.	८	३९	वै.	४७	२४	चतु	२	३३	सौम्य	कं.	३८	७	२८	४१	५	५८	५	३१	२८	२९	२३	१५	मं.

आश्विन कृष्णपक्षः संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७४, फ़सली १३८१। सौम्यगोलः, दक्षिणायनं, शरदृतुः २ से १५ अक्टूबर तक।

महालयारंभ। २से१५अक्टूबरतक महालया है। प्रतिपदाकाश्राद्ध। अशून्यशयनव्रत।λ
द्वितीयाका श्राद्ध। भद्रा ४-३९ बजे से। [λचन्द्रोदय १८-८ बजे। गांधी जयंती।H
संकष्टचतुर्थी, चन्द्रोदय १९-३१बजे। तृतीया व भरणीका श्राद्ध। भद्रा १६-३६तक।
चतुर्थीश्राद्ध। [+चतुर्दशीको मरे का श्राद्ध अमावास्याको होगा। भद्रा ८-५१तक।*
पञ्चमी श्राद्ध। व्यतीपात ८-०से ५-३५तक। [§ पितृविसर्जन। वैधृति२४-५६ तक।
षष्ठी श्राद्ध। भद्रा१३-२६से२४-३१तक। [¤वाहनव्रत। जिवतिया। जीवित्पुत्रिकाव्रत।
सप्तमी व अष्टमीका श्राद्ध। १६ दिनोंका महालक्ष्मीव्रतपूर्ण। कालाष्टमी। जीमूत-¤
मातृनवमी। अविधवानवमी। नवमीश्राद्ध। [†रवि, चन्द्रनाड़ी। उत्तम वर्षायोग है।
दशमी का श्राद्ध। भद्रा १८-४ से ४-५३ तक। चित्राकासूर्य ६-१ बजे, स्त्रीस्त्रीयोग।†
इंदिराएकादशी स्मार्तोंकी। एकादशीश्राद्ध। [×श्राद्धआजही होता है अन्यदिन नहीं।
इंदिराएकादशी वैष्णवोंकी। द्वादशीकाश्राद्ध। मघा श्राद्ध। संन्यासियोंका महालया×
प्रदोषव्रत। त्रयोदशीका श्राद्ध। भद्रा २१-५१ बजेसे। [µ दर्शश्राद्ध। सर्व पित्रमा।§
मासशिवरात्रि। अपघातोंसे मरे का ही श्राद्ध आज होगा और किसीका भी नहीं+
भौमवती अमावस्या का पर्व, आजके गंगास्नानसे ही हजारगोदानका फल होता है।µ

२७ पंक्ति, २९ अक्टूबर मंगलवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह। [* वैधृति ३-१५ बजेसे। १४ सोमवार को शुक्रास्त पूर्व में। [H पंचक २३-१० तक २८ पंक्ति, १५ अक्टूबर सोमवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	६	१०	५	२	७	७
२१	२३	१५	१५	१४	२४	१९	१९
४८	३७	४९	३३	२८	५५	३१	३१
३५	६	५२	२९	२८	३५	३	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व.	व.

२७
बुध ७ | ६ शनि, मंगल, शुक्र | ५ | ४ | राहु ८ | ३ चन्द्र, शनि | ९ | १२ | केतु २ | १० | गुरु ११ | १

पक्षफल

१३रविवार, १३अक्टूबर को बुध वक्री होगा। १४सोमवार, १४अक्टूबर को शुक्रका पूर्वमें अस्तहोगा। ३०मंगलवार, १५अक्टूबर, को बुधका पश्चिमास्त होगा। शांतिवार्ता सफल रहेगी। कामला रोग का व्यापक आक्रमण होगा। जनता में प्रसन्नता की लहर रहेगी।

२८
बुध ७ | ६ रवि, चन्द्र, मंगल, शुक्र | ५ | ४ | राहु ८ | शनि ३ | ९ | १२ | केतु २ | १० | गुरु ११ | १

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	६	१०	५	३	७	१
२७	२७	१७	१५	२१	१८	१९	१९
४४	३५	१	७	४८	५०	११	११
४८	४८	५९	२	२९	२०	५७	५७
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३०	४५	व.	व.	[illegible]	[illegible]	व.	व.

वा.	ति.	घ	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचार:			दि.मा. घ.	प.	स्टै.टा. सू.उ.		स्टै.टा. सू.अ.		सू.	बं.	सां.	अं.	वा.	आश्विन शुक्लपक्ष: संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७४, बंग १३८१। सौम्यगोल:, दक्षिणायनं, शरदर्तु:। १६ अक्टू.से ३१ अक्टूबर।
बु.	१	२६	५३	चि.	७	३४	वि.	४२	२३	बव	२६	५३	कालदं.	तु.	६०	०	२८	३८	५	५८	५	३०	२९	३०	२४	१६	बु.	चन्द्रदर्शन। मातामहश्राद्ध। शारदीयनवरात्रारम्भ। अखण्डदीप व कलशस्थापना। Σ
गु.	२	२४	२४	स्वा	८	१०	प्री.	३८	१५	कौ.	२४	२४	सुस्थिर	तु.	५३	४५	२८	३४	५	५९	५	२९	१	१	२५	१७	गु.	बंगकार्तिक ७। रमजान ९। [Σतुलासंक्रान्ति २३-१ बजे। संक्रान्ति पर्व १२से ÷
शु.	३	२३	८	वि.	८	५७	आ.	३५	५	गर	२३	८	मातंग	वृ.	६०	०	२८	३१	५	५९	५	२८	२	२	२६	१८	शु.	भद्रा ३-१४से। [÷१७-३०तक। स्नानकर तिल, गो, रसदानदें। γ। [†१८-२३ से। γ।
श.	४	२३	६	अनु	११	३२	सौ.	३२	५६	व.	२३	६	अमृत	वृ.	६०	०	२८	२७	६	०	५	२७	३	३	२७	१९	श.	वैनायकीचतुर्थी। भद्रा १५-१४तक। [μतक। भद्रा ७-१०तक। सांपातिक कार्तिक 6।
र.	५	२४	२५	ज्ये.	१५	२०	शो.	३१	४९	वा.	२४	२५	काण	वृ.	१५	२०	२८	२३	६	०	५	२७	४	४	२८	२०	र.	श्रीललितापञ्चमी १४ बजे पूजन। मूल नक्षत्र में सरस्वती आवाहन १२-८ के बाद।
सो.	६	२६	५४	मू.	२०	१४	अ.	३१	३४	तै.	२६	५४	लुम्ब	ध.	६०	०	२८	२०	६	१	५	२६	५	५	२९	२१	सो.	सरस्वतीपूजा। [ŋव्रत। दुर्गापूजा। निशापूजा। महागौरी पूजा, प्रदक्षिणा २०-६μ
मं.	७	३०	३४	पू.	२५	५९	सु.	३२	६	व.	३०	३४	मित्र	ध.	४२	३४	२८	१६	६	१	५	२५	६	६	३०	२२	मं.	सरस्वती को बलिदान। दुर्गा आवाहन। महागौरी प्रदक्षिणा व भद्रा १८-१५ से।
बु.	८	३५	७	उ.	३२	१९	धृ.	३३	९	म.	२	५१	वज्र	म.	६०	०	२८	१३	६	२	५	२४	७	७	१	२३	बु.	सरस्वतीविसर्जन १८-५८केबाद। अन्नपूर्णाष्टमी। महाष्टमी। घटाष्मान महालक्ष्मीŋ
गु.	९	४०	१५	श्र.	३८	५१	शू.	३४	३२	बा.	७	४१	केतु	म.	६०	०	२८	९	६	२	५	२३	८	८	२	२४	गु.	महानवमी। आयुधपूजा। दुर्गाको बलिदान। नवमीपक्षका पारणा। नवरात्रपूर्णता।
शु.	१०	४५	३४	ध.	४५	८	गं.	३५	५५	तै.	१२	५५	धाता	म.	१२	०	२८	६	६	३	५	२२	९	९	३	२५	शु.	विजयादशमी। दुर्गाविसर्जन। दशमीपक्षका पारणा। मन्वादि। मध्वाचार्य जयन्ती। †
श.	११	५०	३५	श.	५०	४७	वृ.	३७	०	व.	१८	४	आनंद	कुं.	६०	०	२८	२	६	४	५	२१	१०	१०	४	२६	श.	पापांकुशाएकादशीसबकी। γ। भरतमिलाप। पंचक। भद्रा १३-१८ से २-१८ तक। *
र.	१२	५४	५९	पू.	५५	२९	ध्रु.	३७	३२	बव	२२	४७	नर	कुं.	३९	१८	२७	५९	६	४	५	२१	११	११	५	२७	र.	पंचक। γ। [*स्वातीका सूर्य १५-४०बजे। स्त्री, पुरुष योग। रविचन्द्रनाड़ी। वर्षाहोगी।
सो.	१३	५८	२४	उ.	५९	८	व्या	३७	१३	कौ	२६	४२	गद	मी.	६०	०	२७	५६	६	५	५	२०	१२	१२	६	२८	सो.	सोमवपक्षप्रदोषव्रत। पंचक। [†श्रीबुद्धजयंती, सायं जन्मोत्सव। पंचक १०-५१ से।
मं.	१४	६०	०	रे.	६०	०	ह.	३६	४	गर	२९	३५	शुभ	मी.	६०	०	२७	५२	६	५	५	१९	१३	१३	७	२९	मं.	पंचक। [β६-४३ तक। वाल्मीकि जयन्ती। भद्रा ६-२४ से १८-३७ बजेतक है।
बु.	१४	०	४५	रे.	१	३२	व.	३३	५२	व.	०	४५	उत्पात	मी.	१	३२	२७	४९	६	६	५	१८	१४	१४	८	३०	बु.	पौर्णिमाव्रत। शरद् व कोजागरा पौर्णिमा। लक्ष्मीन्द्रपूजा। लक्ष्मीपूजा। पंचक β
गु.	१५	१	४८	अ.	२	३७	सि.	३०	३९	बव	१	४८	मानस	मे.	६०	०	२७	४६	६	७	५	१७	१५	१५	९	३१	गु.	आजसे मासभर काकडारती, आकाशदीपदान। तुलसीसे विष्णुपूजा। व्यतीपात*

२९ पंक्ति, २९ अक्टूबर मंगलवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह। [γ कार्तिकस्नानारम्भ आजसे भी। ३० पंक्ति, ३१ अक्टूबर बुधवार के ५-९ बजे के स्पष्टग्रह।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	६	१०	६	२	७	१
५	२	११	१४	१	२५	१८	१८
४१	५६	२५	४२	५९	१९	४६	४६
४०	८	४७	८	२३	४७	२९	२९
५९	४०	[illegible]	[illegible]	७५	०	[illegible]	[illegible]
४२	१३	व.	व.	१०	५५	व.	व.

राहु ८, ७ रवि, मंगल, बुध, शुक्र, ६, ९, ५, चन्द्र १०, ४, गुरु ११, १, शनि ३, १२, केतु २

पक्षफल

१४ बुधवार, ३० अक्टूबर को बुध का पूर्व में उदय होगा। १५ गुरुवार, ३१ अक्टूबर को शनि वक्री होगा। वर्षा के अच्छे योग हैं। खाद्य समस्या सुधरेगी। सस्ती का रुख दिखता है। हवाई जहाज, नौका, रेलवे, बस, ट्रक की दुर्घटना होगी।

राहु ८, ७ रवि, मंगल, बुध, शुक्र, ६, ९, ५, १०, ४, गुरु ११, चन्द्र १, शनि ३, १२, केतु २

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	६	१०	६	२	७	[illegible]
१३	८	२	१४	१२	२५	१८	१८
४०	१८	३३	२९	०	२३	२१	२१
२४	४७	८	५४	५६	५३	१	१
५९	४०	[illegible]	[illegible]	७५	०	[illegible]	[illegible]
५९	३०	व.	व.	१४	१	व.	व.

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचारः	घ.	प.	दि.मा. घ.	प.	स्टै.टा. सू.उ.		स्टै.टा. सू.अ.		मु.	बं.	सा.	अं.	वा.
शु.	१	२६	३७	भ.	२	३२	व्य.	२६	२९	कौ.	१	३१	मुद्गर	मे.	१७	१३	२७	४२	६	७	५	१६	१६	१६	१०	१	शु.
श.	३	१७	२१	कृ.	[illegible]	[illegible]	व.	२१	२६	व.	२८	४०	केतु	वृ.	६०	०	२७	३९	६	८	५	१५	१७	१७	११	२	श.
र.	४	१३	४२	मृ.	५६	१८	प.	१५	३४	बव	२५	३१	सौम्य	वृ.	२७	२७	२७	३६	६	८	५	१५	१८	१८	१२	३	र.
सो.	५	४९	१२	आ.	५२	४५	शि.	९	१	कौ.	२१	२७	कालदं.	मि.	६०	०	२७	३३	६	८	५	१४	१९	१९	१३	४	सो.
मं.	६	४४	३	पुन	४८	४६	सि.	६	३३	गर	१६	३८	सुस्थिर	मि.	३४	५३	२७	२९	६	१०	५	१४	२०	२०	१४	५	मं.
बु.	७	३८	२५	पु.	४४	३६	सा.	४६	३५	व.	११	१४	मातंग	क.	६०	०	२७	२६	६	१०	५	१३	२१	२१	१५	६	बु.
गु.	८	३२	३१	आ.	४०	२३	शु.	३८	३९	बा.	५	२८	अमृत	क.	४०	२३	२७	२३	६	११	५	१२	२२	२२	१६	७	गु.
शु.	९	२६	३२	म.	३६	२३	ब्र.	३०	५१	गर	२६	३२	काण	सिं.	६०	०	२७	२०	६	१२	५	१२	२३	२३	१७	८	शु.
श.	१०	२०	४०	पू.	३२	४७	ऐं.	२३	१२	व.	२०	४०	लुम्ब	सिं.	४७	२	२७	१७	६	१२	५	११	२४	२४	१८	९	श.
र.	११	१५	८	उ.	२९	४६	वै.	१५	५५	बा	१५	८	मित्र	कं.	६०	०	२७	१४	६	१३	५	११	२५	२५	१९	१०	र.
सो.	१२	१०	९	ह.	२७	३८	वि.	९	१	तै.	१०	९	वज्र	कं.	५६	५९	२७	११	६	१४	५	१०	२६	२६	२०	११	सो.
मं.	१३	५	५२	चि.	२६	१९	प्री.	[illegible]	[illegible]	व.	५	५२	ध्वांक्ष	तु.	६०	०	२७	८	६	१४	५	१०	२७	२७	२१	१२	मं.
बु.	१४	२	२९	स्वा.	२६	६	सौ.	५६	१४	श.	२	२९	धूम्र	तु.	६०	०	२७	६	६	१५	५	९	२८	२८	२२	१३	बु.
गु.	३०	२३	२९	वि.	२७	४	शो.	४१	४४	ना	०	७	प्रवर्ध	तु.	११	५०	२७	३	६	१६	५	९	२९	२९	२३	१४	गु.

कार्तिक कृष्णपक्षः संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७४, वंग १३८१. याम्यगोलः, दक्षिणायनं, शरतुः । १नवम्बरसे १४ नवम्बर तक ।

नवम्बर ११ । अशून्यशयनव्रत चन्द्रोदय १८-१६ बजे । व्यतीपात १६-४३ बजे तक ।
भद्रा १७-३६ से ५-४ बजे तक । [π सुखरात्रि । शेषरात्रि में दरिद्र निःसारण ।
संकष्टचतुर्थी, चन्द्रोदय २०-७ बजे । करवाचौथ । करकचतुर्थी । β२विशाखाका सूर्यμ
[θनारीनरकी आरती उतारें । मध्याह्न में द्यूतक्रीड़ा, अपराह्न में मार्गपाली बंधन†
भद्रा २३-४७ से । [*बहन का भाई के साथ स्नानका पर्व । भद्रा १०-४० तक । β२
कालाष्टमी । कराष्टमी । अहोईव्रत चन्द्रोदय २३-१३बजे । मथुराके राधाकुण्डमें*
[cदिन । सायंदीपमालिका । वाद उल्कादान । मध्यरात्रि में लीलाकाली जन्म । π
भद्रा ३-३८ बजेसे । [φ हनुमज्जन्म । भद्रा ८-३५से१९-५४तक । [†यष्टिकाकर्षण,y
भद्रा २-२९ बजेतक । वैधृति१५-२९ बजेसे । [δयमको दीपदानदें । [μ२२-५२बजे ।
रम्भाएकादशी सब की । गोवत्स द्वादशी । गोबारस । वैधृति १२-३५ बजे तक ।
सोमवपक्षप्रदोष । धनतेरस । धन्वन्तरिजयंती । गोत्रिरात्रिव्रतारंभ । यमपंचकारंभ । δ
मास शिवरात्रि । नरक चतुर्दशी । चन्द्रोदय ५-२० बजेसे सूर्योदयतक अभ्यङ्ग स्नानφ
दर्शश्राद्ध । दिवाली । महालक्ष्मीपूजा । केदार गौरीव्रत । कालीपूजा । महावीरनिर्वाणc
प्रातः अभ्यङ्ग स्नान, नूतनवस्त्रधारण । गोवर्धनपूजा । बलिराजपूजन । अन्नकूट । θ

३१ पंक्ति, ७ नवम्बर बुधवार के ५-२९ बजेके स्पष्टग्रह ।

[y सायं दीपमालिका ।

३२ पंक्ति, १४ नवम्बर बुधवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह ।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	६	१०	६	२	७	१
२०	१३	२	१४	१८	२५	१७	१७
४०	३	२४	२९	४७	२१	५८	५८
५७	१०	३९	५२	४७	३७	४४	४४
६०	४०	३९	४	७५	०	३	३
१३	४८	२३	व.	१८	१४ व.	व.	व.

३१
राहु ८
७ रवि, मंगल, बुध, शुक्र
६
९
५
१०
चन्द्र ४
गुरु ११
१
शनि ३
१२
केतु २

पक्षफल

४ रविवार, ३ नवम्बर गुरु व बुध दोनों मार्गी होंगे । उपद्रवीतत्व उपद्रव करने में अंशतः ही सफल होंगे । बिजली कष्ट और बढ़ेगा । बड़े, शांतिप्रिय लोगों के प्रयत्न से शांति बनी रहेगी, युद्ध का वातावरण गरम रहेगा । छात्रवर्ग प्रसन्न व शांत रहेगा ।

३२
राहु ८
७ रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र
६
९
५
१०
४
गुरु ११
१
शनि ३
१२
केतु २

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	६	१०	६	२	७	१
२७	१७	९	१४	२९	२५	१७	१७
४३	४९	१६	३९	३५	१३	३६	३६
९	३४	१६	४९	३	५१	२७	२७
६०	४१	७४	२	७५	१	३	३
२६	५	२०	१४	२१	३३	व.	व.

कार्तिक शुक्लपक्षः संवत् २०३१,शाके १८९६, ईसवीसन् १९७४ बंग १३८१। याम्यगोलः, दक्षिणायनं, हेमन्तर्तुः, १५ से २९ नवम्बर तक।

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचारः			दि. मा.		स्टै.टा. सू. उ.		स्टै.टा. सू. अ.		मू.	बं.	सां.	अं.	वा.	
शु.	२	५९	६	अनु	२९	२१	अ.	४७	१२	वा.	२९	३	रक्ष	वृ.	६०	०	२७	०	६	१७	५	९	३०	३०	२४	१५	शु.	चन्द्रदर्शन। भैय्यादूज। यम, भ्रातृद्वितीया। वृश्चिकसंक्रान्ति २०-४७ बजे। कार्तिक δ
श.	३	६०	०	ज्ये.	३२	५३	सु.	४५	४५	तै.	२९	५०	मुसल	वृ.	३२	५३	२६	५७	६	१७	५	८	१	१	२५	१६	श.	भगिनीतृतीया। बंग अग्रहायण ८। शव्वाल १०। मूल १९-२६ से, शान्ति करें।
र.	३	०	३३	मू.	३७	३०	धृ.	४५	६	गर	०	३३	सिद्धि	ध.	६०	०	२६	५५	६	१८	५	८	२	२	२६	१७	र.	वैनायकी ४। भद्रा १९-३से। [δपूजा। सं० पर्व १२से सूर्यास्ततक, स्नानकर दीपदान दें।
सो.	४	३	१०	पू.	४३	५	शू.	४५	२०	भ.	३	१०	उत्पात	ध.	५९	३७	२६	५२	६	१९	५	८	३	३	२७	१८	सो.	भद्रा ७-३५ बजे तक। यायीजयदयोग २३-३३ से, इसमें जन्मे बच्चे दत्तक जाते हैं।
मं.	५	६	५८	उ.	४९	१९	गं.	४६	१२	बा.	६	५८	मानस	म.	६०	०	२६	४९	६	१९	५	७	४	४	२८	१९	मं.	अनुराधाका सूर्य ३-३८ बजे। [β भोजन करें। पंचक। सांपातिक अग्रहायण ९
बु.	६	११	३८	श्र.	५५	५०	वृ.	४७	२७	तै.	११	३८	छत्र	म.	६०	०	२६	४७	६	२०	५	७	५	५	२९	२०	बु.	डालाछठ, प्रतिहारषष्ठी, सूर्यषष्ठी। स्थायी जयदयोग में जन्मे कुलश्रेष्ठ होते हैं।
गु.	७	१६	५२	ध.	६०	०	ध्रु.	४८	५०	व.	१६	५२	श्रीवत्स	म.	२९	१	२६	४४	६	२१	५	७	६	६	३०	२१	गु.	पंचक १७-५७ से। भद्रा १३-६से २-११ बजे तक। आज रातको दिशाशूल नहीं है।
शु.	८	२२	१७	ध.	२	१२	व्या	४९	५७	बव	२२	१७	धाता	कुं.	६०	०	२६	४२	६	२२	५	६	७	७	१	२२	शु.	श्रीअन्नपूर्णाष्टमी। गोपाष्टमी। आंवलाष्टमी। आंवलावृक्षका पूजन कर उसके नीचे
श.	९	२७	२१	श.	८	३	ह.	५०	३७	कौ.	२७	२१	आनंद	कुं.	५६	४८	२६	४०	६	२२	५	६	८	८	२	२३	श.	अक्षय्य नवमी। कुष्माण्ड नवमी। कृतयुगादि, श्राद्ध करें। जगद्धात्री पूजा। पंचक
र.	१०	३१	४७	पू.	१३	३	व.	५०	३५	गर	३१	४७	चर	मी.	६०	०	२६	३७	६	२३	५	६	९	९	३	२४	र.	पंचक। [* मन्वादि। भद्रा ७-४८ से २०-३० तक। व्यतीपात २-१६ से। पंचक
सो.	११	३५	१४	उ.	१६	५५	सि.	४९	३९	व.	३	३१	गद	मी.	६०	०	२६	३५	६	२४	५	६	१०	१०	४	२५	सो.	प्रबोधिनी एकादशी सबकी। देवोत्थान एकादशी। तुलसी विवाह। भीष्मपंचकारंभ
मं.	१२	३७	३३	रे.	१९	३८	व्य.	४७	४६	बव	६	२४	शुभ	मी.	१९	३८	२६	३३	६	२५	५	६	११	११	५	२६	मं.	चातुर्मास्य के व्रतोंकी समाप्ति। पंचक १४-१६ बजे तक। व्यतीपात १-३१ बजेतक।
बु.	१३	३८	३४	अ.	२१	५	व.	४४	५४	कौ.	८	३	मृत्यु	मे.	६०	०	२६	३१	६	२५	५	६	१२	१२	६	२७	बु.	प्रदोषव्रत। वैकुंठचतुर्दशी, अरुणोदयमें शिवकोतुलसीचढायें। बुधाश्विनीयोग अशुभ है।
गु.	१४	३८	१७	भ.	२१	१६	प.	४१	२	गर	८	२६	पद्म	मे.	३६	२	२६	२९	६	२६	५	६	१३	१३	७	२८	गु.	भद्रा २१-४५ बजे से। [π आकाशदीप दान समाप्ति। भद्रा ९-२८ बजे तक। A
शु.	१५	३६	४६	कृ.	२०	२०	शि.	३६	१३	भ.	७	३२	छत्र	वृ.	६०	०	२६	२७	६	२७	५	५	१४	१४	८	२९	शु.	पौर्णिमाव्रत। कार्तिकी, त्रिपुरी पौर्णिमा। नानक जयन्ती। पारसनाथ रथयात्रा

३३ पंक्ति, २२ नवम्बर गुरुवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह। [Aचन्द्रग्रहण ३४ पंक्ति, २९ नवम्बर गुरुवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	६	६	१०	७	२	७	१
५	२३	२०	१५	९	२४	१७	१७
४७	१९	३७	३	३७	५८	१०	१०
१९	१७	१५	१५	५६	२९	५९	५९
६०	४१	९१	४	७५	२/२३	३/११	३/११
३७	२३	४	१	२२	व.	व.	व.

३३

१० | ९ | ८ | मंगल, बुध ७ | ६ | रवि, शुक्र, राहु | ११ चन्द्र, गुरु | ५ | १२ | केतु २ | ४ | १ | शनि ३

पक्षफल

१३बुधवार, २७नवम्बर को मंगल का पूर्व में उदय होगा। शीतलहरियाँ आरंभ होंगी। कर्मचारी व मजदूरों का असंतोष अशांति पैदा करेगा। खाद्य पदार्थ-विपुल होने से जनता में धैर्य बना रहेगा। वर्षा व बादल के योग हैं। बिजली कष्ट चलता रहेगा।

३४

१० | ९ | ८ | मंगल ७ | ६ | रवि, बुध, शुक्र, राहु | गुरु ११ | ५ | १२ | चन्द्र, केतु २ | ४ | १ | शनि ३

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	६	७	१०	७	२	७	१
१२	२८	१	१५	१८	२४	१६	१६
५२	९	२४	३८	२५	३९	४८	४८
१	४९	७	५२	२८	४३	४२	४२
६०	४१	९३	५	७५	३/३	३/११	३/११
४५	४१	२७	१८	२२	व.	व.	व.

मार्गशीर्षकृष्णपक्षः संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७४, बंग १३८१। याम्यगोलः, दक्षिणायनं, हेमन्तर्तुः। ३० नवं. से १३ दि. तक।

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगा.	चन्द्रचारः			दि.मा. घ.	प.	स्टै.टा. सू.उ.		स्टै.टा. सू.अ.		मु.	चं.	सौ.	अं.	बा.	मार्गशीर्षकृष्णपक्षः
श.	१	३४	८	रो.	१८	२६	सि.	३०	३४	बा.	५	२७	श्रीवत्स	वृ.	४७	४	२६	२५	६	२८	५	५	१५	१५	९	३०	ना.	सिद्धियोग १४-० तक। दो बार शुभाशुभकारक द्विपुष्करयोग कल १२-४५ तक। A
र.	२	३०	३०	मृ.	१५	४२	सा.	२४	१५	तै.	२	१९	सौम्य	मि.	६०	०	२६	२३	६	२८	५	५	१६	१६	१०	१	र.	दिसम्बर १२। भद्रा रात्रि शेष के ५-४७ बजे से। [ρज्येष्ठा का सूर्य ५-५० बजे।
सो.	३	२६	३	आ.	१२	१०	शु.	१७	१७	भ.	२६	३	कालदंड	मि.	५४	२०	२६	२१	६	२९	५	६	१७	१७	११	२	सो.	संकष्टचतुर्थी, चन्द्रोदय २०-१ बजे। सौभाग्यसुंदरीव्रत। भद्रा १६-५४ बजे तक। ρ
मं.	४	२०	५६	पुन	८	२३	शु.	९	५०	बा.	२०	५६	सुस्थिर	क.	६०	०	२६	२०	६	३०	५	६	१८	१८	१२	३	मं.	सुस्थिरयोग ९-५१ बजेतक। प्रवर्धमानयोग ९-५१ से। नवीन कार्यारम्भ दिन।
बु.	५	१५	२१	पु.	४	१६	ब्र.	दं[illegible]	दं[illegible]	तै.	१५	२१	मातंग	क.	६०	०	२६	१८	६	३०	५	६	१९	१९	१३	४	बु.	वैधृति ४-११ बजे से। सर्वार्थसिद्धि योग ८-१२ बजे तक, नवीन कार्यारम्भ करें।
गु.	६	९	१०	आ.	दं[illegible]	दं[illegible]	वै.	४६	१९	व.	९	१०	अमृत	क.	०	१	२६	१७	६	३१	५	६	२०	२०	१४	५	गु.	वैधृति १-३ तक। भद्रा १०-१२से २१-५ तक। कल स्थायी जयदयोग ७-५९से है।
शु.	७	दं[illegible]	दं[illegible]	पू.	५२	१५	वि.	३८	३३	बव	३	२७	सिद्धि	सिं.	६०	०	२६	१५	६	३२	५	६	२१	२१	१५	६	शु.	कालाष्टमी। श्रीकालभैरवजयंती १२बजे जन्मोत्सव करकें ३ अर्घ्य दें। निशीथपूजा।
श.	८	५२	२५	उ.	४९	४	प्री.	३१	६	तै.	२५	८	उत्पात	सिं.	६	२७	२६	१४	६	३२	५	६	२२	२२	१६	७	श.	आठ वरों का श्रीभैरव को भोग लगाकर जयन्ती का पारणा ८ ब्राह्मणों के साथ करें।
र.	१०	४७	३२	ह.	४६	४५	आ.	२४	७	व.	१९	५९	मानस	कं.	६०	०	२६	१२	६	३३	५	६	२३	२३	१७	८	र.	भद्रा १४-२३से १-३५ बजेतक। सर्वार्थसिद्धियोगमें कार्यारम्भ १४-३३ बजेतक।
सो.	११	४३	२४	चि.	४५	१३	सौ.	१७	४७	बव	१५	२८	मुद्‌गर	कं.	१५	५	२६	११	६	३४	५	६	२४	२४	१८	९	सो.	उत्पन्नाएकादशी सब की। पंजाबकेशरी लाला लाजपतराय का ४६वां श्राद्ध दिन।
मं.	१२	४०	८	स्वा	४४	४५	शो.	१२	८	कौ.	११	४६	केतु	तु.	६०	०	२६	१०	६	३५	५	७	२५	२५	१९	१०	मं.	खीर खाकर दक्षिण की या पश्चिम की यात्रा कर सकते हैं, सफल होंगे।
बु.	१३	३७	५४	वि.	४५	३०	अ.	७	१९	गर	९	१	धाता	तु.	३०	१९	२६	९	६	३५	५	७	२६	२६	२०	११	बु.	प्रदोषव्रत। मल्लारि मार्तण्ड (मार्तण्डभैरव) नवरात्रारंभ। संतराज ज्ञानेश्वरकीθ
गु.	१४	३६	५४	अनु	४७	२९	सु.	३	२५	भ.	७	२४	आनंद	वृ.	६०	०	२६	८	६	३६	५	७	२७	२७	२१	१२	गु.	मास शिवरात्रि। भद्रा ९-३४ बजे तक। [θ पुण्य तिथि। भद्रा २१-४६ बजे से।
शु.	३०	३७	८	ज्ये.	५०	४५	धृ.	दं[illegible]	दं[illegible]	चतु	७	१	चर	वृ.	५०	४५	२६	७	६	३७	५	७	२८	२८	२२	१३	शु.	दर्शश्राद्ध। गौरीतपोव्रत। मूल २-५५ से। दर्श २१-२८तक जन्म होनेसे शान्ति करें।

[illegible] पंक्ति, ७ दिसम्बर शुक्रवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह। [Aकरिविन ३१ पंक्ति, १३ दिसम्बर गुरुवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	७	१०	२	२	७	१
१९	३	१२	१६	२७	२४	१६	१६
५७	२	१९	१३	१३	१६	२६	२६
४४	२४	३८	२१	३	२८	२५	२५
६०	४१	९३	६	७५	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५५	५८	४७	३०	२३	व.	व.	व.

१० ९ ८ रवि, मंगल, बुध, शुक्र, राहु ७ ६ गुरु ११ चन्द्र ५ १२ केतु २ ४ १ शनि ३

पक्षफल

२रविवार, १ दिसम्बर को बुधका पूर्वास्त होगा। ६ गुरुवार, ५ दिसम्बर को शुक्र का पश्चिम में उदय होगा। रेल, मिल कर्मचारी व मजदूर असंतुष्ट होकर तोड़-फोड़ या लूट हत्या करके यातायात तथा निर्माण में बाधा पहुचाने का प्रयास करेंगे। पाला पड़कर फसल को हानि पहूँचेगी।

१० शुक्र ९ ८ रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, राहु ७ ६ गुरु ११ ५ १२ केतु २ ४ १ शनि ३

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	७	१०	८	२	७	१
२७	७	२३	१७	६	२३	१६	१६
४	५७	१६	१६	०	४९	४	४
३०	४	४३	१७	४३	१६	८	८
६१	४२	९४	७	७५	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२	१६	५	४८	२३	व.	व.	व.

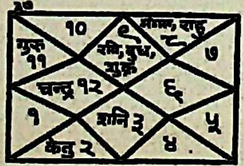
वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचारः	घ.	प.	दि.मा. घ.	प.	स्टै.टा. सू.उ.		स्टै.टा. सू.अ.		मु.	ई.	सौ.	अं.	वा.
श.	१	३८	४३	मू.	५५	९	गं.	५७	४३	किं.	७	५६	गद	ध.	६०	०	२६	६	६	३७	५	७	२९	२९	२३	१४	श.
र.	२	४१	२९	पू.	६०	०	वृ.	५७	३९	बा.	१०	६	शुभ	ध.	६०	०	२६	६	६	३८	५	८	३०	३०	२४	१५	र.
सो.	३	४५	२५	पू.	०	३४	ध्रु.	५८	१८	तै.	१३	२७	उत्पात	ध.	१७	६	२६	५	६	३८	५	८	१	१	२५	१६	सो.
मं.	४	५०	११	उ.	६	४२	व्या.	५९	२६	व.	१७	४८	मानस	म.	६०	०	२६	५	६	३९	५	९	२	२	२६	१७	मं.
बु.	५	५५	२९	श्र.	१३	१३	ह.	५९	४८	बव	२२	५०	छत्र	म.	४६	२८	२६	४	६	४०	५	९	३	३	२७	१८	बु.
गु.	६	६०	०	ध.	१९	४२	व.	६०	०	कौ	२८	१६	श्रीवत्स	कुं.	६०	०	२६	४	६	४०	५	१०	४	४	२८	१९	गु.
शु.	६	१	३	श.	२५	४२	व.	२	२	तै.	१	३	सौम्य.	कुं.	६०	०	२६	४	६	४१	५	१०	५	५	२९	२०	शु.
श.	७	५	५९	पू.	३१	१	सि.	२	५२	व.	५	५९	कालदं.	कुं.	१५	२६	२६	३	६	४१	५	११	६	६	३०	२१	श.
र.	८	१०	२३	उ.	३५	९	व्य.	३	६	बव	१०	२३	सुस्थिर	मी.	६०	०	२६	३	६	४२	५	११	७	७	१	२२	र.
सो.	९	१३	४५	रे.	३८	१४	व.	२	२७	कौ.	१३	४५	मातंग	मी.	३८	१४	२६	३	६	४२	५	१२	८	८	२	२३	सो.
मं.	१०	१६	३	अ.	३९	५८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	गर	१६	३	अमृत	मे.	६०	०	२६	३	६	४३	५	१२	९	९	३	२४	मं.
बु.	११	१६	५८	भ.	४०	३०	सि.	५४	५६	भ.	१६	५८	काण	मे.	५५	२०	२६	४	६	४३	५	१३	१०	१०	४	२५	बु.
गु.	१२	१६	३३	कृ.	३९	५०	सा.	५०	२६	बा.	१६	३३	लुम्ब	वृ.	६०	०	२६	४	६	४४	५	१३	११	११	५	२६	गु.
शु.	१३	१४	५७	रो.	३८	१०	शु.	४५	५	तै.	१४	५७	मित्र	वृ.	६०	०	२६	४	६	४४	५	१४	१२	१२	६	२७	शु.
श.	१४	१२	१५	मृ.	३५	३८	शु.	३८	५९	व.	१२	१५	वज्र	वृ.	६	५४	२६	५	६	४४	५	१४	१३	१३	७	२८	श.
र.	१५	८	३५	आ.	३२	२३	ब्र.	३२	१३	बव	८	३५	ध्वांक्ष.	मि.	६०	०	२६	५	६	४५	५	१५	१४	१४	८	२९	र.

मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७४, बंग १३८१। याम्यगोलः, दक्षिणायनं, हेमन्तर्तुः। १४ दिस.से २९ दिस.तक।

[ϑमूल का सूर्य व धनु संक्रान्ति, खरमासारंभ ८-३१बजे। सं० पर्व ८-३१ से १४-५५ϕ
चन्द्रदर्शन। सूर्यव्रतारम्भ। आजसे वर्षभर प्रत्येक रविवारको काम्य रविव्रत होता है।ϑ
वंग पौष ९। जीकअद ११। वादी, आक्रामक, मुद्दई, यायीजयदयोग ६-५२ बजे से।
वैनायकी चतुर्थी। रम्भाव्रत। जानकी विवाहोत्सव। भद्रा १३-४६ से २-४३ बजेतक।
नागदीपावली। पंचक १-१५ बजे से। दक्षिण व पूर्व दिशा की यात्रा १-१५ तक।
चंपाषष्ठी, मल्लारिमार्तण्ड नवरात्रपारणा। स्कंदषष्ठी, गुहषष्ठी, सुब्रह्मण्य षष्ठी येθ
पंचक। [θचारो भिन्नभिन्न षष्ठीयाँ हैं। पंचक। सर्वार्थसिद्धियोग १४-३३ बजे तक।
मित्र सप्तमी। पंचक। भद्रा ९-५ से २१-५७ बजे तक। व्यतीपात ७-५० बजे से।
श्रीअन्नपूर्णाष्टमी। चौथा पंचक। सांपातिक पौष १०। व्यतीपात ७-५६ तक।
पंचक व सर्वार्थसिद्धियोग २२-० तक। अश्विनीमें किसी भी दिशाकी यात्रा होगी।
गीताजयन्ती। भद्रा रात१-१९ से। ९-१९से २२-४२बजे तक कही की भी यात्रा करें।
मोक्षदाएकादशी सबकी। भद्रा १३-३० बजे तक। उच्चकाचन्द्र ४-४१ बजे से।
प्रदोषव्रत। अखण्डद्वादशी। गुरुवार व रोहिणी नक्षत्र का योग अशुभ होता है।
सर्वार्थसिद्धियोग २२-० बजे तक। [ϕबजे तक। स्नानकर वस्त्र, वाहन दान दें।
पौर्णिमाव्रत। श्रीदत्तजयन्ती। पिशाचमोचन यात्रा। विमलतीर्थयात्रा। मोटाभंटा।
गोपमाससमाप्ति। [*पूर्वाषाढाका सूर्य ९-२२बजे। भद्रा ११-३८से २२-५४ तक।

३७ पंक्ति, २२ दिसम्बर शनिवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

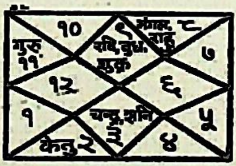
र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	७	८	१०	८	२	७	१
६	१४	७	१८	१७	२३	१५	१५
१४	१८	२७	१३	१९	९	३५	३५
१०	५१	४०	५९	२	४१	२९	२९
६१	४२	९५	८	७५	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६	२७	२२	४९	२१	व.	व.	व.



पक्षफल

अरब-संघ संघटित होकर, आक्रमण करने की भाषा बोलेगा, नेतालोग विश्वशान्ति के प्रयत्न में लगे रहेंगे। जागतिक अशांति का वातावरण दिख रहा है। पूर्व सागर के तूफान से जन-धन हानि होगी। भारी नुकसान होगा।

३८ पंक्ति, २९ दिसम्बर शनिवार के ५-९ बजे के स्पष्टग्रह।



र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	७	८	१०	८	२	७	१
१३	१९	१८	१९	२६	२२	१५	१५
२१	१८	४०	१८	६	३६	१३	१३
५८	१	९	३४	१६	२६	१२	१२
६१	४२	९७	९	७५	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८	५४	२	४५	१८	प.	व.	व.

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचारः			दि.मा. घ.	प.	स्टै.टा. सू.उ.		स्टै.टा. सू.अ.		मु.	पं.	सा.	अं.	वा.
सो.	१	५८	५६	पुन	२८	३९	ऐं.	२४	५५	कौ.	४	३	धूम्र	मि.	१४	३५	२६	६	६	४५	५	१५	१५	१५	९	३०	सो.
मं.	३	५३	२०	पु.	२४	३४	वै.	१७	१६	व.	२६	७	प्रवर्ध	क.	६०	०	२६	७	६	४५	५	१६	१६	१६	१०	३१	मं.
बु.	४	४७	३०	आ.	२०	२५	वि.	९	२६	बव	२०	२५	रक्ष	क.	२०	२५	२६	७	६	४६	५	१७	१७	१७	११	१	बु.
गु.	५	४१	३७	म.	१६	१७	प्री.	[illegible]	[illegible]	कौ.	१४	३४	मुसल	सिं	६०	०	२६	८	६	४६	५	१७	१८	१८	१२	२	गु.
शु.	६	३५	५२	पू.	१२	३१	सौ.	४६	८	गर	८	४५	सिद्धि	सिं	२६	३२	२६	९	६	४६	५	१८	१९	१९	१३	३	शु.
श.	७	३०	३२	उ.	८	३४	शो.	३८	५९	म.	९	१२	उत्पात	कं.	६०	०	२६	११	६	४७	५	१९	२०	२०	१४	४	श.
र.	८	२५	४२	ह.	६	४१	अ.	३२	२४	कौ.	२५	४२	मानस	कं.	३५	५०	२६	१२	६	४७	५	१९	२१	२१	१५	५	र.
सो.	९	२१	४१	चि.	४	५८	सु.	२६	३०	गर	२१	४१	मुद्गर	तु.	६०	०	२६	१३	६	४७	५	२०	२२	२२	१६	६	सो.
मं.	१०	१८	३०	स्वा	४	१६	धृ.	२१	२४	म.	१८	३०	केतु	तु.	४९	३८	२६	१४	६	४७	५	२१	२३	२३	१७	७	मं.
बु.	११	१६	२४	वि.	४	४५	शू.	१७	११	बा.	१६	२४	धाता	वृ.	६०	०	२६	१६	६	४७	५	२२	२४	२४	१८	८	बु.
गु.	१२	१५	३१	अनु	६	२८	गं.	१३	५६	तै.	१५	३१	आनंद	वृ.	६०	०	२६	१७	६	४७	५	२२	२५	२५	१९	९	गु.
शु.	१३	१५	५५	ज्ये	९	२८	वृ.	११	४२	व.	१५	५५	चर	वृ.	९	२८	२६	१९	६	४८	५	२३	२६	२६	२०	१०	शु.
श.	१४	१७	४०	मू.	१३	३५	ध्रु.	१०	३०	श.	१७	४०	गद	ध.	६०	०	२६	२०	६	४८	५	२४	२७	२७	२१	११	श.
र.	३०	२०	३१	पू.	१८	४९	व्या	१०	११	ना.	२०	३१	शुभ	ध.	३५	१९	२६	२२	६	४८	५	२४	२८	२८	२२	१२	र.

पौष कृष्णपक्षः संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७४-७५, बंग. १३८१। याम्यगोलः, दक्षिणायनं, हेमन्तर्तुः ३० दिस.से १२ जनवरी तक।

वैधृति १६-४२ बजे से। इसमासमें सूर्योदयके समय सूर्याराधन करके परमμ
वैधृति १३-४० बजे तक। भद्रा ७-१२से ४-५ बजे तक। [μ खिचड़ी, मक्खनϕ
संकष्ट चतुर्थी, चन्द्रोदय २१-१ बजे। जनवरी १, ईसवीसन् १९७५ का आरंभ।
[ϕ तिल, गुड़ खानेसे, गरीबों को कम्बल, इंधन, तिल, गुड़, उपानह दान देनेसेΓ
भद्रा २१-७ बजे से। सिद्धियोग ११-४७ बजे तक। [Γसंन्यासियों को भिक्षाλ
कालाष्टमी। भद्रा ८-४ तक। तीन बार शुभाशुभकारक त्रिपुष्कर योग १०-१३तक।
[λभोजन कराने से रोगशमन होता है। धन, धान्य बढ़ता है। आयुष्मान् संतानθ
भद्रा २-४९ बजे से। यायीजयप्रदयोग ८-४६ से १५-२७ तक। [θभी होती है।
भीष्मपितामह का निर्वाण दिन। पारसनाथ जयंती। भद्रा १४-११ बजे तक। §
सफलाएकादशी सबकी। [§ आज दरिद्रोंको गरम खिचड़ी खिलाना धनवर्धक है।
प्रदोषव्रत। सुरूपाद्वादशी। पौषशुक्ला ११, १२, १५ मकरसंक्रान्ति दिन इनβ
मास शिवरात्रि। भद्रा १३-१०से १-३२बजे तक। [β चारोंमें से किसी भी दिनγ
उत्तराषाढ़ाकासूर्य ९-५६ बजे। [γमाघस्नानारंभ करें। जहाँ भी स्नान करें।
दर्शश्राद्ध। बकुला अमावस्या। [।वहाँ गंगा, यमुना, त्रिवेणी संगमकी कल्पना करें

३९ पंक्ति, ५ जनवरी शनिवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	७	९	१०	९	२	७	१
२०	२४	०	२०	४	२२	१४	१४
२९	१९	४	२९	५३	१	५०	५०
५४	१०	०	२१	८	५९	५५	५५
६१ ९	४३ १२	९८ २४	१० ३०	७५ १५	५ व.	३ व.	३ व.

३९

गुरु ११ · बुध, शुक्र १० · रवि ९ · मंगल, राहु ८ · ७ · १२ · चन्द्र ६ · १ · शनि ३ · ५ · केतु २ · ४

ग्रहफल

१ सोमवार, ६ जनवरी को बुध का पश्चिमोदय होगा। शीतलहरियाँ नया रेकार्ड निर्माण करेंगी। वर्षा के भी योग है। खाद्य समस्या संतोष जनक रहेगी। युद्ध का वातावरण गरम रहेगा, कहीं युद्ध भी छिड़ सकता है। यज्ञ-याग चलेंगे।

४० पंक्ति, १२ जनवरी शनिवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

४०

गुरु ११ · बुध, शुक्र १० · रवि, चन्द्र ९ · मंगल, राहु ८ · ७ · १२ · ६ · १ · शनि ३ · ५ · केतु २ · ४

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	७	९	१०	९	२	७	१
२७	२९	११	२१	१३	२१	१४	१४
३८	२२	३०	४५	३९	२७	२८	२८
१	२१	३३	४६	४०	१८	३८	३८
६१ १०	४३ २८	९६ ३१	११ २१	७५ ११	५ व.	३ व.	३ व.

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचारः	घ.	प.	दि.	मा.	स्टै. टा. सू. उ.		स्टै. टा. सू. अ.		मु.	वं.	सौ.	अं.	वा.
सो.	१	२४	३४	उ.	२४	४९	ह.	१०	४०	बव	२४	३४	मृत्यु	म.	६०	०	२६	२४	६	४८	५	२५	२९	२९	२३	१३	सो.
मं.	२	२९	२४	श्र.	३१	१८	व.	११	४०	कौ.	२९	२४	लुम्ब	म.	६०	०	२६	२६	६	४८	५	२६	१	३०	२४	१४	मं.
बु.	३	३४	४५	ध.	३७	५१	सि.	१३	०	तै.	२	५	मित्र	म.	४	३५	२६	२८	६	४८	५	२७	२	१	२५	१५	बु.
गु.	४	४०	१०	श.	४४	०	व्य.	१४	२२	व	७	२८	वज्र	कुं.	६०	०	२६	३०	६	४८	५	२७	३	२	२६	१६	गु.
शु.	५	४५	१३	पू.	४९	२९	व.	१५	२५	बव	१२	४२	ध्वांक्ष	कुं.	३३	७	२६	३२	६	४८	५	२८	४	३	२७	१७	शु.
श.	६	४९	३४	उ.	५३	५७	प.	१५	५५	कौ.	१७	२४	धूम्र	मी.	६०	०	२६	३४	६	४७	५	२९	५	४	२८	१८	श.
र.	७	५२	५०	रे.	५७	१८	शि.	१५	३९	गर	२१	१२	प्रवर्ध.	मी.	५७	१८	२६	३६	६	४७	५	३०	६	५	२९	१९	र.
सो.	८	५५	३	अ.	५९	२१	सि.	१४	३१	भ.	२३	५७	रक्ष	मे.	६०	०	२६	३८	६	४७	५	३१	७	६	३०	२०	सो.
मं.	९	५५	५२	भ.	६०	०	सा.	१२	२१	बा.	२५	२८	मुसल	मे.	६०	०	२६	४१	६	४७	५	३१	८	७	१	२१	मं.
बु.	१०	५५	२१	भ.	०	९	शु.	९	१४	तै.	२५	३७	काण	मे.	१५	३	२६	४३	६	४७	५	३२	९	८	२	२२	बु.
गु.	११	५३	३८	कृ.	५९	४५	शु.	५	३	व.	२४	३०	लुम्ब	वृ.	६०	०	२६	४६	६	४७	५	३३	१०	९	३	२३	गु.
शु.	१२	५०	५०	रो.	५८	१६	ब्र.	[illegible]	[illegible]	बव	२२	१४	मित्र	वृ.	६०	०	२६	४८	६	४६	५	३४	११	१०	४	२४	शु.
श.	१३	४७	४	मृ.	५६	०	ऐ.	४७	४०	कौ.	१८	५७	वज्र	वृ.	२७	८	२६	५१	६	४६	५	३४	१२	११	५	२५	श.
र.	१४	४२	२७	आ.	५२	५३	वि.	४०	३४	गर	१४	४६	ध्वांक्ष	मि.	६०	०	२६	५३	६	४६	५	३५	१३	१२	६	२६	र.
सो.	१५	३७	१२	पुन.	४९	१६	प्री.	३३	३	भ.	९	५०	धूम्र	मि.	३५	३	२६	५६	६	४५	५	३६	१४	१३	७	२७	सो.

पौष शुक्लपक्षः

श्रीसंवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७५, बंग १३८१। याम्यगोलः, उत्तरायणं, शिशिरर्तुः। १३जनवरीसे२७जनवरीतक।

चन्द्रदर्शन।[¤स्नानकर खिचड़ी खिलौने, तिल, गुड़, वस्त्र, उपानह, सुपट, आभूषण*
जिलहिज्ज १२। मकरसंक्रान्ति, खरमाससमाप्ति, उत्तरायणारंभ, देवोंका दिनθ
बंगमाघ १०। पंचक ८-३८ से। व्यतीपात १२ से। [* सुवर्णादि व इंधन दानदें।§
वैनायकी चतुर्थी। पंचक। भद्रा ९-४७ से २२-५२ तक'। व्यतीपात १२-३३ तक
पंचक।[θव दैत्योंकी रात्रि आरंभ १६-१०बजे। संक्रान्तिपर्व १६-१०से १७-२६तक
पंचक। [µ वह ३ या १ दिन तो जरूर ही नित्यस्नानादिकर्म करके मौनपूर्वक
शाकंभरीनवरात्रारम्भ। गुरुगोविन्दसिंह जयंती। पंचक ५-४२ तक। भद्रा ३-५५से
अन्नपूर्णाष्टमी। भद्रा१६-२२तक। [†माघस्नान करे। [§माघस्नानारंभ आज भी
सांपातिकमाघ ११। माघस्नान नित्यकर्म होने से जो मासभर स्नान नहीं करेगा,
साम्यपक्षमी। मात्र बुधवार का ही दिशाशूल रात, दिन २४ घण्टा रहता है
पुत्रदा, वैकुंठ एकादशी सब की। मन्वादि ११। §। नेताजी सुभाष जन्म दिन।ץ
वैधृति ४-२६बजे से। §। [ץधपणफासूर्य १०-१९बजे। भद्रा १६-३५ से ४-१४तक
शनि व पक्षप्रदोषव्रत। पुत्रप्राप्त्यर्थं शनिप्रदोष किया करें। वैधृति १-५१ बजे तक
भारतीयगणराज्य का २५ वाँ महोत्सव। भद्रा २३-४५ बजे से। [ωबजे तक। §।
पौर्णिमाव्रत। पौषी पौर्णिमा। शाकंभरी देवी के नवरात्र का पारणा। भद्रा १०-४१ω

४१ पंक्ति, २० जनवरी रविवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	८	९	१०	९	२	७	१
५	५	२३	२३	२३	२०	१४	१४
४६	११	३९	१९	४०	४८	३	३
५८	७	३	१२	४१	४२	१०	१०
६१	४३	७९	१३	७५	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४	४६	६	६	४	व.	व.	व.

गुरु ११ | 10 | मंगल ९ | ८ राहु
१२ | रवि,बुध शुक्र | ७
चन्द्र १ | ४ | ६
केतु २ | शनि ३ | ५

फलाफल

उपद्रवी तत्व सक्रिय होंगे। आंदोलन के दिन है। पार्टीवाले अपने प्रचार में अवास्तव निंदा-स्तुति करके जन-मानस विकृत करेंगे। वर्षा के योग हैं। बादल रहेंगे। मंगल कार्यों की धूम रहेगी। यज्ञ-यागादि चलेंगे।

४२ पंक्ति, २७ जनवरी रविवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

बुध,गुरु,११ शुक्र | रवि १० | मंगल ९ | ८ राहु
१२ | १ | ७
केतु २ | ३ चन्द्र,शनि | ४ | ५ | ६

र.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	८	१०	१०	१०	२	७	१
१२	१०	०	२४	२	२०	१३	१३
५४	१८	५१	४५	२५	१६	४०	४०
५	१२	३८	३४	३७	५५	५३	५३
६०	४३	३१	१२	७४	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५८	५९	१७	३९	५४	व.	व.	व.

माघ कृष्णपक्षः

संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७५, बंग १३८१। याम्यगोलः, उत्तरायणं, शिशिरर्तुः। २८ जन. से ११ फ. तक।

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगा.	चन्द्रचारः	घ.	प.	दि.मा. घ.	प.	स्टै.टा. सू.उ. घं.	मि.	स्टै.टा. सू.अ. घं.	मि.	सू.	चं.	ला.	अं.	वा.
मं.	१	२१	३६	पू.	४५	१५	आ.	२५	१७	बा.	४	२५	प्रवर्ध	क.	६०	०	२६	५९	६	४५	५	३७	१५	१४	८	२८	मं.
बु.	२	२५	४३	आ.	४१	३	सौ.	१७	२२	गर	२५	४३	रक्ष	क.	४१	३	२७	१	६	४५	५	३७	१६	१५	९	२९	बु.
गु.	३	१९	५०	म.	३६	५५	शो.	९	३५	व.	११	५०	मुसल	सिं.	६०	०	२७	४	६	४५	५	३८	१७	१६	१०	३०	गु.
शु.	४	१४	७	पू.	३२	६	अ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४	७	सिद्धि	सिं.	४७	१५	२७	७	६	४४	५	३९	१८	१७	११	३१	शु.
श.	५	८	४६	उ.	२९	४१	सु.	४७	५४	तै.	८	४६	उत्पात	कं.	६०	०	२७	१०	६	४४	५	४०	१९	१८	१२	१	श.
र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ह.	२६	५७	धृ.	४१	४८	व.	३	५८	मानस	कं.	५६	२	२७	१३	६	४४	५	४०	२०	१९	१३	२	र.
सो.	८	५६	५४	चि.	२५	७	गं.	३६	२९	बा.	२८	२७	मुद्गर	तु.	६०	०	२७	१६	६	४३	५	४१	२१	२०	१४	३	सो.
मं.	९	५४	५२	स्वा.	२४	९	वृ.	३१	५९	तै.	२५	५३	केतु	तु.	६०	०	२७	१९	६	४३	५	४२	२२	२१	१५	४	मं.
बु.	१०	५४	३	वि.	२२	२२	ध्रु.	२८	२८	व.	२४	२८	धाता	वृ.	७	४९	२७	२२	६	४२	५	४२	२३	२२	१६	५	बु.
गु.	११	५४	३२	अनु.	२५	४९	व्या.	२६	०	बव	२४	१८	आनंद	वृ.	६०	०	२७	२५	६	४२	५	४३	२४	२३	१७	६	गु.
शु.	१२	५६	२४	ज्ये.	२८	३२	ह.	१७	३६	कौ.	२५	२८	चर	वृ.	२८	३२	२७	२८	६	४१	५	४४	२५	२४	१८	७	शु.
श.	१३	५९	२०	मू.	३२	२६	व.	२४	१	गर	२७	५२	गद	ध.	६०	०	२७	३२	६	४०	५	४५	२६	२५	१९	८	श.
र.	१४	६०	०	पू.	३७	२८	सि.	२४	१९	भ.	३१	२३	शुभ	ध.	५३	५६	२७	३५	६	४०	५	४५	२७	२६	२०	९	र.
सो.	१४	३	२५	उ.	४३	२०	व्य.	२५	१४	चतु.	३	२५	मृत्यु	मं.	६०	०	२७	३८	६	३९	५	४६	२८	२७	२१	१०	सो.
मं.	३०	८	१५	श्र.	४९	४९	व.	२६	३४	ना.	८	१५	लुम्ब	म.	६०	०	२७	४१	६	३८	५	४७	२९	२८	२२	११	मं.

आजसे २६ फरवरी तक माघमेला रहेगा। माघ मास में ताम्रपात्रमें तिल, भरकर* भद्रा ३-५२ बजे से [*सुवर्ण व दक्षिणाके साथ दान दें। माघस्नान का तीर्थराज¢ संकष्टचतुर्थी, चन्द्रोदय २०-२ बजे। श्रीगणेशजन्मदिन। षष्ठ्युष्मयात्रा। भद्रा^a [b स्नान, दान, दया का विशेष महत्व है। स्नानके पहले गंगाजी को अर्घ्य देकर† फरवरी २। [†स्नानकर पुनः दो अर्घ्य दें। भौमवती का विशेषयोग है। भौमवती^μ स्वामी विवेकानन्द जन्मदिन। भद्रा ८-१९ से १९-३२ बजे तक। [a१४-४१ तक। कालाष्टमी। [μके कारण आजके गंगास्नान से ही सहस्त्र गोदान का फल होगा। [γ६ स्नान इन छ प्रकारसे तिलका उपयोग करें। धनिष्ठा का सूर्य ११-४ बजे। भद्रा१६-२९से रात के ४-१९ तक। नीचराशिकाचन्द्र है। [¢प्रयाग में विशेष फलहै। षट्तिलाएकादशी सब की। आज १ खान, २ पान, ३ दान, ४ होम, ५ मर्दन व γ [θ अमावास्या। आजतीर्थराज प्रयागमें त्रिवेणीके पवित्रतम सीतासित संगममेंb शनि प्रदोषव्रत। पुत्रार्थी शनिप्रदोष किया करें। मेरु १३दशी जैनपर्व। भद्रा ६-२६ से। मासशिवरात्रि। नरकनिवारण चतुर्दशी। भद्रा १९-१३तक। व्यतीपात १६-२४से। सोमवती अमावास्याका महापर्व ८-२ बजे से। व्यतीपात १६-४५ बजे तक। भौमवती अमावस्याका महापर्व ९-५८ बजे तक। मौनी अमावास्या। यक्षुसावित्री θ

४३ पंक्ति, ३ फरवरी रविवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

४४ पंक्ति, ११ फरवरी सोमवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	८	१०	१०	१०	२	७	१
१८	१४		१	२६	९	१९	१३	१३
५९	४२	११	२	५४	५१	२१	२१
३६	५१		७	३२	४०	४९	४७	४७
६०	[illegible]	[illegible]	१३	७४	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	व.	[illegible]	[illegible]	व.	व.	व.

४३

बुध,गुरु ११ शुक्र | १२ | रवि १० | मंगल ९ | राहु ८ | १ | ७ | केतु २ | ४ | चन्द्र ६ | शनि ३ | ५

पक्षफल

३ गुरुवार, ३० जनवरी को बुध वक्री होगा।
६ रविवार, २ फरवरी को बुध का पश्चिमास्त होगा। सस्ती की लहर आयेगी। सर्वत्र वर्षा के योग हैं. ओलागिरेगा। शीतलहरियाँ चलेंगी मजदूर मालिक समस्या, झगड़े चलते रहेंगे।

४४

गुरु,शुक्र ११ | १२ | रवि,चन्द्र, बुध १० | मंगल ९ | राहु ८ | १ | ७ | केतु २ | ४ | ६ | शनि ३ | ५

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	८	९	१०	१०	२	७	१
२८	२१	२२	२८	२१	१९	१२	१२
६	२२	२०	२	६	१९	५३	५३
५५	१७	१९	२२	४०	२	८	८
६०	४४	[illegible]	१३	७४	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४३	३३	व.	४०	३१	व.	व.	व.

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचारः	घ.	प.	दि.मा. घ.	प.	स्टै.टा. सू.उ.		स्टै.टा. सू.अ.		मु.	पं.	सौ.	अं.	वा.
बु.	१	१३	३५	ध.	५६	२१	प.	२८	२	बव	१३	३५	मित्र	म.	२३	४	२७	४५	६	३७	५	४७	३०	२९	२३	१२	बु.
गु.	२	१८	५७	श.	६०	०	शि.	२९	१५	कौ.	१८	५७	वज्र	कुं.	६०	०	२७	४८	६	३७	५	४८	१	१	२४	१३	गु.
शु.	३	२३	५४	श.	२	४०	सि.	३०	१	गर	२३	५४	सौम्य	कुं.	५१	५४	२७	५१	६	३६	५	४९	२	२	२५	१४	शु.
श.	४	२८	८	पू.	८	१९	सा.	३०	५	म.	२८	८	कालदं.	मी.	६०	०	२७	५५	६	३५	५	४९	३	३	२६	१५	श.
र.	५	३१	१५	उ.	१३	०	शु.	२९	१५	बा.	३१	१५	सुस्थिर	मी.	६०	०	२७	५८	६	३५	५	५०	४	४	२७	१६	र.
सो.	६	३३	१८	रे.	१६	३९	शु.	२७	२९	कौ.	२	१७	मातंग	मी.	१६	३९	२८	२	६	३४	५	५०	५	५	२८	१७	सो.
मं.	७	३३	५८	अ.	१९	२	ब्र.	२४	४२	गर	३	३८	अमृत	मे.	६०	०	२८	५	६	३३	५	५१	६	६	२९	१८	मं.
बु.	८	३३	१९	भ.	२०	५	ऐं.	२०	५५	भ.	३	३८	काण	मे.	३५	३	२८	९	६	३२	५	५२	७	७	३०	१९	बु.
गु.	९	३१	२७	कृ.	१९	५७	वै.	१६	१२	बा.	२	२३	लुम्ब	वृ.	६०	०	२८	१२	६	३१	५	५२	८	८	१	२०	गु.
शु.	१०	२८	३३	रो.	१८	४३	वि.	१०	३८	गर	२८	३३	मित्र	वृ.	४७	४१	२८	१६	६	३१	५	५३	९	९	२	२१	शु.
श.	११	२४	४१	मृ.	१६	४०	प्री.	[illegible]	[illegible]	म.	२४	४१	वज्र	मि.	६०	०	२८	१९	६	३०	५	५३	१०	१०	३	२२	श.
र.	१२	१९	५८	आ.	१३	४३	सौ.	५	१०	बा.	१९	५८	ध्वांक्ष	मि.	५६	४	२८	२३	६	२९	५	५४	११	११	४	२३	र.
सो.	१३	१४	४१	पुन	१०	११	शो.	४२	३०	तै.	१४	४१	धूम्र	क.	६०	०	२८	२६	६	२८	५	५५	१२	१२	५	२४	सो.
मं.	१४	८	५७	पु.	६	१४	अ.	३४	४१	व.	८	५७	प्रवर्ध	क.	६०	०	२८	३०	६	२७	५	५५	१३	१३	६	२५	मं.
बु.	१५	[illegible]	[illegible]	आ.	[illegible]	[illegible]	सु.	३६	५२	बव	३	१	रक्ष	क.	२	५	२८	३४	६	२६	५	५६	१४	१४	७	२६	बु.

माघ शुक्लपक्षः संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवी सन् १९७५, वंग १३८१। याम्यगोलः, उत्तरायणं, शिशिरर्तुः। १२ फर. से २६ फर. तक।

चन्द्रदर्शन। कुंभसंक्रान्ति २-५१ बजे। पंचक १५-५१ बजे से। [ρपास दीपजलावें। संक्रान्ति पर्व सूर्योदय से १२ तक। स्नानकर गाय, जल, घास दानदें। मोहर्रम १ω पंचक। भद्रा रात्रिशेष ५ से। [ωहिजरीसन १३९५ शुरु। वंगफाल्गुन ११। पंचक। वैनायकी चतुर्थी। तिलचतुर्थी। कुन्द चतुर्थी। ढुण्ढिराज चतुर्थी। ये चार प्रकार की† वसंतपञ्चमी, श्रीपञ्चमी, सरस्वतीजन्मदिन, वाणीअर्चना। पंचक। [† भिन्नभिन्न+ रथसप्तमी। अचला७, आरोग्य७, विधान७। ये स्नान पर्व हैं। पंचक १३-१४ तक। β सूर्यरथोत्सव। भद्रा २०-८ बजे से। [π१४-५४ से। शतभिषाका सूर्य १६-५९ बजे। श्रीअन्नपूर्णाष्टमी। भीष्माष्टमी। भीष्मोद्देश्येन तर्पणकरें। भद्रा ७-५९ तक। वैधृति π महानन्दानवमी। सांपातिक फाल्गुन १२। वैधृति १३-० बजे तक [θ पंचक। भद्रा* भद्रा रात्रिशेष ५-१० से। [*१७-५० तक। शिवको प्रदोपकाल में कुन्दपुष्प चढ़ावें। जयाएकादशी सबकी। भद्रा १६-२२ तक। [β अरुणोदय में स्नान कर दूधमें चावलλ प्रदोषव्रत। भीष्मद्वादशी। तिलद्वादशी। शालिग्रामशिलादानदें। तिल तेलसे देवताको ρ [φभद्रा १०-२ से २०-५१ तक। स्थायीजययोग ८-५७ तक। [+फलदायक चतुर्थी हैं θ पौर्णिमाव्रत। माघीपौर्णिमा। कौशिकीस्नान। माघस्नानसमाप्ति। होलिकादण्डारोपणφ स्नानदानकी पौर्णिमा। [λपका के उफान पूर्व या उत्तर में गिरे तो शुभ होगा।

४५ पंक्ति, २० फरवरी बुधवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

४६ पंक्ति, २६ फरवरी बुधवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	८	९	१०	११	२	७	१
६	२७	१६	२९	१	१८	१२	१२
११	१९	३८	५२	१	५५	२७	२७
५७	३०	२७	२९	५६	४८	४०	४०
६०	४४	[illegible]	[illegible]	१३	७४	[illegible]	[illegible]
३०	४७	व.	५८	१९	व.	व.	व.

लग्न चक्र: शुक्र १२, मंगल,१० बुध, चन्द्र १, रवि ११ गुरु, केतु २, राहु ८, शनि ३, ४, ५, ६, ७, ९

पक्षफल

२ गुरुवार, १३ फरवरी को बुध का पूर्वोदय होगा। ८ बुधवार १९ फरवरी को रात के ८॥ बजे गुरु मीन राशि में प्रविष्ट होगा। ९ गुरुवार, २० फरवरी को बुधमार्गी होगा। खानोंमें दुर्घटनाओं की संभावना है। उत्पादन बढ़ेगा। आयोग के सहयोग से झगड़े मिटेंगे।

लग्न चक्र: गुरु,शुक्र १२, मंगल,बुध १०, १, रवि ११, केतु २, राहु ८, शनि ३, चन्द्र ४, ५, ६, ७, ९

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	९	९	११	११	२	७	१
१३	२	१७	१	९	१८	१२	१२
१४	३३	५०	३०	४०	४०	५	५
४८	३४	१४	५७	२६	३६	२३	२३
६०	४४	२७	१४	७३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१७	४६	५४	१२	४६	व.	व.	व.

फाल्गुन कृष्णपक्षः संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७५, बंग १३८१. याम्यगोलः, उत्तरायणं, शिशिरर्तुः। २७ फर० से १२ मार्च तक।

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचार:	घ.	प.	दि. मा. घ.	प.	सू. उ. घ.	प.	सू. अ. घ.	प.	सु.	सं.	जो.	अं.	वा.
गु.	२	५१	१८	पू.	५४	२	शू.	१९	१४	तै.	२४	११	मद	सिं.	६०	०	२८	३७	६	२५	५	५६	१५	१५	८	२७	गु.
शु.	३	४५	५६	उ.	५०	३२	शू.	११	५२	व.	१८	३७	शुभ	सिं.	८	१०	२८	४१	६	२५	५	५७	१६	१६	९	२८	शु.
श.	४	४१	७	ह.	४७	३८	गं.	५८	३६	बव	१३	१२	मृत्यु	कं.	६०	०	२८	४४	६	२४	५	५७	१७	१७	१०	१	श.
र.	५	३७	८	चि.	४५	३८	धृ.	५९	१३	कौ	९	८	पद्म	कं.	१६	१८	२८	४८	६	२३	५	५८	१८	१८	११	२	र.
सो.	६	३४	३	स्वा.	४४	२८	व्या.	४८	३५	गर	५	३६	छत्र	तु.	६०	०	२८	५२	६	२२	५	५९	१९	१९	१२	३	सो.
मं.	७	२२	२	वि.	४४	२५	ह.	४४	५९	भ.	३	३	श्रीवत्स	तु.	२९	२६	२८	५६	६	२१	५	५९	२०	२०	१३	४	मं.
बु.	८	२१	३२	अनु	४९	३३	व.	४२	१०	बा.	१	४७	सौम्य	वृ.	६०	०	२८	५९	६	२०	६	०	२१	२१	१४	५	बु.
गु.	९	३१	४५	ज्ये	४८	०	सि.	४०	२८	तै.	१	३९	कालदं.	वृ.	४८	०	२९	३	६	१९	६	०	२२	२२	१५	६	गु.
शु.	१०	३३	२७	मू.	५१	४२	व्य.	३९	४४	व.	२	४१	सुस्थिर	ध.	६०	०	२९	७	६	१८	६	१	२३	२३	१६	७	शु.
श.	११	३६	३४	पू.	५६	२९	व.	३९	५३	बव	५	६	मातंग	ध.	६०	०	२९	१०	६	१७	६	१	२४	२४	१७	८	श.
र.	१२	४०	४०	उ.	६०	०	प.	४७	४३	कौ.	८	३७	अमृत	म.	१२	५५	२९	१४	६	१६	६	२	२५	२५	१८	९	र.
सो.	१३	४५	३०	उ.	२	१३	शि.	४२	२	गर	१३	५	मृत्यु	म.	६०	०	२९	१८	६	१५	६	२	२६	२६	१९	१०	सो.
मं.	१४	५०	४५	श्र.	८	३३	सि.	४३	३३	भ.	१८	८	लुम्ब	कुं.	४१	५१	२९	२१	६	१४	६	३	२७	२७	२०	११	मं.
बु.	३०	५६	२	ध.	१५	९	सा.	४४	५७	चतु	२३	२४	मित्र	कुं.	६०	०	२९	२५	६	१३	६	३	२८	२८	२१	१२	बु.

महाशिवरात्रि पूजन विधि—सायंकालमें कालेतिलका अपटन लगायें स्नान[8] भद्रा १३-५२ से २४-४७ तक। [8 कर भस्म, रुद्राक्षधारणकर संध्या करें बादा संकष्टचतुर्थी चन्द्रोदय २०-२१बजे। मार्च ३। यायीजययोग २२-५१ से १-२७तक। [†१८ से २१ बजे की पूजा में प्रथम यामपूजा करिष्ये संकल्पकर "शिवायनमः"[μ] भद्रा १९-५९ से। यायीजययोग १९-५९से२४-९तक। [μइस नाम मंत्रसे, २१से२४ कालाष्टमी। भद्रा ७-३४ तक। पूर्वाभाद्रपदाका सूर्य २२-४९ बजे। [γ२४ बजेकी[A] जानकी जन्म। [Aपूजामें द्वितीययामपूजा करिष्ये संकल्प कर "शंकरायनमः"[B] दासनवमी। व्यतीपात २२-३०से [Bइस नाममन्त्रसे, २४से३की पूजामें महानिशि[C] व्यतीपात २२-१२ तक। भद्रा ७-२२से १९-४५ तक। [Cतृतीययामपूजां करिष्ये[E] विजयाएकादशी सबकी। त्रिपुष्करयोग ४-५३ बजे से। [Eसंकल्प कर "श्रीमहे-[M] [Mश्वरायनमः" नाममंत्रसे तथा ३ से ६ बजे की पूजामें चतुर्थयाम पूजां करिष्ये[M] सोम प्रदोष। भद्रा २४-२७ बजे तक। यायीजययोग ७-८ तक। [Mसंकल्प कर[D] महाशिवरात्रि। वैद्यनाथ जन्म दिन। चतुर्थयामपूजा। कृत्तिपासेश्वरदर्शन।[π] दर्शश्राद्ध। पारणा। पंचक। स्थायीजययोग ९-३९ तक। [πपंचक २२-५९से।[θ]

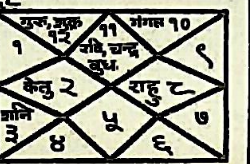
४७ पंक्ति, ५ मार्च मंगलवार के ५-२९ बजेके स्पष्टग्रह। [θभद्रा१३-२९तक। [D"श्रीरुद्रायननमः" नाम मन्त्रसे षोडशोपचारपूजा व प्रार्थनाकरें। ४८ पंक्ति, १२ मार्च मंगलवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	९	९	११	११	२	७	१
२०	७	२३	३	१८	१८	११	११
१६	४९	३	१०	१७	३०	४३	४३
१५	२	२१	५४	१७	३९	६	६
६०	४५	५८	१४	७३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७	११	१४	२२	३७	व.	व.	व.



पक्षफल

१३ सोमवार, १० मार्च को गुरु का पश्चिम में. अस्त होगा। ओला गिरने से फसल को नुकसान होगा। रेलवेयुनियन आन्दोलन हड़ताल की धमकी देगी। बिजली का अभाव चलता ही रहेगा। मंगल-कार्यों की धूम रहेगी।



र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	९	१०	११	११	२	७	१
२७	१३	०	४	२६	१८	११	११
१६	५	४२	५१	५१	२६	२०	२०
२६	४७	१७	५४	३४	३	४९	४९
५९	४५	७४	१४	७२	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५४	२०	६	२९	१६	व.	व.	व.

फाल्गुन शुक्लपक्षः संवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७५, बंग १३८१। याम्यगोलः। उत्तरायणं। वसंततुः। १३ मार्च से २७ मार्च तक

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचारः			दि.मा. घ.	प.	स्टै.टा. सू.उ.		स्टै.टा. सू.अ.		मु.	बं.	सौ.	अं.	वा.
गु.	१	६०	०	श.	२१	३३	शु.	४५	५५	किं.	२८	४७	वज्र	कुं.	६०	०	२९	२९	६	१२	६	४	२९	२९	२२	१३	गु.
शु.	१	०	५२	पू.	२७	२३	शु.	४६	१७	बव	०	५२	ध्वांक्ष	कुं.	१०	५५	२९	३३	६	११	६	४	३०	३०	२३	१४	शु.
श.	२	४५	८	उ.	३२	२१	ब्र.	४५	४४	कौ	४५	८	धूम्र	मी.	६०	०	२९	३६	६	१०	६	४	१	१	२४	१५	श.
र.	३	७	५६	रे.	३६	१२	ऐं.	४४	२२	गर	७	५६	प्रवर्ध	मी.	३६	१२	२९	४०	६	९	६	५	२	२	२५	१६	र.
सो.	४	९	४९	अ.	४०	२८	वै.	४३	२५	व.	९	४९	रक्ष	मे.	६०	०	२९	४४	६	८	६	५	३	३	२६	१७	सो.
मं.	५	१०	३९	भ.	४०	३७	वि.	३९	३०	बा.	१०	३९	मुसल	मे.	५५	२२	२९	४८	६	७	६	६	४	४	२७	१८	मं.
बु.	६	९	५८	कृ.	३९	३६	प्री.	३४	४१	तै.	९	५८	सिद्धि	वृ.	६०	०	२९	५१	६	६	६	६	५	५	२८	१९	बु.
गु.	७	८	२	रो.	३७	४२	आ.	२९	३	व.	८	२	उत्पात	वृ.	६०	०	२९	५५	६	५	६	७	६	६	२९	२०	गु.
शु.	८	५	२	मृ.	३४	५६	सौ.	२२	४३	बव	५	२	मानस	वृ.	६	१९	२९	५९	६	४	६	७	७	७	३०	२१	शु.
श.	९	[illegible]	[illegible]	आ.	३१	३१	शो.	१५	५०	कौ.	१	६	मुद्गर	मि.	६०	०	३०	३	६	३	६	८	८	८	१	२२	श.
र.	११	५०	५६	पुन	२७	३९	अ.	८	२९	ब.	२३	३७	केतु	मि.	१३	३७	३०	६	६	२	६	८	९	९	२	२३	र.
सो.	१२	४५	९	पु.	२२	३३	सु.	[illegible]	[illegible]	बव	१८	३	धाता	क.	६०	०	३०	१०	६	१	६	९	१०	१०	३	२४	सो.
मं.	१३	३९	८	आ.	१९	२४	धृ.	४५	२६	कौ.	१२	९	आनंद	क.	१९	२४	३०	१४	६	०	६	९	११	११	४	२५	मं.
बु.	१४	३३	५	म.	१५	२५	शू.	३७	५५	गर	६	६	चर	सिं.	६०	०	३०	१८	५	५८	६	९	१२	१२	५	२६	बु.
गु.	१५	२७	१४	पू.	११	५०	वृ.	३०	४४	व.	०	१०	गद	सिं.	२६	४	३०	२१	५	५७	६	१०	१३	१३	६	२७	गु.

पयोव्रतारम्भ। पंचक। होलिकाविधान :—लकड़ी व गोहराकी राशिमें एरण्डशाखा*
चन्द्रदर्शन। पंचक। मीनसंक्रान्ति, खरमासारम्भ २२-२७ बजे। [* रखकर ऊसपर†
रामकृष्णपरमहंसका जन्मदिन। पंचक। वंगचैत्र १२। सफर २। [θ२३-५ से।
वैनायकी चतुर्थी, कल्पादि। पंचक २०-३८ बजे तक। भद्रा २१-४२ से। वैधृतिθ
भद्रा १०-४तक। वैधृति २३-३०तक। [†वालकों व स्त्रियोंद्वारा बनाये गये गोबरके∧
उत्तराभाद्रपदाकासूर्य ७-६बजे। [∧आभूषण चढ़ायें। फीकेदीपसे होली जलाकरφ
सर्वार्थसिद्धियोग २१-५६ बजेतक। [φ"होलिकायैनमः" नामनन्त्र से ढुंढारासीकाμ
भद्रा ९-१८ से २०-४२ बजे तक। [μ होली में पूजनकर तीन प्रदक्षिणा करें।ε
श्रीअन्नपूर्णाष्टमी। सर्वार्थसिद्धियोग २०-२ बजे तक [εविनोद करें। [D२-२ तक।
सांपातिक चैत्र१। शकसंवत् १८९७ शुरु। [∈का शृंगारदर्शन करें। भद्रा १५-२ सेD
आमलकी, शृंगारी, रंगभरी, फुंज एकादशी सब की। रात्रिमें श्रीशिवपट्टितिः∈
[ε तक। भद्रा पुच्छमें। बाद भद्रामुख होगा जो वर्ज्य है। भद्रा १९-१२ से।
भौम व पक्षप्रदोष व्रत। [∧ चौषष्ठीदर्शन। चैतन्यमहाप्रभुजयंती। भद्रा ६-५तक।
होलिकादाह रातके २ बजकर ७ मिनट २१ सेकंड से ३बजकर १९ मिनट २१सेकंडतक
पौर्णिमाव्रत। फरिदिन। होली। होलिकाकी विभूति धारण करें। बोलायात्रा।∧

४९ पंक्ति, २१ मार्च गुरुवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

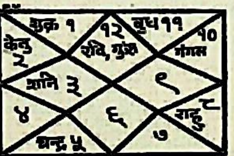
र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	९	१०	११	१२	२	७	१
६	१९	१२	७	७	१८	१०	१०
१४	५४	४९	२	४८	२८	५२	५२
२०	२७	३२	३३	५१	१३	१०	१०
५९	४५	८८	१४	७२	०	३ ११	३ ११
३५	२९	२७	३३	४३	४८	व.	व.

शुक्र १ | १२ रवि, गुरु | बुध ११ | मंगल १० | चन्द्र, केतु २ | शनि ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ९ | ८ राहु

पक्षफल

१ शुक्रवार, १४ मार्च को शनिमार्गी होगा। संयुक्त मोर्चा बनकर, आन्दोलन करना चाहेगा। फसल सतोषजनक होगी। सस्ते का रुख बना रहेगा। आनंद की हवा चलेगी। शांति रहेगी।

५० पंक्ति, २७ मार्च बुधवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।



र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	९	१०	११	१२	२	७	१
१२	२४	२२	८	१५	१८	१०	१०
११	२७	०	२९	३	३४	३३	३३
१५	३५	५८	४२	६	४०	४	४
५९	४५	९६	१४	७२	१	३ ११	३ ११
२३	३४	४३	३०	१७	२८	व.	व.

चैत्र कृष्णपक्षः श्रीसंवत् २०३१, शाके १८९६, ईसवीसन् १९७५ बंग १३८१। याम्यगोलः, उत्तरायणं, वसन्तर्तुः, २८ मार्च से ११ अप्रैल तक।

वा.	ति.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	चन्द्रचारः			दि. मा.		स्टैं.टा. सू. उ.		स्टैं.टा. सू. अ.		मु.	अं.	सौ.	अं.	वा.	चैत्र कृष्णपक्षः
शु.	१	२१	४७	उ.	८	४७	ध्रु.	२४	५	कौ.	२१	४७	शुभ	कुं.	६०	०	३०	२५	५	५६	६	१०	१४	१४	७	२८	शु.	वसन्तोत्सव, आज अभ्यङ्गस्नान न करने से पापलगेगा। आम्रमंजरी व चंदन
श.	२	१६	५१	ह.	६	३६	व्या.	१८	५	गर	१६	५१	मृत्यु	कुं.	३६	०	३०	२९	५	५५	६	११	१५	१५	८	२९	श.	संततुकारामकीपुण्यतिथि। भद्रा २३-५० बजे से। [प्राशनकरें। स्वपच स्पर्श करें।
र.	३	१२	४४	चि.	५	२३	ह.	१२	५५	व.	१२	४४	पद्म	तु.	६०	०	३०	३३	५	५४	६	११	१६	१६	९	३०	र.	संकष्टचतुर्थी, चन्द्रोदय २०-३६ बजे। भद्रा ११-० बजे तक। यायीजययोग ८-३[
सो.	४	९	३१	स्वा	५	५	व.	८	३१	बा.	९	३१	छत्र	तु.	५०	४६	३०	३६	५	५३	६	१२	१७	१७	१०	३१	सो.	पुनः रेवतीका सूर्य १२-१२ बजे। [१ से ११ बजे तक। कल्पादि, श्राद्ध करें
मं.	५	७	१८	वि.	५	५९	सि.	५	७	तै.	७	१८	श्रीवत्स	वृ.	६०	०	३०	४०	५	५२	६	१२	१८	१८	११	१	मं.	रङ्गपञ्चमी। गुलालका खेलखेलें। अप्रैल ४। एकनाथ महाराजकी पुण्यतिथि
बु.	६	६	१९	अनु	८	७	व्य.	२	४३	व.	६	१९	सौम्य	वृ.	६०	०	३०	४४	५	५१	६	१२	१९	१९	१२	२	बु.	भद्रा ८-२३ से २०-३४ तक। व्यतीपात ६-५६ तक। सर्वार्थसिद्धियोग ६-५६ से
गु.	७	६	३७	ज्ये.	११	३५	व.	१	२२	बव	६	३७	कालदं.	वृ.	११	३५	३०	४७	५	५०	६	१३	२०	२०	१३	३	गु.	कालाष्टमी। [नाथषष्ठी। व्यतीपात ७-५५ बजे से। [८-२३ बजे तक
शु.	८	८	१७	मू.	१६	८	प.	०	५२	कौ.	८	१७	सुस्थिर	ध.	६०	०	३०	५१	५	४९	६	१३	२१	२१	१४	४	शु.	पहिलीशीतलाष्टमी, ८-४८ बजे तक शीतलामाताका पूजन करके भोजन भी हो जाये।
श.	९	११	१	पू.	२१	४१	शि.	१	१७	गर	११	१	मातंग	ध.	३८	१४	३०	५५	५	४८	६	१४	२२	२२	१५	५	श.	भद्रा २२-५९ बजे से। शनिवार को नवमी तिथि निर्दोष सिद्धा तिथि हो जाती है।
र.	१०	१४	५५	उ.	२७	५३	सि.	२	१९	व.	१४	५५	अमृत	म.	६०	०	३०	५८	५	४७	६	१४	२३	२३	१६	६	र.	भद्रा ११-४५ बजे तक। बाद अमृत सिद्धियोग ११-४५ से १६-५६ बजे तक।
सो.	११	१९	३५	श्र.	३४	२९	सा.	३	४७	बा.	१९	३५	सिद्धि	म.	६०	०	३१	२	५	४६	६	१५	२४	२४	१७	७	सो.	पापमोचनी, पापांकुशा एकादशी सबकी। सर्वार्थ सिद्धियोग १९-३४ बजे तक।
मं.	१२	२४	४४	ध.	४०	५८	शु.	५	२४	तै.	२४	४४	उत्पात	म.	७	४४	३१	५	५	४५	६	१५	२५	२५	१८	८	मं.	भौम व पक्ष प्रदोषव्रत। ऋणमोचनार्थ भौमप्रदोषक्रिया करें। पंचक ८-५१ बजे से।
बु.	१३	२९	५६	श.	४६	५६	शु.	६	४८	व.	२९	५६	मानस	कुं.	६०	०	३१	९	५	४४	६	१६	२६	२६	१९	९	बु.	मासशिवरात्रि। केदारकुण्डपर काम महोत्सव। वारुणी पर्व १७-२४ बजे तक।
गु.	१४	३४	४४	पू.	५२	८	ब्र.	७	४५	श.	२	२०	मुद्गर	कुं.	३५	५०	३१	१३	५	४३	६	१६	२७	२७	२०	१०	गु.	पंचक। भद्रा ६-३९ तक। [पंचक। भद्रा १७-४२ से। सर्वार्थसिद्धियोग १७-४२ तक
शु.	३०	३८	४९	उ.	५६	१३	ऐं.	८	१	चतु	६	४७	केतु	मी.	६०	०	३१	१६	५	४२	६	१७	२८	२८	२१	११	शु.	दर्शश्राद्ध। मन्वादि ३०। पंचक। वैधृति ८-५४ बजे से। शुभंभवतु। वर्षपूर्णता। स्वस्त्यस्तु

५१ पंक्ति, ४ अप्रैल गुरुवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

५२ पंक्ति, ११ अप्रैल गुरुवार के ५-२९ बजे के स्पष्टग्रह।

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१०	११	११	१२	२	७	१
२०	०	५	१०	२४	१८	१०	१०
५	३२	३३	११	४०	४९	७	७
१६	३४	१३	२	२२	२१	३६	३६
५९	४५	११७	१४	७१	२	३/११	३/११
७	४०	५०	२६	४२	१९	व.	व.



पक्षफल

३ सोमवार, ३१ मार्च को बुधका पूर्व में अस्त होगा। १३ बुधवार, ९ अप्रैल को गुरु का पूर्व में उदय होगा। फसल परिपूर्ण रहेगी। संयुक्तमोर्चे में मतभेद होगा। बिजली कष्ट चलता ही रहेगा। आनंद की गीत, मधुर हवासे जनता सुखी होगी। शुभम् भवतु।



र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१०	११	११	१	२	७	१
२६	५	१८	१२	३	१९	९	९
५८	५२	३८	५	०	७	४५	४५
२६	२४	२०	५६	३४	४०	१९	१९
५८	४५	११७	१४	७१	३	३/११	३/११
५४	४९	५५	१६	८	२	व.	व.

बैद्यनाथ दवाओं की बिक्री नियम

१. एक ही मूल्य में बैद्यनाथ दवाएं भारतवर्ष भर में मिलती हैं। केवल स्थानीय कर (जैसे सेल्स टैक्स आदि) और देने होते हैं। स्थानीय करों के अलावा यदि अधिक मूल्य कोई विक्रेता ले, तो कार्यालय को सप्रमाण लिखना चाहिये; क्योंकि हमारी सभी दवाएँ हमारे पंचांग या सूचीपत्र में लिखे मूल्य पर ही बिक्री करने की उनकी पाबन्दी है।

२. अधिकृत विक्रेता के अतिरिक्त हम और किसी को भी कमीशन नहीं देते, चाहे वह कितनी ही अधिक दवा एक साथ क्यों न खरीदे।

३. बैद्यनाथ दवाओं के विक्रेता के पास कोई दवा न मिले और डाक द्वारा मँगानी पड़े, तो डाक-खर्च और पैकिंग खर्च मँगानेवाले को देना होता है।

४. एक सेर से अधिक वजन की दवा मँगानेवाले को दो रु० पेशगी भेजे बिना दवा नहीं भेजी जाती। एक सेर से अधिक वजन की दवा हो तो पेशगी रकम के साथ पास के रेलवे स्टेशन का नाम भी लिखें।

५. कम वजनवाली दवाइयाँ (रसायन-भस्म आदि) कीमत में अधिक होने पर भी बिना पेशगी भेज दी जाती हैं।

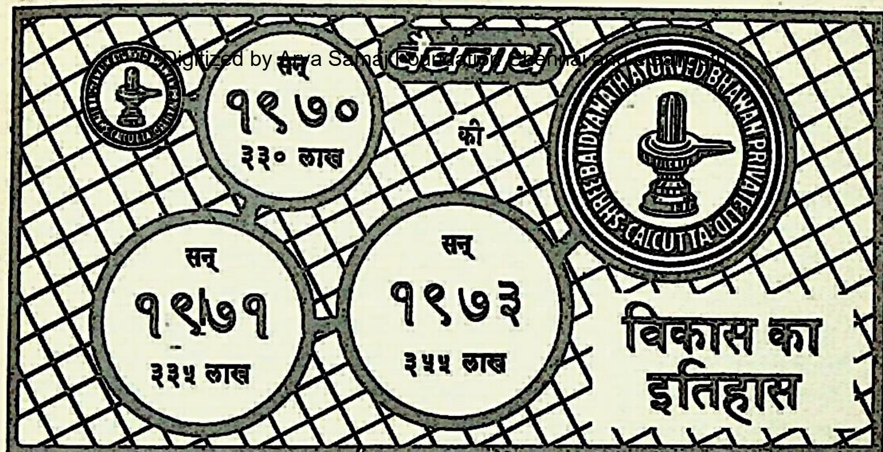
६. बाहर से दवा मँगानेवाले ग्राहकों को वी० पी० पार्सल से दवा भेजी जाती है।

७. कार्यालय से पूरी सावधानी के साथ देख-भाल कर और पेटी में बन्द करके दवा भेजी जाती है। अतः रास्ते की किसी तरह के नुकसान के लिये कार्यालय जिम्मेदार नहीं है।

८. रेलवे से माल की डिलेवरी लेते समय पार्सल को भलीभाँति देख लें और तनिक भी शंका होने पर अपने माल की डिलेवरी खुली लें। यदि माल कम निकले तो हर्जाने के लिये रेलवे से लिखा-पढ़ी करें।

अनन्त सालसा

खून की खराबी; खाज-खुजली
फोड़ा-फुन्सी और एक्जिमा आदि सभी चर्म रोगों में
लाभदायक



श्री बैद्यनाथआयुर्वेद भवन प्रा० लि० जो आज एशिया का सबसे बड़ा आयुर्वेदीय प्रतिष्ठान माना जाता है, उसकी उन्नति और व्यापक लोकप्रियता का इतिहास इस उक्ति का प्रमाण है कि पवित्र उद्देश्य और उत्कृष्ट लक्ष्य पर ध्यान रखकर व्यवस्थित परिश्रम और पूर्ण निष्ठा के साथ यदि कोई काम किया जाय, तो उसमें निश्चित और महत्वपूर्ण सफलता मिलती है।

आज से ५६ वर्ष पूर्व जिस बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन का आरम्भ एक लघु औषधालय के रूप में बैद्यनाथधाम, देवघर, (बिहार) में किया गया था, आज उसी के, देश के पाँच प्रमुख नगरों— कलकत्ता, पटना, झाँसी, नागपुर और नैनी (इलाहाबाद) में पाँच बड़े-बड़े औषध-निर्माण-केन्द्र (कारखाने) हैं, और देश के कोने-कोने में फैली हुई ५०० से अधिक विशिष्ट एजेन्सियाँ (जिनमें केवल बैद्यनाथ-दवाएँ ही बिकती हैं) और ५० हजार से अधिक एजेन्सियाँ हैं।

बैद्यनाथ प्रचलित अनुभूत औषधियों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में आयुर्वेद की समस्त श्रेष्ठ औषधें बैद्यनाथ-निर्माण-केन्द्रों में बनती हैं। कीमती रस-रसायनों के निर्माण में इस संस्थान को विशिष्टता एवं गौरव प्राप्त है। बैद्यनाथ-औषधि का निर्माण पूर्ण शास्त्रोक्त रीति से इस युग के धन्वन्तरि, महान् विद्वान् पं० स्व० यादवजी त्रिकमजी आचार्य द्वारा निर्देशित योगों और विधान से अनुभवी शास्त्रज्ञ आयुर्वेदाचार्यों तथा ट्रेण्ड फार्मासिस्टों की देख-रेख में बड़ी दक्षता और स्वच्छतापूर्वक सम्पन्न होता है। भवन के संचालक (Directors) आयुर्वेदीय औषधि-निर्माण-कार्य के सुदक्ष ज्ञाता हैं और निर्माण-विभाग पर उनका सदैव नियंत्रण रहता है। मूल द्रव्यों की शुद्धता एवं गुणकारिता की भरपूर परीक्षा के पश्चात् ही बैद्यनाथ-दवाएँ बैद्यनाथ की साधन-सम्पन्न निर्माणशालाओं में सुयोग्य रसायनशास्त्रियों और केमिस्टों द्वारा तैयार की जाती हैं।

दवाओं की पूर्ण गुणकारिता उनके मूल द्रव्यों की शुद्धता पर निर्भर करती है। उत्तम मूल द्रव्य का न मिलना आजकल औषधि-निर्माताओं के लिए सबसे बड़ी कठिनाई है। वंशलोचन, अम्बर, केशर, कस्तूरी, गोरोचन आदि कीमती द्रव्य प्रायः नकली ही मिलते हैं। ऐसी कठिन स्थिति में बैद्यनाथ-औषधें अपना उच्च स्थान बनाये रखने में इसलिए सफल हुई हैं कि मूल द्रव्यों को उनके प्राप्ति-स्थानों से ही विश्वस्त और ताजी अवस्था में संग्रह करने का उसका अपना विशेष प्रबन्ध है। उत्तम औषधि-निर्माण के कार्य में भवन ने अपना कितना स्वतन्त्र और ऊँचा स्थान बनाया है और आयुर्वेद-विकास के उद्देश्य की पूर्ति में वह कितना क्रियाशील रहा है, यह निम्नलिखित उद्गारों से स्पष्ट होता है :—

"श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्रा० लि० केवल एक व्यापारिक कारखाना नहीं है, इसलिए यह सिर्फ धनोपार्जन के लिए नफा कमाने की स्कीम नहीं बनाता। इसका उद्देश्य है देश में आयुर्वेद की शिक्षा और आयुर्वेदीय औषधियों के प्रचार को प्रोत्साहन देकर जनता का कल्याण करना। मेरे विचार से यह देश की एक प्रमुख संस्था है।"

—बिहार के भूतपूर्व गवर्नर स्व० श्रीमाधव श्रीहरि अणे

" आयुर्वेद के शास्त्रीय और चिकित्सकीय अनुसंधान के जो कार्य वैद्यनाथ-संस्थान ने किये हैं, उनका अनुकरण अन्य आयुर्वेदीय संस्थाओं को भी करना चाहिए। वैद्यनाथ-औषधि-निर्माण-कार्य देखकर मैं कह सकता हूँ कि यदि निर्माण में वैसी ही सावधानी और निष्ठा का ध्यान अन्य लोग भी रखें, तो आयुर्वेद अपनी लोकप्रियता पुनः प्राप्त कर सकता है।"

—भू० पू० केन्द्रीय स्वास्थ्य-मन्त्री माननीय श्री डी० पी० करमरकर

वैद्यनाथ की आयुर्वेद-सेवाएँ

भवन का यह निश्चित और दृढ़ विश्वास है कि आयुर्वेद ही एकमात्र ऐसा जीवन-विज्ञान है, जिसके नियमों पर चलकर मानव-जाति बिना दवाओं के नीरोग रह सकती है और केवल आयुर्वेद की औषधें ही ऐसी हैं, जो जनता को नीरोग रखते हुए उसे हृष्ट-पुष्ट बना सकती हैं। इसलिए जहाँ भवन यह ध्यान रखता है कि वैद्यनाथ-औषधें इतनी प्रामाणिक, निरापद और लाभकारी हों कि उनके उपयोग द्वारा जनता में आयुर्वेद के प्रति विश्वास बढ़े, वहाँ आयुर्वेद के विकास-हेतु भी भवन अनेक विशिष्ट योजनाओं के साथ सतत कार्यरत रहता है।

आयुर्वेद के शास्त्रशोधात्मक अनुसन्धान का सर्वथा मौलिक प्रयास पिछले १६ वर्षों से भवन ने एकाकी ही किया है। अखिल भारतीय आयुर्वेद-शास्त्रचर्चा-परिषद् के अन्तर्गत उच्चतम मर्मज्ञ विद्वानों का समागम करके भवन ने प्राचीन आयुर्वेद-शास्त्रों के अन्वेषण का महत्वपूर्ण कार्य आरम्भ किया। प्रथम परिषद् में आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धान्त त्रिदोष एवं पंचमहाभूत पर विवेचनात्मक निर्णय हुए। दूसरी परिषद् में द्रव्य, गुण, रस, वीर्य, विपाक-प्रगति-सिद्धान्त के महत्वपूर्ण विवेचन किए गए। इसके उपरान्त आयुर्वेद-शारीर (एनाटॉमी) विषय पर शास्त्रीय अन्वेषण का क्रम अपनाया गया है। दो परिषदों के आयोजन से समस्त प्राचीन आयुर्वेद-ग्रन्थों में प्रयुक्त शरीरावयववाची शब्दों के निश्चित अर्थ एवं प्रयोग निर्धारित किए गए। ऐसे एक हजार से ऊपर निश्चितार्थ शारीर शब्दों की संदर्भ-सूची भवन द्वारा प्रकाशित हो चुकी है।

विगत वर्ष, गत जून मास में ऋषीकेश (लक्ष्मण झूला) में अ० भा० आ० शास्त्रचर्चा-परिषद् का चौथा अधिवेशन भी आयोजित हुआ था, जिसमें अम्लपित्त, संग्रहणी, आमातिसार, अर्श, अग्निवैषम्य, आन्त्रशूल, कोष्ठगत कृमिरोग आदि महास्रोतीय रोगों की चिकित्सा के सर्वमान्य आयुर्वेदीय सिद्धान्त, प्रयुक्त सिद्धयोग आदि विषयों पर दस दिनों तक शास्त्रीय विवेचन होते रहे। इस परिषद् का संक्षिप्त विवरण 'सचित्र आयुर्वेद' में प्रकाशित हुआ है और इसे अब शीघ्रातिशीघ्र पुस्तकाकार भी प्रकाशित करने का प्रयास है।

उत्तम औषधि-निर्माण-कार्य-हेतु शुद्ध द्रव्य-संग्रह का प्रबन्ध तो भवन को करना ही था, परन्तु इस प्रयास से आयुर्वेद-जगत् भी लाभान्वित हो, इसलिए भवन ने भारतीय वनस्पति-विज्ञान के अद्वितीय पण्डित और संदिग्ध वनौषधि-निर्णय के लेखक महामहोपाध्याय आचार्य प्रवर स्व० भागीरथजी स्वामी के निर्देशन में वानस्पतिक अनुसन्धान का विधिवत् कार्य प्रारम्भ किया, जिसके निष्कर्ष समय-समय पर प्रकाशित होते रहे हैं। अब भी स्वामीजी द्वारा निर्देशित कार्य-शैली पर ही भवन के पर्यटक-दल, वानस्पतिक विशेषज्ञों के नेतृत्व में, विभिन्न पार्वतीय स्थानों का भ्रमण करके नवीन वनस्पतियों की खोज करते रहते हैं।

भवन के निर्देशक पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा ने कश्मीर घाटी में रुद्रवन्ती आदि कई अलभ्य औषधियों की खोज का जो स्तुत्य प्रयास किया है, उसका सविस्तार विवरण 'सचित्र आयुर्वेद' में प्रकाशित हो चुका है। वानस्पतिक मूल द्रव्यों का निश्चितीकरण, पहचान और आणुवीक्षणिक परीक्षण एवं मान-निर्धारण का कार्य वनस्पति-विशेषज्ञों के सहयोग से बड़े पैमाने पर किया गया है। वानस्पतिक अनुसन्धान-हेतु भवन के नये निर्माण-केन्द्र नैनी (इलाहाबाद) में एक विशेष अन्वेषण-केन्द्र तथा विशाल उद्यान की स्थापना भी की गई है।

भवन द्वारा रक्तचाप और पागलपन पर सर्पगन्धा और शंखपुष्पी का प्रयोग-परीक्षण तो सर्व-विदित है ही। भवन के वनस्पति-विभाग द्वारा संगृहीत अनेक चमत्कारी नवीन वनस्पतियाँ

में एक पराश्रयी कंद कुष्ठ रोग पर सर्वाधिक लाभकर सिद्ध हुआ है। पिछले तीन वर्षों में भवन ने तो उसका परीक्षण किया ही, विहार सरकार द्वारा संचालित कुष्ठ रोगाश्रम ट्राम्वे, संथाल पहाड़िया सेवा-मंडल कुष्ठ-निरोध-केन्द्र तथा अन्य कुछ कुष्ठ-चिकित्सालयों में भी उसके प्रयोग से आशातीत सफलता मिली है। इस कंद के और भी अधिक अनुसन्धान के लिए भवन ने भारत सरकार से सम्पर्क स्थापित किया था। सरकार के वनस्पति-अन्वेषण-विभाग ने इसका नामकरण Alacctra Parasiteica D. Rich किया है। इसके रासायनिक विश्लेषण पर एक लेख ब्रिटिश मेडिकल जरनल में भी दिया गया था। बहुत वर्षों के अनुभव और अनुसन्धान के बाद भवन ने 'लेप्रीन' नाम से इस दवा को बनाकर जनसेवा के उद्देश्य से बाजार में भी रखा है, जो बैद्यनाथ के सभी औषध-विक्रेताओं के यहाँ प्राप्त है। इस दवा की माँग विदेशों से भी लाखों की संख्या में आती रहती है।

आयुर्वेदीय अनुसन्धान के लिए भवन ने पहले काशी विश्वविद्यालय तथा अन्य संस्थाओं को आर्थिक सहयोग देकर कार्य कराया। तदनन्तर भवन के तत्वावधान में रतनगढ़-स्थित श्री धन्वन्तरि-मन्दिर के इन्डोर चिकित्सालय में, श्वास-रोग-चिकित्सानुसंधान की विशाल योजना कार्यान्वित की गई। अनुसंधान का कई हजार का व्यय-भार भवन ने वहन किया। वहाँ के कार्य से प्रभावित होकर अब भारत-सरकार ने भी श्री धन्वन्तरि-मंदिर को आर्थिक सहयोग दिया है। इसके द्वारा श्वास-रोग-पीड़ित हजारों रोगियों को लाभ पहुँचा है।

निजी आयुर्वेद-विद्यालय-संचालन के अतिरिक्त भवन की ओर से अनेक विद्यालयों को भी सहायता दी जा रही है। समय-समय पर प्रतिभावान् विद्वानों, विचारकों एवं लेखकों को स्वर्ण-पदक और पुरस्कार से भवन सम्मानित करता है। वैद्य-समाज के हर सामाजिक आयोजन में भवन अग्रगामी होकर सहयोग करता है। दिल्ली में वैद्य-समाज की प्रतिनिधि संस्था द्वारा संचालित आयुर्वेद-विद्यापीठ महाविद्यालय को भवन की ओर से पाँच सौ रुपया मासिक एवं औषधें दी जाती हैं।

आयुर्वेद की साहित्यिक श्रीवृद्धि-हेतु भवन ने उच्चकोटि के विद्वानों द्वारा लिखित अनेक उत्कृष्ट और बड़े-बड़े ग्रन्थ प्रकाशित किए हैं। शारंगधर-संहिता, संक्रामक-रोग-विज्ञान तथा अष्टांग-संग्रह जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। माधव-निदान और चरक की अभिनव टीकाएँ भी प्रस्तुत की जा रही हैं। विद्वत्समाज के लिए अनेक मौलिक ग्रन्थों के अतिरिक्त सामान्य जनता को आयुर्वेदीय सिद्धान्तों का ज्ञान कराने के लिए भवन द्वारा कितनी ही पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित की गई हैं। आयुर्वेद का सर्वाधिक लोकप्रिय एवं उच्चस्तरीय मासिक "सचित्र आयुर्वेद" भी भवन द्वारा ही प्रकाशित होता है।

आयुर्वेदीय चिकित्सा द्वारा सक्रिय जन-सेवा के लिए भवन की ओर से अनेक स्थानों पर निःशुल्क चिकित्सालय एवं स्वास्थ्य-रक्षा-केन्द्र संचालित हैं। इन केन्द्रों में औषधि के अतिरिक्त निर्धन रोगियों को पथ्य भी निःशुल्क दिया जाता है। भारतीय संसद-सदस्यों को आयुर्वेद के निकट लाने और केन्द्रीय सरकार की दृष्टि में आयुर्वेद का प्रत्यक्ष प्रभाव प्रदर्शित करने के निमित्त पिछले १३ वर्षों से नई दिल्ली के संसद-सदस्य-निवास-क्षेत्र में भवन द्वारा एक सुव्यवस्थित निःशुल्क आयुर्वेदीय चिकित्सालय संचालित है। इस आयोजन से संसदीय क्षेत्र में निश्चय ही आयुर्वेद के पक्ष में प्रभावशाली वातावरण का निर्माण हुआ है।

श्री धन्वन्तरि-जयन्ती पर राष्ट्रव्यापी स्वास्थ्य-दिवस-समारोह के आयोजन प्रतिवर्ष करके भवन वैद्य-हकीमों में संगठन एवं जनता में आयुर्वेद के प्रचार का प्रयास करता है। प्रत्येक धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, औद्योगिक और सामाजिक मेलों या समारोहों पर भवन की ओर से भव्य आयुर्वेदीय स्वास्थ्य-प्रदर्शनी के आयोजन द्वारा जनता को केवल दवाओं पर आश्रित न होकर स्वाभाविक स्वास्थ्य के प्रति प्रेरित किया जाता है। इस प्रकार यह संस्थान केवल व्यवसायी नहीं, प्रत्युत् आयुर्वेद-विकास द्वारा जन-स्वास्थ्य की अभिवृद्धि-हेतु सक्रिय संकल्प में संलग्न एक आदर्श संगठन है।



धातु भस्म तथा पिष्टी

आयुर्वेदीय चिकित्सा में भस्म, पिष्टी तथा कूपीपक्व रसायन के अत्यधिक गुण वर्णित हैं। एलोपैथिक चिकित्सा में जिस प्रकार इन्जेक्शन तत्काल लाभदायक माने जाते हैं, आयुर्वेदिक चिकित्सा-प्रणाली में भस्मों के प्रयोग उससे भी अधिक फलप्रद सिद्ध होते हैं। शीघ्र एवं उत्तम फल-प्राप्ति के निमित्त आयुर्वेदिक भस्मों के निर्माण की विशुद्धता, द्रव्यों की उत्तमता, निर्माण-सम्बन्धी शास्त्रीय दक्षता एवं समय और साधनों की आवश्यकता होती है। अतः सभी वैद्य या फार्मेसीवाले भस्मों को यथार्थ रूप में तैयार नहीं कर पाते।

बैद्यनाथ-भस्मों की श्रेष्ठता तथा प्रामाणिकता के निम्नलिखित कारण हैं :—

(१) बैद्यनाथ-भस्मों की भस्म-क्रिया में वन्योपल का ही व्यवहार किया जाता है। बैद्यनाथ रसायनशाला में पत्थर के कोयले या गैस के आँच का उपयोग बिल्कुल निषिद्ध है।

(२) इनमें उन्हीं मूल द्रव्यों का व्यवहार किया जाता है, जिनके धातुत्व और उपधातुत्व का परीक्षण पहले कर लिया गया हो, ताकि निम्न या मिलावटवाले पदार्थों से भस्में न बनें।

(३) बैद्यनाथ-रसायनशाला के अध्यक्ष पारद के संस्कार और भस्मों के निर्माण की विशेषता के लिए देश-भर में सुप्रसिद्ध हैं। रसायनशाला में काम करनेवाले अन्य सहयोगी वैद्य भी इस विषय के सुदक्ष और अनुभवी हैं।

(४) निरीक्षण स्वयं कार्यालय के मैनेजिंग डायरेक्टर करते हैं, जो आयुर्वेद के प्रचार, प्रसार और उद्धार-कार्य में आज ५४ वर्षों से निरन्तर प्रयत्नशील हैं।

(५) भस्में और पिष्टी जितनी पुरानी होती हैं, वे उतनी ही अधिक गुणकारी होती हैं। हमारे यहाँ मनो भस्में एक साथ तैयार होती हैं और पुरानी होने पर ही बैद्यनाथ-निर्माणशालाओं द्वारा पैक होकर, सील-मोहर लगाकर बिक्री के लिए भेजी जाती हैं।

(६) कुछ अन्य प्रतिष्ठित निर्माता हैं, जो भस्में अच्छी बनाते हैं; परन्तु उनके मूल्य बहुत अधिक होने के कारण उन्हें केवल अमीर लोग ही खरीद सकते हैं, साधारण जनता नहीं। इसके विपरीत, कई औषधि-निर्माता भस्में बहुत सस्ते भाव में बेचते हैं, जो किसी हालत में विश्वास करने योग्य नहीं हो सकतीं। बैद्यनाथ-भस्में उत्तम होने पर भी मूल्य में अधिक नहीं हैं।

(७) बैद्यनाथ-भस्मों के विषय में विशेष जानकारी हासिल करने के लिए प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित 'रस-भस्मों की सेवन-विधि' नाम की पुस्तक देखें।

बैद्यनाथ अकीक पिष्टी—हृदय और मस्तिष्क की क्रिया पर इसका उत्तम प्रभाव होता है। इससे हृदय और मस्तिष्क बलवान बने रहते हैं।

बैद्यनाथ अकीक भस्म—रक्त-पित्त, यकृत्-विकृति आदि रोग दूरकर शरीर को बलवान बनाती है तथा थूक के साथ रक्त आने को रोकती है।

बैद्यनाथ अभ्रक भस्म—यह हिमालय पर्वत के उत्तम वज्राभ्र से बनाई जाती है। फेफड़े, यकृत् और मन्दाग्नि से उत्पन्न रोगों की सुप्रसिद्ध दवा है। पुराना बुखार, खाँसी, शारीरिक दुर्बलता, श्वास, रक्ताल्पता, अम्लपित्त, संग्रहणी, पाण्डु आदि में आशातीत फल दिखलाती है।

बैद्यनाथ अभ्रक भस्म शतपुटी—साधारण अभ्रक भस्म की अपेक्षा विशेष गुण युक्त है।

बैद्यनाथ अभ्रक भस्म सहस्त्रपुटी—शतपुटी से भी अधिक और तत्काल फल सहस्त्रपुटी भस्म के प्रयोग से प्राप्त होता है। शारीरिक और मानसिक दुर्बलता के लिए सर्वश्रेष्ठ टॉनिक है।

बैद्यनाथ कपर्दक भस्म—पेट का दर्द, आफरा, परिणामशूल, अम्ल-पित्त, संग्रहणी, अधिक पित्त (Acidity) से उत्पन्न रोग, गुल्म और अग्निमान्द्य में बहुत गुणकारी है।

बैद्यनाथ कहरवा (तृणकान्तमणि पिष्टी)—पित्त-विकार, रक्त-पित्त, सिर-दर्द, मस्तिष्क के क्रमिरोग और अर्श आदि सब प्रकार के रक्तस्राव में उपयोगी है।

बैद्यनाथ काशीश भस्म—रक्ताल्पता की औषधि है। पाण्डु, रक्त की कमी, तिल्ली, लीवर बढ़ जाना, आम-विकार, उदर-रोग, गुल्म-शूल, नेत्र-विकार आदि रोगों में इसका उपयोग होता है।

बैद्यनाथ कांस्य भस्म—रक्त-विकार, नेत्र-विकार, पेट के क्रमि आदि को दूर करती है।

बैद्यनाथ कुक्कुटाण्डत्वक भस्म—शक्ति-वर्धक कैल्शियम है। हड्डियों को मजबूत बनाता और शरीर को ताकत देता है।

बैद्यनाथ खर्पर भस्म—वात-पित्तजन्य रोगों में परम गुणकारी।

बैद्यनाथ जहरमोहरा खताई पिष्टी—भस्म से पिष्टी मात-दिल होती है। शारीरिक एवं मानसिक बल को बढ़ानेवाली है तथा अजीर्ण, वमन, दाह, अतिसार, यकृत्, घबराहट, जीर्णज्वर, बालकों के हरे-पीले दस्त एवं सूखा-रोग में इसका सेवन अति लाभदायक है।

बैद्यनाथ जहरमोहरा खताई भस्म—इसके सभी गुण उपर्युक्त पिष्टी के समान हैं।

बैद्यनाथ टंकण भस्म—सर्दी, खाँसी में कफ को बाहर लाती है।

बैद्यनाथ ताम्र भस्म—शत-प्रतिशत विशुद्ध ताँबे से बनाई जाती है। उदर-रोग, यकृत्, प्लीहा, शूल-रोग, परिणामशूल, मन्दाग्नि, अम्लपित्त, शोथ आदि रोगों में प्रयुक्त होती है।

बैद्यनाथ तीक्ष्ण लौह भस्म—रक्त को बढ़ाती है और जीर्ण-शीर्ण शरीर का फिर से निर्माण करती है। पाण्डु, रक्तपित्त, खाँसीयुक्त पुराना बुखार, अम्लपित्त आदि में बहुत गुणकारी है।

बैद्यनाथ त्रिवंग भस्म—गँदला, दूषित द्रव्ययुक्त बार-बार पेशाब होने पर इसका उपयोग लाभदायक है। गुण-धर्म की विशेष जानकारी के लिए चिकित्सक से परामर्श करें।

बैद्यनाथ नाग भस्म—इस भस्म के सेवन से अजीर्ण, रक्त-गुल्म, मन्दाग्नि, खाँसी, कमजोरी, पेशाब की अधिकता, पाण्डु, वातरोग आदि नष्ट होते हैं तथा शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है।

बैद्यनाथ पन्ना भस्म—हृदय की गति को सीमित रखने तथा विष-दोष को नष्ट करने में उत्तम है। यह ओजवर्द्धक है तथा भूख बढ़ाती है। खाँसी और श्वासरोग में गुणकारी है।

बैद्यनाथ प्रवाल भस्म—पित्त की अधिकता से होनेवाले रोगों की खास दवा है। पुराना बुखार, खाँसी, पित्तज कास, रक्तपित्त, तृषा-रोग, बालरोग आदि में पूर्ण लाभकारी है।

बैद्यनाथ प्रवाल पिष्टी—भस्म से यह अधिक पित्तशामक है। पित्तज कास, रक्तपित्त, अम्ल-पित्त, आँख की जलन में विशेष लाभदायक है। इसे सूर्यपुटित प्रवाल भस्म भी कहते हैं।

बैद्यनाथ प्रवाल पिष्टी (चन्द्रपुटित)—गुण-धर्म प्रवाल पिष्टी के समान ही है।

बैद्यनाथ वंग भस्म—इससे असंयम से पैदा होनेवाले रोग तथा दुर्बलता दूर होते हैं।

बैद्यनाथ विमल भस्म—पाण्डु, कामला, क्षीणता, संग्रहणी, ज्वरयुक्त खाँसी, बवासीर, भगन्दर आदि रोगों में रक्त की कमी को दूर करती है।

बैद्यनाथ वैक्रान्तभस्म—यह हीरे का उपरत्न है। हीरा भस्म के अभाव में इस भस्म का उपयोग होता है। यह भस्म पुराने बुखार-खाँसी शारीरिक क्षीणता आदि में फायदेमन्द है।

बैद्यनाथ मण्डूर भस्म—१०० वर्ष पुराने मण्डूर से ही बैद्यनाथ मण्डूर भस्म तैयार होती है। इससे बाल-यकृत्-रोग, पाण्डु, कामला, मन्दाग्नि, संग्रहणी, रक्ताल्पता आदि दूर होते हैं।

बैद्यनाथ मधुमण्डूर भस्म—पाण्डु-रोग, यकृत्-विकार आदि में विशेष लाभकारी तथा रक्त-वृद्धि के लिए उपयोगी है। अधिक पुटयुक्त होने के कारण मण्डूर भस्म से विशेष फलप्रद है।

बैद्यनाथ मयूरचन्द्रिका भस्म—हिचकी, वमन और श्वास के उपद्रव में लाभदायक है।

बैद्यनाथ माणिक्य भस्म—शरीरके सब धातुओं को पुष्ट कर बुद्धि की वृद्धि करती है। दीपन होने के कारण इससे मन्दाग्नि और संग्रहणी में शीघ्र लाभ होता है। यह हृद्य है।

बैद्यनाथ मुक्ताशुक्ति पिष्टी—शारीरिक दुर्बलता, ज्वर-युक्त खाँसी, श्वास, पित्तदाह, पित्तज परिणामशूल, यकृत्‌शूल, अम्लपित्त, रक्तपित्त, रक्तस्राव आदि में लाभदायक है।

बैद्यनाथ मुक्ताशुक्ति भस्म—यह भी मुक्ताशुक्ति पिष्टी के समान ही लाभदायक है। कैल्शियम की कमी के कारण होनेवाले रोगों में इसका सेवन खास तौर पर करना चाहिए।

बैद्यनाथ मोती भस्म—यह पुष्टि-प्रदायक सुप्रसिद्ध दवा है। इससे चित्तभ्रम, बबराहट, धड़कन, स्मृतिभंग, अनिद्रा, नेत्र-रोग आदि दूर होते हैं। यह बहुत ही सौम्य और शील है।

बैद्यनाथ मोती भस्म नं० १—मोती भस्म साधारण से यह विशेष गुणकारी है, क्योंकि इसमें पड़नवाले मोती उत्तम प्रकार के हैं। दिल और दिमाग के लिए यह अच्छी पुष्टई है।

बैद्यनाथ मोती भस्म (चन्द्रपुटित)—इसमें पित्तशामकता और शीतलता अधिक है। गुण और उपयोग में मोती भस्म से श्रेष्ठ है।

बैद्यनाथ मोती पिष्टी—उत्तम कैल्शियम है। निम्नोक्त नं० १ के सभी गुण इसमें हैं।

बैद्यनाथ मोती पिष्टी सर्वोत्तम नं० १—इसमें सर्वश्रेष्ठ कैल्शियम है। नेत्र-विकार, सिर-दर्द, कमजोरी, घबराहट, हृदय-दौर्बल्य आदि की सर्वोत्तम शास्त्रीय दवा है।

बैद्यनाथ यशद भस्म—यह कफ-पित्तनाशक है। नेत्र-विकार, दाह, रक्तस्राव, पित्त, रक्त-विकार, खाँसी, अतिसार, संग्रहणी, क्षीणता, पाण्डु, जीर्णज्वर आदि रोगों में लाभदायक है।

बैद्यनाथ रौप्य (चाँदी) भस्म—यह शारीरिक दुर्बलता तथा वात-पित्त के विकारों का शमन करती है। उदर की वायु-विकृति में विशेष गुणकारी है। यह बृंहण और वृष्य है।

बैद्यनाथ रौप्यमाक्षिक भस्म—पाण्डु, कामला, यकृत्-विकार आदि में प्रयुक्त होती है। रौप्यमाक्षिक में रौप्य (चाँदी) का अंश रहने के कारण रौप्य की जगह इसका व्यवहार होता है।

बैद्यनाथ लौह भस्म—खून को बढ़ाकर सभी धातुओं को बढ़ाना इसका मुख्य गुण है और यकृत्-प्लीहा, उदररोग, पाण्डु, कामला, कृमि-रोग, शोथ आदि में अच्छा लाभ करती है।

बैद्यनाथ लौह भस्म शतपुटी—यह साधारण लौह भस्म से अधिक गुणयुक्त है।

बैद्यनाथ लौह भस्म सहस्रपुटी—यह शतपुटी लौह भस्म से भी अधिक गुणयुक्त और श्रेष्ठ है। इससे रक्ताल्पता, अनिद्रा आदि रोगों में जल्द तथा आशातीत लाभ होता है।

बैद्यनाथ लौहसार—लौह भस्म साधारण की अपेक्षा यह विशेष गुणकारी है। गुण, अनुपान और मात्रा लौह भस्म के समान ही समझना चाहिए।

बैद्यनाथ कान्तलौह भस्म—कान्तलौह सब लौहों में श्रेष्ठ होता है। इसलिए लौह भस्म के सभी लाभ इससे बहुतायत में प्राप्त होते हैं।

बैद्यनाथ शंख भस्म—यकृत्, उदर के विकार, संग्रहणी, पेट-दर्द, अम्ल-पित्त, गुल्म, अजीर्ण आदि में यह विशेष उपयोगी है। यह पित्ताधिक्य को कम करती है।

बैद्यनाथ शृंग भस्म—निमोनिया, इन्फ्लुएजा, सर्दी, जुकाम, पार्श्वशूल और क्षीणता से उत्पन्न खाँसी में विशेष लाभ करती है। इससे कफ पतला होकर बाहर निकल जाता है।

बैद्यनाथ संगेयशब पिष्टी—हृदय तथा मस्तिष्क सम्बन्धी सभी विकारों में गुणकारी है।

बैद्यनाथ स्फटिका भस्म—यह बलकारक, स्निग्ध, मधुर, शीतवीर्य, मेघ्य और उत्तम रसायन है। इसके सेवन से रोगनाशक शक्ति का शरीर में संचय होता है। यह शारीरिक और मानसिक ताकत को बढ़ाकर प्रायः सभी पुराने रोगों में लाभ करती है।

बैद्यनाथ स्वर्ण भस्म—भस्म के विकार, निमोनिया आदि में इसका उपयोग होता है।

बैद्यनाथ स्वर्णमाक्षिक भस्म—अनिद्रा, दिमाग की कमजोरी, पित्त-विकार, पाण्डु, कामला आदि को दूर करके खून बढ़ाने में अति उपयोगी है। सभी बालरोगों में हितकर है।

बैद्यनाथ हजरुलयहूद भस्म—इसे पथरी-रोग की प्रारम्भिक अवस्था में देने से यह पथरी को गलाकर बहा देती है और पेशाब साथ लाती है। यह अति मूत्रल है।

बैद्यनाथ हीरा भस्म—यह त्रिदोषनाशक, वृष्य और आयुवर्धक महौषधि है।

बैद्यनाथ हरिताल (गोदन्ती) भस्म—ज्वर, सर्दी, जुकाम, खाँसी, सिर-दर्द, बाल-रोग आदि में लाभ करती है। इन्फ्लुएंजा की अनुभूत और अति लाभकारी दवा है।



कूपीपक्व रसायन

गुण-वृद्धि के लिए हमारे यहाँ यह नियम है कि संस्कारित पारद से ही समस्त औषधें बनाई जायँ। इसी नियमानुसार निम्नलिखित कूपीपक्व रसायन और पर्पटी संस्कारित पारद से ही बनाई गई हैं। इस पर भी जहाँ द्विगुण और षड्गुण शब्द आये हैं, वहाँ उनकी विशेष उपयोगिता समझनी चाहिए। इस क्रिया से औषधि की रोगनाशिनी शक्ति निश्चय ही बहुत बढ़ जाती है। इनका उपयोग वैद्य की सलाह से करना चाहिए।

बैद्यनाथ चन्द्रोदय (अन्तर्धूम)—अनुपान-भेदसे इसका व्यवहार अनेक शारीरिक रोगों में किया जाता है। इससे दिल और दिमाग को ताकत मिलती है। नाड़ी की गति क्षीण होने पर इसके व्यवहार से तुरत लाभ होता है।

बैद्यनाथ चन्द्रोदय (बहिर्धूम)—उपर्युक्त गणों से कुछ ही कम गुण इसमें हैं। अनुपान-भेद से इसका व्यवहार अनेक रोगों में लाभदायक सिद्ध होता है।

बैद्यनाथ ताम्र सिन्दूर—इसके सेवन से कफ, खाँसी, श्वास और फेफड़े के विकारों में फायदा होता है। पाण्डु, शोथ और रक्तदोप में भी बहुत लाभदायक है।

बैद्यनाथ ताल सिन्दूर—यह रक्तशोधक और कीटाणुनाशक है। फेफड़ों में जमे हुए कफ को निकालता है। हृदय और रक्तवाहिनी नाड़ियों को इससे बल मिलता है।

बैद्यनाथ पूर्ण चन्द्रोदय—चन्द्रोदय (बहिर्धूम) से किंचित् विशेष गुणयुक्त है। शारीरिक क्षीणता, मानसिक दुर्बलता आदि में इसका उपयोग धड़ल्ले से किया जाता है। यह उत्तम पौष्टिक रसायन है।

बैद्यनाथ मकरध्वज—यह पारदघटित रसायनों में सर्वप्रमुख है। एक ही मकरध्वज से अनेक रोग अच्छे किये जाते हैं। यह बल, कान्ति और विक्रम की वृद्धि करता है सन्निपात ज्वर में नाड़ी की गति क्षीण हो जाने पर कस्तूरी के साथ इसके प्रयोगसे आशातीत लाभ प्राप्त होता है।

बैद्यनाथ मधु मकरध्वज—सहज और शीघ्र उपयोग के लिए मकरध्वज को मधु में घोंटकर तैयार किया जाता है। गुण मकरध्वज के समान ही है।

बैद्यनाथ मकरध्वज षड्गुणबलिजारित—गन्धक छः गुना ज्यादा होने के कारण मकरध्वज के सारे गुण इसमें विशेष रूप से हैं। अतएव साधारण मकरध्वज की अपेक्षा इससे जल्द लाभ होता है।

बैद्यनाथ सिद्ध मकरध्वज स्पेशल (सुवर्ण-कस्तूरी-मुक्ता-युक्त)—अष्टादश संस्कार-युक्त पारद से निर्मित सुवर्ण, कस्तूरी और मुक्तायुक्त यह मकरध्वज शारीरिक एवं मानसिक दौर्बल्य को मिटाकर शरीर में नई शक्ति और स्फूर्ति का संचार करता है। बल को बढ़ाने तथा शरीर को कान्तिमय बनाने के लिए यह सुप्रसिद्ध है। ज्वर, निमोनिया, सर्दी, जकाम, कफ-खाँसी, श्वास, ज्वरावस्था की व्याकुलता आदि में भी यह परमोपयोगी है।

बैद्यनाथ सिद्ध मकरध्वज—गुण-धर्म उपर्युक्त के समान हैं।

बैद्यनाथ मल्ल सिन्दूर—वात और कफ-विकार, आमवात, श्वास, फेफड़े में जमे हुए कफ आदि में इससे अच्छा लाभ होता है। यह दमा में बहुत गुणकारी और रक्तशोधक है।

बैद्यनाथ रजत सिन्दूर—यह रस, रक्त आदि सप्तधातुओं का पोषण करता है। दिल और दिमाग को स्वस्थ रखता है। इसके व्यवहार से पेट में वायु-सञ्चय नहीं होने पाता।

बैद्यनाथ रस सिन्दूर—कफ-प्रधान रोगों में उपयोगी है। उरस्तोय, निमोनिया, सन्निपात, संग्रहणी, कास, दमा आदि रोगों को दूर कर शरीर में बल-कान्ति की वृद्धि करता है। अनुपान- भेंद से अनेक रोगों में काम आता है।

बैद्यनाथ रस सिन्दूर षड्गुणबलिजारित—उपर्युक्त रस सिन्दूर से अधिक गुणकारी है।

बैद्यनाथ व्याधिहरण रसायन—यह संधिवात, नासा एवं मुख-व्रण, चकत्ता आदि रक्त विकार के उपद्रवों को शमन करनेवाली उत्तम औषधि है।

बैद्यनाथ शिला सिन्दूर—इसके सेवन से रक्त-विकार और फोड़ा-फुन्सी आदि चर्म-रोग अच्छे होते हैं। ठंड लगकर आनेवाले बुखार और शीतांग सन्निपात में भी इससे बहुत लाभ होता है।

बैद्यनाथ समीरपन्नग रस—सन्धिक एवं शीतांग सन्निपात में नाड़ी की गति क्षीण हो जाने पर इसको २-३ मात्रा से ही आशानुकूल लाभ होता है। यह स्नायुमंडल को बलवान बनानेवाली श्रेष्ठ दवा है।

बैद्यनाथ स्वर्ण सिन्दूर—इसके सेवन से बल, पौरुष, स्मरण शक्ति और कान्ति की वृद्धि होती है। यह साधारण ज्वर, सन्निपात-ज्वर, खाँसी और मन्दाग्नि में बहुत लाभदायक है।

बैद्यनाथ सुवर्ण समीरपन्नग रस—कठिन वात-विकारों में इसका उपयोग विशेष लाभदायक सिद्ध होता है। शीतांग सन्निपात की अच्छी दवा है।

बैद्यनाथ सुवर्णराज वंगेश्वर (स्वर्णवंग)—यह शरीर की कमजोरी एवं असंयम जनित बीमारियों को दूर करता है।



रस-रसायन

गुण-धर्म—आयुर्वेदीय चिकित्सा में रसों को अति श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। हमारे वैद्यों के पास यदि रस-चिकित्सा न होती, तो वर्तमान विदेशी (एलोपैथी) चिकित्सा के सामने उनका ठहरना कठिन था। यदि वैद्यों के पास प्रधान-प्रधान रस न हों, तो उन्हें शस्त्रहीन योद्धा ही समझना चाहिए। हमारे देश में रस-वैद्यों को श्रेष्ठ स्थान दिया गया है। रस अल्प मात्रा (एक-दो रत्ती) में ही तत्काल लाभ दिखलाते हैं और इनसे किसी तरह की अरुचि भी नहीं होती।

बैद्यनाथ रसों की विशेषता—रसों में प्रधान द्रव्य पारद, हिंगुल है। हमारे यहाँ प्रत्यक रस में विशुद्ध पारद डाला जाता है, जिसका महत्व सभी चिकित्सक जानते हैं। बैद्यनाथ-रसों में शुद्ध हिंगुल डाला जाता है। बाजार में हिंगुल के नाम से जो वस्तु मिलती है, वह अशुद्ध रस सिन्दूर होते हैं। वह हिंगुल का गुण कभी नहीं दे सकता। रसों में पड़नेवाली हमारी भस्मों की विशेषता भस्मों के प्रकरण में देखिए कि किस तरह उत्तम और प्रामाणिक वस्तु डालकर हमारे यहाँ भस्म बनाये जाते हैं। हम निरन्तर इस बात का प्रयत्न करते हैं कि आयुर्वेद की औषध एलोपैथी दवाओं के सामने विशेष गुणप्रद साबित हों। प्रत्येक भारतवासी, अमीर-गरीब आयुर्वेद से लाभ उठाकर उसकी प्रशंसा करें, इसलिए मूल्य-निर्धारण में हमारे यहाँ लाभ को विशेष स्थान नहीं दिया जाता। उचित मूल्य में प्रामाणिक रस चाहनेवाले सज्जन निश्चय ही हमारी दवाओं से संतुष्ट होंगे।

सेवन-विधि—प्रायः प्रत्येक रस की गोली, पूरी उम्रवालों के लिए एक पूरी खुराक है। एक-एक गोली सुबह और शाम को लेना चाहिए। गोली को पत्थर की छोटी खरल में महीन पीसकर, आधा तोला शहद में १५ मिनट घोंटना चाहिए। फिर अनुपान की वस्तु मिलाकर चाट लेना चाहिए। अनुपान और गुणों की विशेष जनकारी के लिए हमारे अधिकृत विक्रेताओं के यहाँ 'रस-भस्मों की सेवन-विधि' नाम की पुस्तक देखिए। यों प्रत्येक बैद्यनाथ-रस-रसायन की पैकिंग के साथ उसकी सेवन-विधि और पथ्य-परहेज के नियम संलग्न रहते ही हैं।

बैद्यनाथ अगस्तिसूतराज रस—अतिसार, संग्रहणी, आमांश-शूल, मन्दाग्नि आदि में यह बहुत उपयोगी है। पुराने अतिसार में इसके सेवन से विशेष लाभ होता है।

बैद्यनाथ अग्निकुमार रस—अजीर्ण, मन्दाग्नि एवं पेट-दर्द में उपयोगी है। पाचकाग्नि को उद्दीप्त कर भूख बढ़ाने और हाजमा की ताकत को तेज रखने के लिए सर्वोत्तम है।

बैद्यनाथ अग्निसंदीपन रस—अधिक भोजन के कारण अजीर्ण होने पर इससे खाये हुए पदार्थों का शीघ्र पाचन होता है। वायुनाशक अनुपान के साथ यह पेट-दर्द में भी गुणदायक है।

बैद्यनाथ अजीर्णकंटक रस—अजीर्ण और हैजे की पहली अवस्था में इसका प्रयोग करना चाहिए। अतिसार और मन्दाग्नि में बहुत उपयोगी है। खाये हुए वस्तुओं को शीघ्र पचाता है।

बैद्यनाथ अजीर्णारि रस—यह दीपन, पाचन दस्तावर है। मन्दाग्नि, अजीर्ण, कब्जियत आदि को दूर कर अग्नि की वृद्धि करता है।

बैद्यनाथ अर्धनारीनटेश्वर रस—सन्निपात, तन्द्रा, अनिद्रा आदि में नस्य-रूप में प्रयुक्त होने से यह शीघ्र गुण दिखलाता है। इसे खाने के काम में नहीं लेना चाहिए।

बैद्यनाथ अमरसुन्दरी बटी रस (कस्तूरी-युक्त)—इससे सभी प्रकार के वात-रोगों में लाभ होता है। सन्निपात ज्वर के प्रलाप एवं पेट में वायु भर जाने पर इसका व्यवहार श्रेष्ठ है

बैद्यनाथ अमरसुन्दरी बटी रस—पूर्वोक्त से विशेष और अतिशीघ्र गुणकारी है।

बैद्यनाथ अमीर रस—इसका व्यवहार वैद्य के परामर्श से करना चाहिए। सेवन की सुविधा के लिए इस दवा को कैपसूल में रखकर १० कैपसूल की पैकिंग भी की गई है।

बैद्यनाथ अमृतार्णव रस—अतिसार, संग्रहणी, बवासीर, अम्ल-पित्त आदि वायु तथा पित्त के विकारों में लाभदायक है।

बैद्यनाथ अर्शकुठार रस—बवासीर में कब्जियत रहने से बड़ी तकलीफ होती है। इसके सेवन से दस्त साफ आकर बवासीर के मस्से सूख जाते हैं और रोगी को आराम मिलता है।

बैद्यनाथ अश्वकंचुकी रस—उदर-विकार, जीर्णज्वर, अजीर्ण, गुल्म आदि रोगों में इसके जुलाब से लाभ होता है। यह पेट को शुद्ध करनेवाला उत्तम विरेचन है।

बैद्यनाथ अश्विनीकुमार रस—पेट की वायु बिगड़ कर होनेवाले उदर-रोगों में और जाड़ा लगकर आनेवाले ज्वर में इस रस का उपयोग किया जाता है।

बैद्यनाथ आनन्दभैरव रस (कास)—कास, श्वास और कफ के विकार में इससे अच्छा लाभ होता है। सन्निपात ज्वर और अतिसार में भी इसका उपयोग किया जाता है।

बैद्यनाथ आनन्दभैरव रस (ज्वर)—बुखार को पका कर उतार देता है। नये-पुराने ज्वरों में इससे फायदा होता है। बुखार के तीव्र वेग को शीघ्र कम करता है।

बैद्यनाथ आमवातारि रस—आमवात रोग से जिस समय सम्पूर्ण शरीर में दर्द और शोथ हो, उस समय इस रस के उपयोग से अच्छा लाभ होता है।

बैद्यनाथ आरोग्यवर्द्धिनी बटी—अजीर्ण, मलावरोध, रक्तविकार, ज्वर और शोथ में बहुत लाभकारी है। यह यकृत्-रोगों (Liver Complains) की बहुत उपयोगी दवा है।

बैद्यनाथ इच्छाभेदी रस—यह तीव्र विरेचक है। पेट में संचित मल को साफ कर बाहर निकाल देता है। इसका उपयोग वैद्य या कविराज के निर्देशन में ही करना चाहिए।

बैद्यनाथ उन्माद गजकेशरी—गुण-धर्म की जानकारी के लिए वैद्य से परामर्श करें।

बैद्यनाथ उन्मादगजांकुश रस—यह वात आदि त्रिदोषजन्य विकारों की श्रेष्ठ दवा है।

बैद्यनाथ एकांगवीर रस—इसके सेवन से गृध्रसी, विकलांगता आदि तीव्र वात-विकारों में लाभ होता है। अंगों में आई हुई अशक्तता को दूर करने में यह विशेष लाभदायक है।

बैद्यनाथ कनकसुन्दर रस—अतिसार और संग्रहणी में यदि आँव-दोष न हो, तो इसका उपयोग अति श्रेष्ठ है। यह वेदनाशामक, अग्निदीपक तथा संग्राहक है।

बैद्यनाथ कफकर्तरी—दमा-खाँसी में जमे हुए कफ को बाहर निकालने में अत्युत्तम है।

बैद्यनाथ कफकुठार रस—अधिक कफस्रावी खांसी और दमा में इसका व्यवहार करने से आशाजनक लाभ होता है। यह कफनाशक महौषधि है।

बैद्यनाथ कफकेतु रस—कफजन्य बुखार, खाँसी, श्वास, जुकाम में इससे जल्द और स्थायी लाभ होता है।

बैद्यनाथ कफचिन्तामणि रस—इसके सेवन से सब प्रकार के कफ और वात-रोग दूर होते हैं। कफाधिक्य होने पर इसका प्रयोग शीघ्र फलप्रद सिद्ध होता है।

बैद्यनाथ कर्पूर रस—पतला दस्त, संग्रहणी आदि में तत्काल फायदा करता है। यह संग्राहक, वेदनाशामक तथा निद्राप्रदायक अत्युत्तम दवा है।

बैद्यनाथ कल्पतरु रस—कफ और वातज्वर में बहुत ही लाभ करता है। कास, शीत, अग्निमांद्य आदि में गुणकारी है। बेहोशी में इसका नस्य भी दिया जाता है।

बैद्यनाथ कल्याण सुन्दर रस (सुवर्ण-युक्त)—यह निमोनिया और उरस्तोय में संचित कफ और जल का शोषण करता और सब प्रकारके उपद्रवों को शमित कर हृदय को बल देता है।

बैद्यनाथ कस्तूरीभूषण रस (कस्तूरी-युक्त)—सन्निपात ज्वर में जब हाथ-पैर ठंडा पड़कर नाड़ी की गति क्षीण होती जा रही हो, तब इसके उपयोग से शरीर में शीघ्र ही गर्मी आती है।

बैद्यनाथ कस्तूरीभैरव रस (कस्तूरी-युक्त)—मियादी बुखार और प्रलाप में विशेष लाभकारी है। यह बड़ी शक्तिशाली और जल्द लाभ पहुँचानेवाली दवा है।

बैद्यनाथ कस्तूरीभैरव रस वृहत् (सुवर्ण-मोती-कस्तूरी-युक्त)—तीव्र वायु के वेग और नाड़ी कमजोर होने पर इसका व्यवहार करना चाहिए।

बैद्यनाथ कामदुधा रस—रक्तपित्त, अम्लपित्त, भ्रम आदि पित्त-विकारों में लाभकारी है।

बैद्यनाथ कामदुधा रस (मोती-युक्त)—पित्तजन्य सभी रोगों की यह श्रेष्ठ दवा है। रक्तपित्त, अम्लपित्त, भ्रम, गर्भावस्था के वमन एवं रक्तस्राव आदि में बहुत उपयोगी है।

बैद्यनाथ कामधेनु रस—इसके सेवन से शरीर में बल और बुद्धि की वृद्धि होती है।

बैद्यनाथ कामिनीविद्रावण रस—गुण-धर्म की जानकारी वैद्य महोदय से प्राप्त करें।

बैद्यनाथ कुमारकल्याण रस (सुवर्ण-मोती-युक्त)—कीमती द्रव्यों से प्रस्तुत यह रस बच्चों के सभी रोगों में—जैसे कास, श्वास, शारीरिक क्षीणता, संग्रहणी, सूखारोग, वमन, पसली चलना आदि में—शीघ्र ही फायदा पहुँचाता है। चेचक और मोतीझरा में बहुत उपयोगी है।

बैद्यनाथ कुमुदेश्वर रस (सुवर्ण-मोती-युक्त)—ज्वर-युक्त पुरानी खाँसी में जब रोगी को प्रबल ज्वर, पार्श्वशूल, निद्रा-नाश एवं वायु की प्रबलता हो, तो इससे तुरन्त लाभ होता है।

बैद्यनाथ क्रव्याद रस—मन्दाग्निमूलक रोगों की श्रेष्ठ दवा है। यह दीपन और पाचन है।

बैद्यनाथ कृमिकुठार रस—कृमि-रोग-पीड़ित लोगों और विशेषकर बच्चों के लिए परमोपयोगी है।

बैद्यनाथ खंजनिकारि रस—इसके सेवन से वात-विकार दूर होता है और यह अशक्त अंगों को सशक्त बनाता है। यह निमोनिया, सन्निपात आदि रोगों में भी गुणकारी है।

बैद्यनाथ गंगाधर रस—अतिसार, संग्रहणी, आँव और खून के दस्त में बहुत गुणकारी है।

बैद्यनाथ गंधक रसायन—सब प्रकारके रक्त-विकार, अशुद्ध पारे के सेवन से उत्पन्न विकार, खाज-खुजली, फोड़ा-फुन्सी आदि रक्त एवं चर्मरोगों में उपयोगी है।

बैद्यनाथ गर्भचिन्तामणि रस वृहत् (सुवर्ण-युक्त)—इससे गर्भ की रक्षा और पोषण होता है। गर्भिणी के ज्वर, दाह, सन्निपात और दुर्बलता में यह बहुत लाभदायक है।

बैद्यनाथ गर्भपाल रस—गर्भ के कारण पैदा होनेवाले वमन, अरुचि आदि की अच्छी दवा है। गर्भ-पोषण और गर्भिणी के बल-वर्धन के लिए भी इसका उपयोग अत्युत्तम है।

बैद्यनाथ ग्रहणीकपाट रस—पुराने अतिसार और संग्रहणी में इसका उपयोग शीघ्र लाभदायक है। इसके सेवन से आम के विकार मिटते हैं तथा अग्नि प्रदीप्त होती है।

वैद्यनाथ गुल्मकालानल रस—हर प्रकार के गुल्म, विशेषकर वायुगोले की अच्छी दवा है।

वैद्यनाथ चतुर्भुज रस (सुवर्ण-कस्तूरी-युक्त)—अपतन्त्रक, दिमागी कमजोरी, आक्षेपक आदि कठिन वात-रोगों में तुरन्त लाभ पहुँचानेवाली श्रेष्ठ दवा है।

वैद्यनाथ चतुर्मुख रस (सुवर्ण-युक्त)—समस्त प्रकार के वायु रोगों में अति लाभदायक है। शारीरिक क्षीणता, दिल-दिमाग की कमजोरी, पुराना बुखार-खाँसी, अम्लपित्त, पाण्डु-रोग और अनिद्रा में इससे लाभ होता है। इसको कृष्णचतुर्मुख भी कहते हैं।

वैद्यनाथ चन्द्रकला रस (मोती-युक्त)—रक्तपित्त, रक्तस्राव, दाह, वमन, जीर्णज्वर एवं अन्यान्य पित्त-विकारों में लाभकारी है।

वैद्यनाथ चन्द्रकान्त रस—सब प्रकारके शिरोरोग की अच्छी दवा है। अर्धावभेदक (आधाशीशी) और सूर्यावर्त (सूर्य के साथ घटने-बढ़नेवाला सिर-दर्द) में इससे जल्द लाभ होता है।

वैद्यनाथ चन्द्रशेखर रस—जीर्णज्वर, कास-श्वास, वमन, अजीर्ण, तीव्र वात-विकार, डब्बा, धनुर्वात आदि बच्चों के सभी रोगों में परम उपकारी है।

वैद्यनाथ चन्द्रशेखर रस (गोरोचन-युक्त)—उपर्युक्त गुण गोरोचन-युक्त होने के कारण इसमें विशेष हैं।

वैद्यनाथ चन्द्रांशु रस—आयुर्वेद-शास्त्र में इसके अनेक गुण वर्णित हैं। यह स्त्रियों के लिए बहुत लाभदायक है। चिकित्सक की राय से इसका व्यवहार करना चाहिए।

वैद्यनाथ चन्द्रामृत रस—खाँसी (कास) में उपयोगी है। जुकाम और गले की खराबी से होनेवाली खाँसी में मिश्री के साथ चूसने से यह शीघ्र फायदा करता है।

वैद्यनाथ चिन्तामणि चतुर्मुख रस (सुवर्ण-युक्त)—चतुर्मुख रस की अपेक्षा यह विशेष लाभदायक है। शारीरिक क्षीणता, मानसिक दुर्बलता आदि में तुरत लाभ करता है।

वैद्यनाथ चिन्तामणि रस (सुवर्ण-मोती-अम्बर-युक्त)—यह मानसिक दुर्बलता को दूर कर रक्त-संचार को नियमित करता है। अनिद्रा, घबराहट, भ्रम आदि को दूर करने में उपयोगी है।

वैद्यनाथ जयमंगल रस (सुवर्ण-युक्त)—जीर्णज्वर और कठिन बुखारों की अत्यन्त प्रसिद्ध महौषधि है। रोग-मुक्ति के उपरान्त की कमजोरी को यह जल्द दूर करता है।

वैद्यनाथ जलोदरारि रस—यह दवा जलोदर-रोग में संचित जल को सुखाती तथा बाहर निकालती और फिर पेट में जल-संचय नहीं होने देती है। यह रेचक भी है।

वैद्यनाथ ज्वरमुरारि रस—ज्वर में अजीर्ण, अपच और दस्त की कब्जियत होने पर इस दवा के उपयोग से उत्तम विरेचन होकर ज्वर उतर जाता है।

वैद्यनाथ ज्वरसंहार रस—वात-कफ-प्रधान ज्वरों में इसका विशेष उपयोग होता है।

वैद्यनाथ ज्वरशूलहर रस—यह एन्फ्लुएंजा, मलेरिया, एकतरा, तिजारी चौथिया आदि विभिन्न प्रकार के बुखारों में लाभदायक है।

वैद्यनाथ ज्वरांकुश रस—मलेरिया बुखार की अत्यन्त प्रसिद्ध दवा है। वात और कफ के बुखार में यह प्रयुक्त होता है। सर्दी, जुकाम और इन्फ्लुएंजा में भी शीघ्र गुण दिखाता है।

वैद्यनाथ ज्वरारिअभ्र—पुराना ज्वर, धातुगत ज्वर और विषम ज्वर में लाभदायक है।

बैद्यनाथ तारकेश्वर रस—बार-बार पेशाब लगने अथवा पेशाब के साथ विभिन्न दूषित-गंदले पदार्थों के निकलने की अवस्था में रसरक्त धातुओं को बढ़ाकर शरीर को पुष्ट करता है।

बैद्यनाथ तालकेश्वर रस—कुछ दिन नियमित पथ्यपूर्वक इस दवा के सेवन से रक्त-विकार, खाज-खुजली आदि कठिन-से-कठिन चर्म-रोग और रक्त-रोग दूर होते हैं।

बैद्यनाथ त्रिभुवनकीर्ति रस—सर्दी, जुकाम, इन्फ्लुएँजा आदि की प्रचलित औषध है।

बैद्यनाथ त्रैलोक्य चिन्तामणि रस (सुवर्ण-मोती-युक्त)—नये-पुराने सब प्रकार के वात-रोगों में लाभदायक है। इससे अंगों का जकड़ना और उनमें आई हुई अशक्तता दूर होती है।

बैद्यनाथ दन्तोद्भेदगदान्तक रस—बच्चों के दाँत निकलने के समय हरे-पीले और पतले दस्त, उल्टी, अपच, ज्वर आदि की शिकायतें होती हैं, जिनमें यह बहुत फायदेमन्द है।

बैद्यनाथ नष्टपुष्पान्तक रस—स्त्रियों के लिए उपयोगी है। विशेष जानकारी वैद्यों से लें।

बैद्यनाथ नागार्जुनाभ्र रस—अनिद्रा, भ्रम, हृदय-दौर्बल्य आदि में उपयोगी है।

बैद्यनाथ नाराच रस—यह तीव्र विरेचन है। गुल्म, कब्जियत, प्लीहा, यकृत्-वृद्धि आदि उदर-रोगों में इसके व्यवहार से पेट साफ रहता है और रोगी को तुरत आराम पहुँचता है।

बैद्यनाथ नित्यानन्द रस—यह श्लीपद (फीलपाँव) की शास्त्रोक्त दवा है। कफ और वातजनित शोथ-रोगों में इसका व्यवहार होता है।

बैद्यनाथ नृपतिवल्लभ रस—मन्दाग्नि से पैदा होनेवाले रोगों में बहुत उपयोगी है। दुर्बल ग्रहणी-कला को यह जल्द ठीक करता है।

बैद्यनाथ पंचवक्त्र रस—वात-कफ-प्रधान ज्वर, जीर्ण-ज्वर, सन्निपात-ज्वर, इन्फ्लुएंजा, सर्वाङ्ग में दर्द, तन्द्रा, आलस्य आदि रोगों में इससे लाभ होता है।

बैद्यनाथ पाशुपत रस—मन्दाग्नि, शूल, संग्रहणी आदि को दूर कर अग्नि दीप्त करता है।

बैद्यनाथ पाण्डुपंचानन रस—पाण्डु, कामला, यकृत् तथा प्लीहा-वृद्धि में लाभदायक है।

बैद्यनाथ पीयूषवल्ली रस—संग्रहणी, अतिसार आदि विकारों में गुणकारी है।

बैद्यनाथ पुष्पधन्वा रस—स्त्रियों के लिए उपकारी है। जानकारी वैद्य से प्राप्त करें।

बैद्यनाथ पूर्णचन्द्र रस—इसके सेवन से शरीर पुष्ट और स्नायु-मण्डल मजबूत होते हैं।

बैद्यनाथ पूर्णचन्द्र रस बृहत् (सुवर्ण-युक्त)—असंयम के कारण होनेवाले रोगों में जब किसी दवा से लाभ नहीं हो, तो इसके प्रयोग से शीघ्र लाभ होता है। यह बहुत ही पौष्टिक है।

बैद्यनाथ प्रतापलंकेश्वर रस—प्रसव के बाद होनेवाली खाँसी, प्रसूत ज्वर, अतिसार, वायु-विकार, मन्दाग्नि आदि की बहुत अच्छी दवा है।

बैद्यनाथ प्रदरान्तक रस—चिकित्सक की सलाह से इसका प्रयोग करना चाहिए।

बैद्यनाथ प्रदररिपु रस—स्त्रियोपयोगी है। विशेष जानकारी चिकित्सक से लें।

बैद्यनाथ प्रवाल पंचामृत (मोती-युक्त)—इससे उदररोग, अम्ल-पित्त, गुल्म, यकृत्, प्लीहा-वृद्धि, अश्मरी, अजीर्ण, श्वास आदि रोग दूर होते हैं। पित्तशामक और रक्तवर्द्धक है।

बैद्यनाथ बंगेश्वर रस—इससे बल-पौरुष की वृद्धि होती है और असंयम-जनित विकार दूर होते हैं। शारीरिक कान्ति की वृद्धि के लिए सुप्रसिद्ध महौषधि है।

बैद्यनाथ बंगेश्वर रस बृहत् (सुवर्ण-मोती-युक्त)—इसके सेवन से नई-पुरानी सभी तरह की दुर्बलता दूर होती है। परम पौष्टिक और ओजवर्द्धक रसायन है।

बैद्यनाथ बसन्तकुसुमाकर रस (सुवर्ण-मोती-कस्तूरी-युक्त)—आयुर्वेद का यह सर्वश्रेष्ठ रसायन, सोना, मोती, अभ्रक, कस्तूरी आदि कीमती उपादानों से तैयार होता है और इसके उपयोग से कठिन-से-कठिन रोगों को भी दूर किया जाता है। यह हृदय तथा मस्तिष्क को स्वस्थ तथा बलवान बनाता है। रस-रक्तादि सप्त धातुओं को बढ़ाकर शरीर को पुष्ट और नीरोग रखता है। श्वास, अम्लपित्त, दुर्बलता आदि को मिटाकर जीर्ण-शीर्ण शरीर को नवीन शक्ति प्रदान करने में यह अत्युत्तम है।

बैद्यनाथ मधु बसन्तकुसुमाकर—गुण-धर्म बसन्तकुसुमाकर के समान ही है। बिना झंझट, इसे आसानी से तुरन्त लिया जा सकता है।

बैद्यनाथ बसन्ततिलक रस (सुवर्ण-मोती-युक्त)—गुण-धर्म की जानकारी वैद्य से प्राप्त करें।

बैद्यनाथ बसन्तमालती रस (सुवर्ण-मोती-युक्त)—पुराने बुखार-खाँसी, शारीरिक क्षीणता, दमा, मन्दाग्नि, कमजोरी आदि में बहुत ही फायदेमन्द है।

बैद्यनाथ बहुमूत्रांतक रस—गुण-धर्म की जानकारी के लिए वैद्य से परामर्श करें।

बैद्यनाथ बालरोगान्तक रस—इससे बच्चों को सब तरह के आमदोष, दस्त, खाँसी, सर्दी, जुकाम, पसली चलना तथा दाँत निकलने के समय के उपद्रव दूर होते हैं।

बैद्यनाथ बालार्क रस—यह बालकों के वात और कफ के विकार तथा पतले दस्त, उल्टी, ज्वर, कृमि-विकार आदि में बहुत फायदेमन्द है।

बैद्यनाथ बालार्क रस (केशर-गोरोचन-युक्त)—गुण उपर्युक्त के समान है। केशर-गोरोचन-युक्त होने के कारण जल्द लाभ पहुँचाता है।

बैद्यनाथ बोलबद्ध रस—बवासीर, खाँसी, दस्त आदि किसी भी रोग में, शरीर के किसी भी भाग से खून क्यों न आता हो, यह दवा उसमें लाभकारी है।

बैद्यनाथ भुवनेश्वर रस—सब प्रकार के आँव, पेचिश, अतिसार, संग्रहणी में लाभकारी है।

बैद्यनाथ मकरध्वज गुटिका (सुवर्ण-कस्तूरी-युक्त)—इसके सेवन से शरीर का वजन बढ़ता है। सुनिद्रा और मानसिक बल प्राप्त होता है। यह शारीरिक शक्ति-वृद्धि के लिए विशेष उपयोगी रसायन है।

बैद्यनाथ मधुमालिनी बसन्त—विषम ज्वर, जीर्णज्वर, खाँसी एवं वायु-विकार को दूर कर अग्नि एवं बल को बढ़ाता है। गर्भ-पोषक तथा पुष्टिकारक है।

बैद्यनाथ मन्मथ रस—यह शरीर की दुर्बलता नष्ट कर बल-विक्रम को बढ़ाता है।

बैद्यनाथ महागन्धक रस—इसके व्यवहार से अतिसार, पतले दस्त, संग्रहणी, बच्चों के हरे-पीले दस्त आदि रोग अच्छे होते हैं। यह पुराने आँव की अनुभूत दवा है।

बैद्यनाथ महाज्वरांकुश रस—विषम ज्वर, पारी से आनेवाला ज्वर, जीर्णज्वर आदि में प्रयोग करने पर बुखार जल्द उतरता है।

बैद्यनाथ महामृत्युञ्जय रस—कफ-प्रधान एवं कीटाणु-जनित मलेरिया में इसका प्रयोग होता है। इससे मल-मूत्रावरोध दूर होता और पसीना आकर बुखार उतर जाता है।

बैद्यनाथ महालक्ष्मीविलास रस (सुवर्ण-युक्त)—फेफड़े की दुर्बलता, बार-बार होने-वाली सर्दी, जुकाम, नजला, न्यूमोनिया, इन्फ्लुएंजा और मियादी बुखार में लाभदायक हैं।

बैद्यनाथ महावात-विध्वंसन रस—कठिन वात-रोगों, अंगों में आई हुई अशक्तता, ग्रन्थिक-सन्निपात (प्लेग), आमवात आदि रोगों की सफल महौषधि है।

बैद्यनाथ महामृगांक रस (सुवर्ण-मोती-युक्त)—पुराने बुखार-खाँसी की प्रसिद्ध महौषधि है। श्वास-यंत्रों की विकृति को दूर कर उनकी क्रिया को नियमित करता है।

बैद्यनाथ मुक्तापंचामृत रस (मोती-युक्त)—यह कास-श्वास, पुराने बुखार, फेफड़े की कमजोरी और क्षीणताजन्य उपद्रवों में गुणकारी है। इससे शरीर को उत्तम कैल्शियम प्राप्त होता है।

बैद्यनाथ मृगांक रस (सुवर्ण-मोती-युक्त)—यह पुराने खाँसी-बुखार, कफयुक्त खाँसी, रक्त-मिश्रित खाँसी, रक्त-पित्त आदि कठिन रोगों में विशेष लाभकारी है।

बैद्यनाथ मृत्युञ्जय रस—तेज-से-तेज बुखार को पसीना लाकर शीघ्रातिशीघ्र उतारता है।

बैद्यनाथ योगेन्द्र रस (सुवर्ण-मोती-युक्त)—यह पुराने और जटिल रोगों की श्रेष्ठ दवा है। वायु-विकृति के कारण अनिद्रा, बेचैनी, अंगों की अशक्तता, घबराहट आदि उपद्रव उठ खड़े होते हैं, इस अवस्था में इस रस के उपयोग से बड़ा लाभ होता है।

बैद्यनाथ याकूती (सुवर्ण-मोती-केशर-कस्तूरी-अम्बर-युक्त)—नाड़ी-क्षीणता, शरीर का ठण्डा पड़ जाना, पसीना आना, दम उभड़ जाना आदि में यह शीघ्र लाभ करता है। यह दुर्बलता-नाशक और पुष्टिकारक है।

बैद्यनाथ रत्नगर्भपोट्टली (सुवर्ण-मोती-युक्त)—स्वर्ण, हीरा, मोती आदि बहुमूल्य द्रव्यों से बननवाला यह रस पुराने बुखार तथा खाँसी, श्वास आदि भयंकर रोगों का नाश करता है। यह बल-वर्धक रसायन है।

बैद्यनाथ रत्नगिरी रस (सुवर्ण-युक्त)—यह रस सब प्रकार के नवीन और जीर्णज्वर, खाँसी, श्वास, दुर्बलता, रक्त-पित्त और अम्लपित्त की अत्यन्त प्रसिद्ध दवा है।

बैद्यनाथ रसपीपरी—बालरोगों की प्रसिद्ध दवा है। यह बालकों के ज्वर, खाँसी, जुकाम, उल्टी, पतले दस्त एवं दाँत उठने की तकलीफ को दूर कर माँ की तरह उनकी रक्षा करती है।

बैद्यनाथ रसपीपरी (कस्तूरी-युक्त)—उपरोक्त से विशेष गुणकारी है।

बैद्यनाथ रसमाणिक्य—यह सब प्रकार के रक्त-विकार एवं चर्म-रोग को नाश करने में प्रसिद्ध है। किसी भी तरह के रक्त-विकार में यह बहुत ही अधिक फायदा करता है।

बैद्यनाथ रसराज रस (सुवर्ण-युक्त)—वात-विकार, विशेषतः शारीरिक अंगों की अशक्तता, आक्षेपक, कानों में आवाज होने आदि पर इसका उपयोग किया जाता है।

बैद्यनाथ रसादि रस—ज्वर की गर्मी विशेष बढ़ जाने से प्यास, दाह, चक्कर, वमन आदि दोष जब उत्पन्न होते हैं, तब इसका प्रयोग किया जाता है। यह पित्त-शामक है।

बैद्यनाथ राजमृगांक रस (सुवर्ण-युक्त)—नई-पुरानी खाँसी, क्षीणता, रक्तपित्त, श्वास, कास आदि में इससे विशेष लाभ होता है। यह शारीरिक और मानसिक बल प्रदान करता है।

बैद्यनाथ रामबाण रस—यह बदहजमी और मन्दाग्निमूलक रोगों की अच्छी औषधि है।

बैद्यनाथ लघुमालिनीबसन्त रस—इसमें सुवर्ण-मालिनीवसन्त के गुण अल्प मात्रा में हैं।

बैद्यनाथ लक्ष्मीनारायण रस—बालकों का कमेड़ा, दस्त तथा तीव्र ज्वर की श्रेष्ठ दवा हैं।

बैद्यनाथ लक्ष्मीविलास रस (रसेन्द्र०कास)—सर्दी, खाँसी, श्वास, जुकाम आदि में विशेष लाभकारी हैं। इन्फ्लुएंजा में शीघ्र और स्थायी लाभ करता है।

बैद्यनाथ लक्ष्मीविलास रस (नारदीय)—निमोनिया और मियादी बुखार में इसके प्रयोग से ज्वर पाचन होकर मियाद के अनुसार उतर जाता है। इससे सर्दी, जुकाम, हरारत, इन्फ्लुएंजा आदि में भी बहुत फायदा होता है।

बैद्यनाथ लीलाविलास रस—यह प्यास, बमन, शूल, हृदय की जलन, नेत्र-दाह और अम्लपित्त की उत्तम दवा है। इससे यकृत् की क्रिया ठीक होती है।

बैद्यनाथ लोकनाथ रस—पुराने खाँसी-बुखार, अतिसार, संग्रहणी आदि में लाभदायक है।

बैद्यनाथ लोकनाथ रस बृहत्—यकृत् और तिल्ली के विकारों को नष्ट करने में उपयोगी है। कफ-प्रधान रोगों में कफ-शोषण के लिए भी इसका व्यवहार किया जाता है।

बैद्यनाथ लौह रसायन—यह पाण्डु, मन्दाग्नि, श्वास, कास, वात-कफजन्य रोग, संग्रहणी, बवासीर आदि को नष्ट करता है तथा शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाता है।

बैद्यनाथ वातकुलान्तक रस (कस्तूरी-युक्त)—सभी प्रकार के वातरोगों की श्रेष्ठ दवा है।

बैद्यनाथ वातचिन्तामणि रस बृहत् (सुवर्ण-मोती-युक्त)—यह कठिन वातरोगों और सर्वांग वेदना आदि की प्रसिद्ध शास्त्रीय महौषधि है। हृदय और मस्तिष्क को बल प्रदान करता है।

बैद्यनाथ वातगजांकुश रस—कठिन वात-विकारों में यह बहुत गुणदायक है। वात-विकार के साथ ही यह बढ़े हुए मेद को भी कम करता है।

बैद्यनाथ वातविध्वंसन रस—इसके सेवन से शीतांग सन्निपात, वायु और कफ के विकार, सर्दी लग जाने से होनेवाले कष्ट तथा शूल, श्वास, कास आदि रोग दूर होते हैं।

बैद्यनाथ वातारि रस—सभी प्रकार के वात-विकारों में इसका उपयोग किया जाता है।

बैद्यनाथ विद्याधराभ्र रस—इसके सेवन से परिणामशूल (भोजन के बाद होनेवाला दर्द), पेट का साधारण दर्द, पुरानी मन्दाग्नि, अम्लपित्त, संग्रहणी आदि रोग दूर होते हैं।

बैद्यनाथ शक्रवल्लभ रस (सुवर्ण-युक्त)—पौष्टिक रसायन है। शारीरिक क्षीणता, दुर्बलता आदि में स्थायी लाभ करता है। जाड़े के दिनों में यह विशेष सेवनीय है।

बैद्यनाथ शशिशेखर रस—अन्त्रवृद्धि की महौषधि है। विशेष जानकारी वैद्य से प्राप्त करें।

बैद्यनाथ शंखोदर रस—यह अतिसार, आमातिसार (दस्तों के साथ आँव आने में) तथा आमजनित शूल में बहुत फायदा करता है। यह दवा ग्राही है।

बैद्यनाथ शिरःशूलादिवज्र रस—सब प्रकार के सिर-दर्द की निर्दोष और लाभकारी दवा है। किसी भी कारण से सिर-दर्द होता हो और किसी दवा से लाभ नहीं होता हो, तो इसका प्रयोग करना चाहिए।

बैद्यनाथ शीतपित्त-भंजन रस—शीतपित्त, उदर्द तथा पित्तविकारों में लाभदायक है।

बैद्यनाथ शीतभंजी रस—इसके सेवन से जाड़ा देकर आनेवाला तथा एकतरा, तिजारी आदि पारी का मलेरिया बुखार शीघ्र दूर हो जाता है। यह दवा दस्तावर है।

बैद्यनाथ शूलकुठार रस—अजीर्ण अथवा अन्य वायुजनित पेट-दर्द की यह उत्तम दवा है।

बैद्यनाथ शूलगजकेशरी रस—उदर-शूल अनेक तरह के होते है, यह दवा सभी में गुणकारी है। पेट-दर्द के रोगी इससे फायदा उठावें।

बैद्यनाथ शृंगाराभ्र रस—सूखी और कफयुक्त खाँसी, दोनों में यह समान गुणकारी है।

बैद्यनाथ श्वासकुठार रस—यह दवा खाने और सूंघने, दोनों कामों में आती है। खाँसी-श्वास में खाने से तत्काल लाभ होता है। श्वास, दमा में सभी वैद्यों द्वारा इसका सफल प्रयोग होता है।

बैद्यनाथ श्वासचिन्तामणि रस बृहत् (सुवर्ण-मोती-युक्त)—पुराने और कठिन श्वास रोगों म उत्तम लाभदायक है। इन्जेक्शन से हताश रोगी भी इससे आराम पाते हैं।

बैद्यनाथ श्लेष्मकालानल रस—कफाधिक्य से उत्पन्न रोगों की उत्तम दवा है।

बैद्यनाथ सन्निपातभैरव रस—ज्वर और सन्निपात के तीव्र विकारों में लाभदायक है।

बैद्यनाथ सर्वाङ्गसुन्दर रस—यक्ष्माधिकार (सुवर्ण-मोती-युक्त)—सब प्रकार के पुराने खाँसी-युक्त ज्वर, सन्निपात ज्वर, संग्रहणी आदि रोगों को दूर कर फेफड़ों को बल देता है।

बैद्यनाथ स्मृतिसागर रस—स्मरण-शक्ति को बढ़ाता है।

बैद्यनाथ सिद्धप्राणेश्वर रस—ज्वरातिसार में इस रस के सेवन से विशेष फायदा होता है।

बैद्यनाथ सुधानिधि रस (शोथ)—सब प्रकार के शोथ-रोगों के लिए अति उपयोगी औषधि है। इसके सेवन-काल में पुनर्नवादि तैल की मालिश बहुत लाभदायक है।

बैद्यनाथ सुवर्णभूपति रस (सुवर्ण-युक्त)—यह आमवात, उरुस्तम्भ, कम्पवात, कमर का दर्द, गुल्म, संग्रहणी, उदर-रोग, पथरी, कब्ज, विष-विकार आदि रोगों में उपयोगी है।

बैद्यनाथ सुवणमालिनीबसन्त बहत् (सुवर्ण-मोती-केशर-कस्तूरी-युक्त)—ज्वर-युक्त पुरानी खाँसी, शारीरिक क्षीणता, श्वास आदि में विशेष लाभदायक और पुष्टिकारक है।

बैद्यनाथ सुवणमालिनीबसन्त लघु (सुवर्ण-मोती-युक्त)—उपर्युक्त रस का यह लघु रूप है, साधरण तौर पर ऊपर वर्णित सभी रोगों में उपयोगी है।

बैद्यनाथ सूतशेखर रस नं० १ ( )—अम्लपित्त की प्रसिद्ध महौषधि है। खट्टा वमन, गले की जलन, भ्रम, मन्दाग्नि, पतला दस्त आदि में बहुत उपयोगी है।

बैद्यनाथ सूतशेखर रस—इसमें नं० १ के गण अल्प मात्रा में हैं। उपर्युक्त रोगों की प्रारम्भिक अवस्था में इसका उपयोग करना चाहिए।

बैद्यनाथ सूतकारि रस—स्त्रियों के बच्चा होने के बाद की खाँसी, प्यास की अधिकता, अरुचि, शोथ आदि विकार इससे दूर होते हैं।

बैद्यनाथ सूतिकाविनोद रस बृहत्—बच्चा होने के बाद स्त्रियों को इसका सेवन करना चाहिए। इससे प्रसूत ज्वर, शूल, विष्टम्भ और अजीर्ण आदि में बहुत लाभ होता है।

बैद्यनाथ सूतिकाभरण रस (सुवर्ण-युक्त)—गुण-धर्म ऊपर के समान है।

बैद्यनाथ सोमनाथ रस—बार-बार दुर्गन्ध-रहित निर्मल पेशाब आने पर उपयोगी है।

बैद्यनाथ सोमनाथ रस वृहत् (सुवर्ण-युक्त)—यह स्त्रियों के लिए विशेष गुणकारी है। विशेष जानकारी के लिए वैद्य से परामर्श लें।

बैद्यनाथ सोमेश्वर रस—बहुमूत्र आदि की लाभकारी दवा है।

बैद्यनाथ हृदयार्णव रस—हृदय को बलवान बनानेवाली उत्तम दवा है। गुण-धर्म की विशाष जानकारी के लिए वैद्य से परामर्श लें।

बैद्यनाथ हिंगुलेश्वर रस—यह वात-ज्वर और नये ज्वर में उपयोगी है। तीव्र ज्वर, देह-दर्द तथा जोड़ों के कठिन वेदनायुक्त आम-वात में भी इससे लाभ होता है।

बैद्यनाथ हेमगर्भ पोट्टली (सुवर्ण-मोती-युक्त)—यह रसायन, दीपन, त्रिदोषनाशक तथा अग्निवर्द्धक है। इसके सेवन से पुराने खाँसी-बुखार, शारीरिक क्षीणता, संग्रहणी आदि कठिन रोग अच्छे होते हैं।

बैद्यनाथ हेमनाथ रस (सुवर्ण-युक्त)—बहुमूत्र में शीघ्र लाभ करता है। वृक्क और स्नायुमंडल की दुर्बलता को दूर करने में मुफीद है।

बैद्यनाथ हेमाभ्रक सिन्दूर (सुवर्ण-युक्त)—ज्वरयुक्त कास और पाण्डुरोग-नाशक पौष्टिक रसायन है। इससे मानसिक दुर्बलता मिटती है और कान्ति बढ़ती है।



शोधित द्रव्य

शास्त्रीय पद्धति द्वारा शोधित ये द्रव्य हम अपने काम के लिए तैयार करके रखते हैं और उन्हीं में से बिक्री भी की जाती है।

बैद्यनाथ शोधित शिलाजीत—यह पौष्टिक और बलदायक उत्तम दवा है।

शोधित कज्जली
" (षड्गुण पारद)
" गन्धक
" पारद

शोधित पारद षड्गुणबलि०
" मन:शिला
" हरिताल तबकिया
" हिंगुल

Baidyanath बैद्यनाथ

लौह मण्डूर

शरीर में रक्त की कमी को पूरा करनेवाले द्रव्यों में लौह और मण्डूर प्रधान हैं। आयुर्वेदीय औषधियों में इसलिए लौह-मिश्रित दवाओं को बड़ा महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। उचित मात्रा में इसके सेवन से बहुत लाभ होता है। लौह के मल को ही मण्डूर कहते हैं। अतएव, लोहे का गुण तो इसमें रहता ही है, किन्तु लौह से यह अधिक सौम्य होता है। दवाओं के निर्माण में कम-से-कम सौ वर्ष पुराना मण्डूर ही प्रयुक्त करना चाहिए। कहना नहीं होगा कि बैद्यनाथ औषधियों में सौ वर्ष से भी अधिक पुराना मण्डूर ही प्रयुक्त होता है।

बैद्यनाथ अम्लपित्तान्तक लौह—अम्लपित्त (Acidity), पित्तजन्य शूल, यकृत्-शूल, पेशाब की जलन और पेट-दर्द में लाभदायक है। पित्त-विकार को यह जल्द दूर करता है।

बैद्यनाथ कार्श्यहर लौह—शरीर को मोटा-ताजा करने के लिए यह प्रयुक्त होता है।

बैद्यनाथ कालमेघनवायस—जीर्णज्वर, विषमज्वर और मलेरिया ज्वर के बाद की कमजोरी, पाण्डु और यकृत्-वृद्धि को दूर करनेवाली यह उत्तम दवा है।

बैद्यनाथ चन्दनादि लौह—जिन्हें हल्का-हल्का ज्वर रहता हो, उन्हें इसका उपयोग करना चाहिए। शिरोवेदना, प्रदाह, नेत्रदाह, मन्दज्वर तथा जीर्णज्वर की उत्तम दवा है।

बैद्यनाथ चन्द्रामृत लौह—खाँसी, सूखी हो या कफ-युक्त दोनों में गुणकारी है।

बैद्यनाथ तारा मण्डूर—भोजन पचने के समय के भयंकर दर्द, पाण्डु, कामला, मन्दाग्नि शोथ, संग्रहणी, गुल्म आदि रोग इसके सेवन से दूर होते हैं। परिणामशूल में भी लाभदायक है।

बैद्यनाथ ताप्यादि लौह नं० १—पाण्डु, रक्ताल्पता, विषम-ज्वर, मलावरोध, शोथ, कृमि-विकार, त्वचा के रोग एवं शारीरिक दुर्बलता आदि में अति गुणकारी है।

बैद्यनाथ ताप्यादि लौह (रौप्यमाक्षिक-युक्त)—उपर्युक्त नं० १ से किंचित् न्यून गुण-युक्त है।

बैद्यनाथ त्रिफला मण्डूर—इससे पाण्डु, कामला, कब्जियत आदि पेट के रोग दूर होते हैं।

बैद्यनाथ धात्री लौह—भोजन पचने के समय जब अधिक खटाई बनने लगती है, तो शरीर में अनेक विकार उत्पन्न हो जाते हैं, जिसे अम्लपित्त कहते हैं। अम्लपित्त की यह बहुत अच्छी दवा है।

बैद्यनाथ नवायस लौह—रक्ताल्पता (Anaemia) की दवा है। यकृत् और बाल-रोगों म विशप लाभदायक है। शरीर में खून बढ़ाने के लिए यह सुप्रसिद्ध है।

बैद्यनाथ नवायस मण्डूर—खून को बढ़ाकर यह शरीर में रक्त की कमी को दूर करता है।

बैद्यनाथ प्रदरान्तक लौह—यह स्त्रियों के लिए उपयोगी है। गुण-धर्म वैद्य से पूछें।

बैद्यनाथ प्रदरारि लौह—स्त्रियोपयोगी है। विशेष जानकारी वैद्य से प्राप्त करें।

बैद्यनाथ पिप्पल्यादि लौह—खाँसी, श्वास, हिक्का, प्यास आदि में उपयोगी है।

बैद्यनाथ पुनर्नवादि मण्डूर—शोथ-रोग (शरीर-सूजन) में यह बहुत गुणकारी है।

बैद्यनाथ मण्डूर वटक—कामला, पाण्डु, शोथ और उदर-विकारों में लाभदायक है।

बैद्यनाथ मेदोहर विडङ्गादि लौह—चर्बी और मेद के बढ़ने से ही मनुष्य मोटा होता है, जो एक रोग है। मेद को कम करने के लिए यह बहुत अच्छी औषधि है।

बैद्यनाथ यकृत्प्लीहारि लौह—जिगर और तिल्ली के विकारों की गुणकारी दवा है।

बैद्यनाथ यकृदरि लौह—जिगर (Liver) के विकारों में विशेष लाभदायक है।

बैद्यनाथ रक्तपित्तान्तक लौह—यह रक्त की गर्मी को शान्त करता है। मुख, गुदा, नाक आदि से बहनेवाले रक्त को रोकता है और कमजोरी दूर कर शरीर में ताकत बढ़ाता है।

बैद्यनाथ रोहितक लौह—बढ़ी हुई तिल्ली, लीवर, पाण्डु-रोग, शोथ और जीर्णज्वर में अच्छा फायदा करता है। इसके सेवन से शरीर में नया खून पैदा होता है।

बैद्यनाथ विडङ्गादि लौह—पेट की कृमि, अरुचि और मन्दाग्नि की बहुत अच्छी दवा है।

बैद्यनाथ विषमज्वरान्तक लौह पुटपक्व (सुवर्ण-मोती-युक्त)—ज्वरमात्र की यह अच्छी औषधि है। मलेरिया, कालाज्वर आदि में यह विशेष लाभदायक सिद्ध होता है।

बैद्यनाथ विषमज्वरान्तक लौह—विषम ज्वर की शास्त्रीय दवा है। इसके सिवा प्लीहा, गुल्म आदि रोगों में भी उपयोगी है। यह अग्नि को खूब दीप्त करता है।

बैद्यनाथ शिलाजत्वादि लौह—यह रक्तक्षय, खून की कमी, जीर्णज्वर, पाण्डु प्रभृति रोगों को दूर कर शरीर में नया शुद्ध रक्त उत्पन्न करता है।

बैद्यनाथ शोथारि लौह—शरीर के किसी भी भाग में सूजन होने पर इससे लाभ होता है। यह दीपन, पाचन, कफ-नाशक और रक्त-वर्द्धक है।

बैद्यनाथ शोथारि मण्डूर—शोथ-रोग में सभी वैद्यों द्वारा यह व्यवहृत होता है।

बैद्यनाथ सप्तामृत लौह—आँखों के लिए परम उपयोगी है। इसके सेवन से दृष्टि-शक्ति बढ़ती है और आँखों की लाली, खाज आदि विकार दूर होते हैं।

बैद्यनाथ सर्वज्वरहर लौह बृहत् (सुवर्ण-युक्त)—यह सब प्रकार के ज्वरों में उपयोगी है। खास करके जीर्णज्वर और रक्ताल्पता नें बहुत फायदेमन्द है।

बैद्यनाथ सर्वज्वरहर लौह—गुण-बृहत् से कुछ न्यून है। सुवर्ण-रहित होने के कारण कुछ देर से लाभ पहुँचाता है।



बटी गोलियाँ

स्वादिष्ट और हाजमा करनेवाली गोलियाँ भोजन के बाद और रोगनाशक बटी सुबह-शाम मधु या गर्म जल आदि रोगानुकूल अनुपान के साथ १ से २ गोली तक लेनी चाहिए। जिन बटियों में कुचला या अफीम के योग हैं, उनकी खुराक १ गोली से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। पाचक बटी अनुपान के बिना भी चूसकर खाई जाती है।

बैद्यनाथ अग्नितुण्डी बटी—हाजमे के लिए प्रसिद्ध है। इसमें कुचला का मिश्रण है। पेट की वायु को जल्द शमन करती है। दीपन और पाचन है।

बैद्यनाथ अग्निवर्धक बटी—यह अत्यन्त स्वादिष्ट और पाचक बटी है। इसकी एक दो गोली खाते ही मुँह का जायका ठीक हो जाता है और भूख बढ़ जाती है।

बैद्यनाथ अपतन्त्रकारि बटी—अपतन्त्रक आदि कठिन-से-कठिन वात-रोगों में व्यवहृत होनेवाली यह एक विशेष फलप्रद महौषधि है।

बैद्यनाथ अर्शोघ्नी बटी—खूनी और वादी बवासीर की बड़ी उपयोगी महौषधि है। बवासीर के बढ़े हुए मस्से इसके सेवन से सूख जाते हैं। खून को तुरन्त बन्द करती है :

बैद्यनाथ एलादि बटी—सूखी खाँसी, पुरानी खाँसी, रक्तपित्त (मुँह से खून गिरना), बुखार, वमन, जी की घबराहट, स्वरभंग आदि में इससे बहुत और जल्द फायदा होता है।

बैद्यनाथ कर्पूरादि बटिका—मुँह में छाले पड़ना या बदबू आना, दाँतों से पीब निकलना, मसूढ़े फूल जाना तथा अन्य मुख-रोगों में यह बटिका बहुत फायदेमन्द है।

बैद्यनाथ कांकायन बटी (गुल्म)—गुल्म आदि रोगों में अत्यन्त लाभकारी है।

बैद्यनाथ कांकायन बटी (बवासीर)—खूनी और बादी, दोनों तरह के बवासीर में लाभदायक हैं। इससे ववासीर के मस्से जल्द सूख जाते हैं।

बैद्यनाथ कुटजघन बटी—ज्वर-युक्त अतिसार और संग्रहणी में इससे लाभ होता है। आँव, मरोड़ (Disentery) की प्रसिद्ध दवा है। खूनी बवासीर में भी गुणकारी है।

बैद्यनाथ कृमिघातिनी बटी—पेट में होनेवाले कृमि (कीड़ों) की अति लाभदायक दवा है।

बैद्यनाथ खदिरादि बटी—स्वरभंग, खाँसी और मुँह में छाले पड़ जाने पर या ओठों के विकार में इस गोली को चूसने से बहुत आराम मिलता है।

बैद्यनाथ चन्द्रकला बटी (केशर-युक्त)—मूत्राशय के विकार में इससे बहुत लाभ होता है।

बैद्यनाथ चन्दनादि बटी—जलन को दूर कर पेशाब खुलासा लाती और आराम देती है।

बैद्यनाथ चन्द्रप्रभा बटी—यह लौह, स्वर्णमाक्षिक भस्म एवं शिलाजीत-युक्त होने के कारण एलब्यूमिन आदि सभी प्रकार के विकारों को दूर करती है। स्त्री-पुरुष दोनों के लिए यह समान उपयोगी है। शरीर-पोषण की इसमें बड़ी शक्ति है।

बैद्यनाथ चन्द्रप्रभा बटी (लौह-शिलाजीत-रहित)—गुण-धर्म ऊपर के समान है।

बैद्यनाथ चित्रकादि बटी—अरुचि, आँव, पेचिश, संग्रहणी आदि रोगों को दूर करती है।

बैद्यनाथ जातिफलादि बटी (संग्रहणी)—यह अतिसार, संग्रहणी के दस्तों में खून और आँव आने पर बहुत गुणकारी है।

बैद्यनाथ जातिफलादि बटी (स्तम्भक)—गुण-धर्म के विषय में वैद्य से परामर्श करें।

बैद्यनाथ दुग्ध बटी (शोथ)—सूजन, मन्दाग्नि और पाण्डु-रोगों में इससे लाभ होता है।

बैद्यनाथ दुग्ध बटी (संग्रहणी)—यह स्तम्भक, ग्राही, आमपाचक तथा शोथघ्न दवा है। इससे प्रवाहिका, अतिसार तथा संग्रहणी में बहुत और जल्द लाभ होता है।

बैद्यनाथ पंचतिक्तघन बटी—यह मलेरिया की अच्छी आयुर्वेदीय दवा है। कुनाइन के सेवन से होनेवाली बाद की खराबी इस दवा में नहीं होती।

बैद्यनाथ प्रभाकर बटी—वातवाहिनियों की विकृति, रक्ताल्पता आदि को दूर करती है।

बैद्यनाथ प्राणदा गुटिका—वादी और खूनी किसी भी तरह के बवासीर के लिए महौषधि है।

बैद्यनाथ प्लीहारि बटी—तिल्ली (प्लीहा) की उत्कृष्ट दवा है। इसके सेवन से बढ़ी हुई प्लीहा की वजह से होनेवाले ज्वर दूर होते हैं और शरीर में ताकत आती है।

बैद्यनाथ ब्राह्मी बटी (कस्तूरी-सुवर्ण-मोती-अम्बर-केशर-युक्त)—सन्निपात ज्वर, मोती-झरा और मियादी बुखार में वायु-विकृति या अधिक तापमान के कारण बैचेनी के लक्षण होने पर इससे तत्काल लाभ होता है। दिमागी कमजोरी को भी यह जल्द दूर करती है।

बैद्यनाथ ब्राह्मी बटी (बुद्धि-वर्द्धक)—स्मरण-शक्ति और बुद्धि की वृद्धि करने में सर्वश्रेष्ठ है। दिमागी काम करनेवालों के लिए विशेष उपयोगी है।

बैद्यनाथ भागोत्तर गुटिका—यह सभी प्रकार की खाँसी और दमा की उत्तम दवा है।

बैद्यनाथ मकरध्वज बटी (कस्तूरी-युक्त)—सुप्रसिद्ध रसायन मकरध्वज में कस्तूरी आदि बहुमूल्य उपादान मिश्रित कर यह बटी बनाई गई है। इसके व्यवहार से शक्ति और शारीरिक कान्ति की वृद्धि होती है।

बैद्यनाथ मरिचादि बटी—सूखी, गीली और गले की खराबी से उत्पन्न खाँसी में बहुत लाभकारी है। सर्दी, जुकाम और स्वरभंग को दूर करती है।

बैद्यनाथ महाशंख बटी—यह मन्दाग्नि, पेट-दर्द, आमदोष और संग्रहणी में लाभदायक है

बैद्यनाथ मुक्तादि बटी (सुवर्ण-मोती-केशर-गोरोचन-युक्त)—बालकों के ज्वर सूखा-रोग, दूध न पचना, पतले दस्त, खाँसी आदि में फायदेमन्द है। यह मस्तिष्क को बल देनेवाली है।

बैद्यनाथ मेहमुद्गर बटी—इसके गुण-धर्म की पूरी जानकारी वैद्य से प्राप्त करें।

बैद्यनाथ रजःप्रवर्त्तनी बटी—स्त्रियों के लिए बहुत लाभकारी है।

बैद्यनाथ राज बटी (गंधक बटी)—भोजन अच्छी तरह पचा कर दस्त साफ लाती है और पेट की वायु (गैस) को नष्ट करती है। भोजनोपरान्त दो-तीन गोली खानी चाहिए।

बैद्यनाथ लवंगादि बटी—कफ-खाँसी में फायदेमन्द है। एक-दो गोली मुँह में रखकर चूसें।

बैद्यनाथ लशुनादि बटी—अजीर्ण के कारण पेट में अधिक वायु होने पर लाभकारी है।

बैद्यनाथ विषमुष्टयादि बटी—विषम-ज्वर, जीर्णज्वर, पेट-दर्द आदि में लाभ करती है।

बैद्यनाथ वृद्धिवाधिका बटी—चिकित्सक की सलाह से इसका व्यवहार करें।

बैद्यनाथ व्योषादि बटी—सर्दी, जुकाम, नजला, खाँसी, स्वरभंग में गुणकारी है। इसे मुंह में रखकर चूसना चाहिए।

बैद्यनाथ शंख बटी—अजीर्ण, मन्दाग्नि, पेट-दर्द आदि में इससे बहुत लाभ होता है।

बैद्यनाथ शिलाजत्वादि बटी—इसके सेवन से शरीर को ताकत मिलती है और याददाश्त की कमी आदि रोग दूर होते हैं।

बैद्यनाथ शिलाजत्वादि बटी (सुवर्ण-युक्त)—यह उपर्युक्त से विशेष गुणयुक्त है।

बैद्यनाथ शुक्रमातृका बटी—इसके सेवन से अश्मरी आदि रोग दूर होते हैं। इससे शरीर में रक्ताणुओं की वृद्धि होती है तथा मांसग्रन्थियों को ताकत मिलती है।

बैद्यनाथ शूलवर्जिनी बटी—पेट-दर्द के रोगियों के लिए यह बहुत उपयोगी है। आमवात, कामला आदि रोगों में भी इसका उपयोग होता है।

बैद्यनाथ संजीवनी बटी—अजीर्ण, मन्दाग्नि, ज्वर, गुल्म, हैजा, पतले दस्त, इन्फ्लुएंजा, निमोनिया, सर्दी, जुकाम आदि में गुणकारी है।

बैद्यनाथ संशमनी बटी—पित्त-विकार, ज्वर के बाद की कमजोरी, हृदय-दौर्बल्य आदि में महोपकारी है।

बैद्यनाथ सर्पगन्धाघन बटी—सर्पगन्धा बड़ी से प्रस्तुत इस दवा से अच्छी नींद आती है।

बैद्यनाथ सारिवादि बटी—यह कान के बहने, गूँजने और कम सुनने आदि में गुणकारी है। धमनी-विकार के कारण होनेवाले कर्ण-रोगों की खास दवा है।

बैद्यनाथ सौभाग्य बटी (प्रसूत)—बिहार-प्रदेश में सोहाग बटी के नाम से प्रचलित है और प्रसूता के लिए परम गुणकारी है। प्रसूतजन्य विकारों से प्रसूता को यह बचाती है।

बैद्यनाथ सौभाग्य बटी—सन्निपात की हालत में यह विशेष उपयोगी है। प्रायः सभी वैद्य के द्वारा इसका उपयोग किया जाता है।

बैद्यनाथ हिंगुकर्पूरादि बटी (कस्तूरी-युक्त)—सन्निपात की अवस्था में हाथ-पाँव काँपना, कपड़े फेंक कर उठ बैठना आदि वातविकारों तथा निमोनिया में गुणकारी है।



पर्पटी

गुण-धर्म—रसायनकल्प में पर्पटी का बहुत महत्वपूर्ण स्थान माना गया है। जब अन्य औषधियों से कुछ भी लाभ नहीं होता, तब पर्पटीकल्प से आशानुसार फल प्राप्त होता है। परन्तु, पर्पटी कल्प से तभी पूर्ण लाभ हो सकता है, जब वह संस्कारित पारद और गन्धक द्वारा पूर्ण शास्त्रीय विधि से बनाई गई हो। ***वैद्यनाथ*** पर्पटी विशुद्धता का पूरा ख्याल रखकर तैयार की जाती है, अतः इससे पूर्ण लाभ निश्चित है।

विशेष—साधारण संस्कारित पारद की अपेक्षा अष्टसंस्कारित पारद द्वारा तैयार की हुई पर्पटियाँ अधिक गुणदायक साबित होती हैं। अष्टसंस्कारित पारद से तैयार की गई सभी पर्पटियों के मूल्य कुछ अधिक हैं।

वैद्यनाथ **पंचामृत पर्पटी**—संग्रहणी-रोग की प्रसिद्ध महौषधि है। अतिसार, पाण्डु, अरुचि, मन्दाग्नि, अम्लपित्त, शूल और दमा में भी बहुत लाभदायक सिद्ध होती है।

वैद्यनाथ **पंचामृत पर्पटी (अष्टसंस्कारित पारद)**—उपर्युक्त से अधिक गुणदायक है।

वैद्यनाथ **विजय पर्पटी (सुवर्ण-मोती-युक्त)**—कष्टसाध्य संग्रहणी, अतिसार, क्षीणता, विषमज्वर, पाण्डु, तिल्ली, जलोदर, शोथ, परिणामशूल अम्लपित्त आदि की उत्कृष्ट दवा है।

वैद्यनाथ **विजय पर्पटी (अष्टसंस्कारित पारद)**—उपर्युक्त से अधिक गुणदायक है।

वैद्यनाथ **बोल पर्पटी**—रक्तपित्त, खूनी बवासीर और गिरते हुए खून को बन्द करती है।

वैद्यनाथ **बोल पर्पटी (अष्टसंस्कारित पारद)**—उपर्युक्त से अधिक गुणदायक है।

वैद्यनाथ **रस पर्पटी**—मन्दाग्नि, संग्रहणी, खून की कमी एवं अम्लपित्त में लाभदायक है।

वैद्यनाथ **रस पर्पटी (अष्टसंस्कारित पारद)**—उपर्युक्त से अधिक गुणदायक है।

वैद्यनाथ **लौह पर्पटी**—अम्लपित्त, मन्दाग्नि, पाण्डु तथा यकृत् की बीमारी और खून की कमी में लाभदायक है। संग्रहणी और आँव में भी फलप्रद है।

वैद्यनाथ **लौह पर्पटी (अष्टसंस्कारित पारद)**—पूर्वोक्त से अधिक गुणदायक है।

वैद्यनाथ **श्वेत पर्पटी**—मूत्रकृच्छ और हैजा आदि में पेशाब रुक जाने पर इसके व्यवहार से पेशाब उतर जाता है। यह अति मूत्रल-प्रस्रावक दवा है।

वैद्यनाथ **स्वर्ण पर्पटी (सुवर्ण-युक्त)**—विधिपूर्वक सेवन करने से इससे कई सेर दूध पचाना हजम हो सकता है। पुराने आँव-पेचिश, संग्रहणी, पाण्डु रोग आदि की महौषधि है।

वैद्यनाथ **स्वर्ण पर्पटी (अष्टसंस्कारित पारद)**—उपर्युक्त से अधिक गुणदायक है।



गुग्गलु

चिकित्सा-जगत् में गुग्गुलु-घटित दवाओं का महत्वपूर्ण स्थान माना गया है। लेकिन, शास्त्रों की विधि से शोधित एवं लक्षाघात गुग्गुलु से ही यथार्थ लाभ होता है। बाजारू, सड़े-गले गुग्गुलु द्वारा निर्मित औषधि में वास्तविक शक्ति नहीं पाई जाती। हमारे यहाँ उत्तम श्रेणी के गुग्गुलु को शास्त्रीय नियम के अनुसार शोधित कर, औषधि-निर्माण के काम में लिया जाता है। अतः इनसे पूर्ण लाभ निश्चित है।

बैद्यनाथ कांचनार गुग्गुलु—किसी भी प्रकार की अपची या ग्रन्थि में लाभदायक है।

बैद्यनाथ कैशोर गुग्गुलु—खून की खराबी के कारण शरीर में फोड़ा-फुन्सी, पीड़िका आदि व्याधियों में इससे फायदा होता है।

बैद्यनाथ गोक्षुरादि गुग्गुलु—इसके सेवन से पथरी आदि कठिन रोग दूर होते हैं।

बैद्यनाथ त्रयोदशांग गुग्गुलु—यह गृध्रसी आदि भयंकर वात-विकारों में फायदेमन्द है।

बैद्यनाथ त्रिफला गुग्गुलु—भगन्दर, गुल्म, सूजन और बवासीर आदि रोगों में इस दवा के सेवन से भरपूर लाभ होता है और पेट साफ रहता है।

बैद्यनाथ पंचतिक्त घृत गुग्गुलु—यह रक्त-शुद्धि के लिए अति उत्तम दवा है। पुराने घाव, फोड़े-फुन्सी और वात-रोग में भी लाभदायक है।

बैद्यनाथ पुनर्नवादि गुग्गुलु—इसके सेवन से शोथ, गृध्रसी तथा आमवात दूर होता है।

बैद्यनाथ रास्नादि गुग्गुलु—आमवात, जोड़ों के दर्द, गृध्रसी, शिरो-रोग, नाड़ीव्रण, नासूर आदि रोग तथा वात-विकारों में यह फायदा करता है।

बैद्यनाथ लाक्षादि गुग्गुलु—यह चोट के दर्द और टूटी हुई हड्डियों को जोड़ने एवं रक्त के जमाव को दूर करने में बहुत सहायक सिद्ध होता है।

बैद्यनाथ सप्तविंशति गुग्गुलु—भगन्दर, बवासीर, पुराने घाव, हृदयशूल, अन्त्र-वृद्धि, कुक्षि और वस्ति-विकार में विशेष लाभदायक है।

बैद्यनाथ सिंहनाद गुग्गुलु—गुल्म, उदर-रोग तथा कठिन आम-वात रोग की दवा है। बलीपलित (असमय में बाल पकना) रोग में भी यह अच्छा गुणकारी है।

बैद्यनाथ योगराज गुग्गुलु—आयुर्वेद-शास्त्र की इस महौषधि के गुण से वैद्यों के अलावा साधारण जनता भी परिचित है। वायु के कारण शरीर के किसी भी भाग में दर्द होने पर लोग योगराज गुग्गुलु का सेवन करते हैं। योगराज गुग्गुलु लक्षघात (एक लाख बार कूटा हुआ) होने से ही फायदा करता है। हमारे यहाँ एक महीने तक कुटाई होती है, जिसमें लाख बार से अधिक ही आघात होते हैं। इससे वात, कमर या मेरुदण्ड का दर्द, सर्वांग-शूल और पुराने और कष्टदायक वायु-रोग जल्द आराम होते हैं।

बैद्यनाथ महायोगराज गुग्गुलु—यह रस-सिन्दूर, बंग, अभ्रक, लौह इत्यादि की भस्म डालकर बनाया जाता है। साधारण योगराज गुग्गुलु से यह अधिक गुणदायक है।



चूर्ण

गुण-धर्म—आयुर्वेदशास्त्र में आसव-अरिष्ट की तरह चूर्ण भी रोग-निवारण का उत्तम औषधि है। चूर्ण जड़ी-बूटियों को सुखाकर तथा कूटकर बनाये जाते हैं। इसलिए उत्तम, ताजी और असली जड़ी-बूटियों और उनकी कुटाई के उत्तम प्रबन्ध और निगरानी पर ही उनका गुण निर्भर करता है। हमारे यहाँ पहाड़ों और जंगलों से ताजी और असली जड़ी-बूटियाँ मँगाई जाती हैं और उनके कूटने का प्रबन्ध भी उत्तम है, जिसकी निगरानी योग्य वैद्यों द्वारा होती है। इसलिए हम जोर देकर कह सकते हैं कि विधिपूर्वक सेवन करने पर **वैद्यनाथ** चूर्ण अवश्य फायदा करते हैं। **वैद्यनाथ** चूर्ण उत्तम शीलबन्द शीशियों में पैक होने के कारण बाहरी दूषित हवा के स्पर्श से दूर रहते हैं, अतः वे बहुत दिन तक खराब नहीं होते।

सेवन-विधि—साधारण चूर्ण सुबह खाली पेट, स्वादिष्ट और अग्निवर्द्धक चूर्ण भोजन के बाद और दस्तावर चूर्ण रात को सोते समय गर्म पानी से लिए जाते हैं।

वैद्यनाथ अविपत्तिकर चूर्ण—अम्लपित्त की सर्वोत्तम दवा है। इससे छाती और गले की जलन, कब्जियत आदि पित्त-रोग दूर होते हैं।

वैद्यनाथ अश्वगन्धादि चूर्ण—दिमाग को परिपुष्ट करने के साथ-साथ यह चूर्ण शरीर को भी पुष्ट करता है।

वैद्यनाथ एलादि चूर्ण—मिचली, जलन, अरुचि में फायदेमन्द है।

वैद्यनाथ गंगाधर चूर्ण वृहत्—आँव, संग्रहणी और पतले दस्त में।

वैद्यनाथ चन्दनादि चूर्ण—दाह, तृषा और पित्त-विकार में।

वैद्यनाथ चोपचिन्यादि चूर्ण—इसके सेवन से पेशाब की जलन, फोड़े-फुन्सी, घाव, भगन्दर, खुजली, दाह आदि रक्त की खराबी दूर होते हैं।

वैद्यनाथ जातिफलादि चूर्ण—यह अतिसार, संग्रहणी, पेट के मरोड़, मन्दाग्नि, अरुचि आदि में फायदेमन्द है।

वैद्यनाथ तालीशादि चूर्ण—जीर्णज्वर, खाँसी, अरुचि, अग्निमांद्य आदि विकारों में इसका उपयोग होता है।

वैद्यनाथ त्रिफला चूर्ण—कब्ज, पाण्डु, कामला, शोथ, नेत्र-विकार आदि को दूर करता है। गरमी की ऋतु में चूर्ण की आधी चीनी मिलाकर लेने से पित्त की वृद्धि नहीं होती।

वैद्यनाथ धातुपौष्टिक चूर्ण—यह रस, रक्तादि सातों धातुओं को बढ़ाता और असंयम-जनित रोगों को दूरकर शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाता है।

वैद्यनाथ नारायण चूर्ण—गुल्म, लीवर, पेट फूलना, सूजन, दस्त की कब्जियत, मन्दाग्नि, बवासीर आदि में पेट साफ रखने के लिए उत्तम है।

वैद्यनाथ पंचसकार चूर्ण—यह चूर्ण पेट साफ करता है तथा पाचन-शक्ति और भूख बढ़ाता है। इससे पेट के कृमि भी दूर होते हैं।

वैद्यनाथ प्रदरनाशक चूर्ण—स्त्रियों के लिए लाभदायक है।

वैद्यनाथ पुष्यानुग चूर्ण नं० २ (नागकेशर-युक्त)—पूर्ण शास्त्रीय गुण-युक्त है। विशेष जानकारी चिकित्सक से प्राप्त करें।

बैद्यनाथ पुष्यानुग चूर्ण नं० १ (केशर-युक्त)—अधिक गुणकारी है।

बैद्यनाथ वज्रक्षार चूर्ण—मन्दाग्निमूलक रोगों की प्रधान दवा।

बैद्यनाथ बिल्वादि चूर्ण—आँव और खून के दस्त में लाभदायक।

बैद्यनाथ महासुदर्शन चूर्ण—कुनाइन आदि से अटका हुआ बुखार इससे दूर होता है। यकृत् और प्लीहा के दोष से उत्पन्न जीर्ण-ज्वरों में इससे विशेष लाभ होता और पेट साफ रहता है।

बैद्यनाथ लवणभास्कर चूर्ण—हाजमा के चूर्णों में यह विशेष गुणकारी और स्वादिष्ट है। यह कब्जियत मिटाता है और पतले दस्त को बन्द करता है।

बैद्यनाथ लवंगादि चूर्ण—पित्तज-कास, वमन आदि की उत्तम दवा है। गर्भावस्था की मिचली, उल्टी में लाभदायक है।

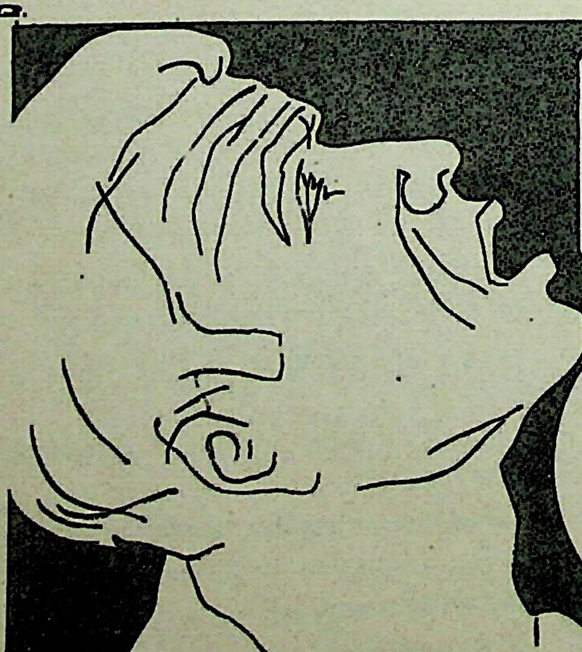
बैद्यनाथ लाई चूर्ण—संग्रहणी और अम्लपित्त में लाभदायक।

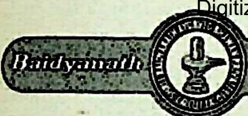
बैद्यनाथ शतावर्य्यादि चूर्ण—रस, रक्त आदि सप्त धातुओं को बढ़ा कर शरीर को बलवान करता है। यह बहुत पौष्टिक है।

बैद्यनाथ सारस्वत चूर्ण—बुद्धि और स्मृति बढ़ाता है।

बैद्यनाथ सितोपलादि चूर्ण—पुराना बुखार, शारीरिक क्षीणता, दमा, अरुचि, पित्त-विकार, हाथ-पैर की जलन आदि में बहुत उपयोगी है। यह खाँसी की उत्तम, स्निग्ध (तर) दवा है।

बैद्यनाथ हिंग्वष्टक चूर्ण—यह चूर्ण पेट की ऊर्ध्व वायु को शान्त करता है तथा अग्निवर्धक और पाचक भी है। मन्दाग्नि, आँव, पेट-दर्द, पेट के फूलने और गुड़गुड़ाहट आदि होने पर विशेष उपयोगी है।





अवलेह मोदक पाक

क्वाथ, रस, फाण्ट आदि को दुबारे पका कर जो गाढ़ा किया जाता है, उसको लेह, अवलेह और रस-क्रिया कहते हैं। इसके पाक दो तरह के होते हैं—जो चाटने योग्य पतला हो, वह अवलेह और जो गाढ़ा हो उसे पाक कहते हैं। आयुर्वेदिक चिकित्सा में अवलेह स्निग्ध (तर) इलाज के लिए बहुत गुणदायक है। बच्चों से लेकर बूढ़ों तक को इसके सेवन में किसी प्रकार की असुविधा नहीं होती। इसकी मात्रा ६ से १२ ग्राम (६ माशा से १ तोला) तक है। रोगानुसार अनुपान के साथ इनका सेवन कर अपने स्वास्थ्य की रक्षा करनी चाहिए।

बैद्यनाथ अगस्त्य हरीतकी—दमा, खाँसी एवं फेफड़ों के विकार में लाभदायक है।

बैद्यनाथ एरण्ड पाक—वातरोग, जोड़ों के दर्द आदि की महौषधि और स्निग्ध विरेचन है।

बैद्यनाथ कण्टकार्यवलेह—इससे खाँसी, स्वास और हिचकी दूर होती है।

बैद्यनाथ कुटजावलेह—रक्तातिसार, आँव, पेचिश एवं खूनी बवासीर में उपयोगी है।

बैद्यनाथ च्यवनप्राश-अवलेह (अष्टवर्ग-युक्त)—जीर्ण-शीर्ण शरीर का कायाकल्प करने के लिए यह सर्वविदित है। वृद्ध च्यवन ऋषि इसी से दुबारा नौजवान बने थे। अष्टवर्ग मिलाने की गारण्टी है। फेफड़े के विकार, पुराना स्वास, शारीरिक क्षीणता, जीर्णज्वर, स्वरभंग, खून की कमी, कैल्शियम की कमी, कब्जियत, अम्ल-पित्त, मन्दाग्नि आदि रोगों को दूर करके यह शरीर को हृष्ट-पुष्ट और बलवान बनाता है और रस-रक्त आदि सप्त धातुओं को बढ़ाता है। बैद्यनाथ च्यवनप्राश गुणों में श्रेष्ठ होता है, क्योंकि यह पूर्ण शास्त्रीय विधि के अनुसार ताजे-हरे आँवले और प्रामाणिक औषधियों के योग से तैयार किया जाता है। इसमें स्वाभाविक रूप से विटामिन "सी" पर्याप्त मात्रा में होता है। इसका सेवन हर मौसम में हर दिन बालक, वृद्ध सभी को करना चाहिए।

बैद्यनाथ च्यवनप्राश-अवलेह (स्पेशल)—इसमें चाँदीवर्क, केशर, मकरध्वज, अभ्रक भस्म आदि का मिश्रण किया गया है, जिससे साधारण च्यवनप्राश अवलेह से अधिक गुणकारी है।

बैद्यनाथ चित्रक हरीतकी—पुराने और बार-बार होनेवाले सर्दी-जुकाम की श्रेष्ठ दवा है।

बैद्यनाथ वासावलेह—इससे सभी तरह की खाँसी सूखी हो या गीली में फायदा होता है।

बैद्यनाथ वासाहरीतक्यवलेह—रक्तपित्त, सभी तरह की खाँसी, पुराने ज्वरयुक्त खाँसी और शारीरिक क्षीणता में लाभदायक है।

बैद्यनाथ बादाम पाक—दिल और दिमाग को ताकत देता है। पित्त-विकार, नेत्र एवं शिरोरोग में लाभदायक है।

बैद्यनाथ बाहुशाल गुड़—बादी बवासीर की उत्तम दवा है।

बैद्यनाथ ब्राह्म रसायन—बल, कान्ति एवं स्मरणशक्ति वर्धक।

बैद्यनाथ मूसली पाक—असंयमजन्य रोगों को दूरकर शरीर को मोटा-ताजा बनाने में श्रेष्ठ है।

बैद्यनाथ सुपारी पाक—बच्चा होने के बाद महिलाओं को इसका सेवन करना चाहिए। इससे उनका शरीर पुष्ट और स्वास्थ्य उन्नत होता है।

बैद्यनाथ सौभाग्यसुंठी पाक—प्रसूता के लिए अच्छी पुष्टई है। इससे भूख तथा बल बढ़ता है और अरुचि तथा पेट की वायु का नाश होता है।

बैद्यनाथ हरिद्राखण्ड बृहत्—शीतपित्त में फायदेमन्द है।

बैद्यनाथ हरीतकी खण्ड—कब्जियत को दूर करता है।



औषधि तैल

गुण-धर्म—उत्तम औषधि द्वारा विशुद्ध आयुर्वेदीय रीति से प्रस्तुत तैल रोग-नाश के साथ-साथ शरीर को भी पुष्ट करते हैं।

सेवन-विधि—तैल को धीरे-धीरे, लेकिन बल के साथ इस प्रकार मालिश करनी चाहिए कि तैल चमड़े के भीतर रम जाय। बिना उत्तम मर्दन के तैलों से पूर्ण लाभ नहीं होता। दर्द की जगह, मालिश करते समय, अग्नि से सेंककर एरण्ड या धतूरे के पत्ते बाँधना चाहिए। शिरोरोग में बाल काटकर तैल मर्दन करना चाहिए।

वैद्यनाथ इरिमेदादि तैल—मुख-रोग की उत्तम दवा है। मसूढ़ों से खून या मवाद का आना, मुख-पाक, मुख-दुर्गन्ध, टान्सिल की सूजन आदि में शीघ्र लाभ करता है।

वैद्यनाथ काशीसादि तैल—इसके लगाने से बवासीर के मस्से दूर होते हैं।

वैद्यनाथ गुडूच्यादि तैल—मालिश अथवा डूस द्वारा प्रयुक्त होने पर पसीने की अधिकता, खुजली, सिर-कंप, अंगों में आई हुई अशक्तता आदि दूर होते हैं।

वैद्यनाथ ग्रहणीमिहिर तैल—संग्रहणी और अतिसारवालों के क्षीण शरीर में इसकी मालिश बहुत गुणकारी है। इसकी मालिश से उदर-रोगों में भी लाभ होता है।

वैद्यनाथ चन्दनबलालाक्षादि तैल—समस्त वात-विकारों की प्रसिद्ध दवा है। इससे सातों धातु बढ़ते हैं। कास, श्वास, शारीरिक क्षीणता, दाह और पुराने ज्वर में उपयोगी है।

वैद्यनाथ दशमूल तैल—यह तैल सन्निपात एवं सब प्रकार के सिर-दर्द में मालिश करने से तत्काल लाभ करता है। इसके अतिरिक्त कान और नाक के दर्द में भी गुणकारी है।

वैद्यनाथ निर्गुण्डी तैल—नाड़ीव्रण, नासूर, अपची आदि गले की गाँठ एवं सब प्रकार के दूषित व्रणों को दूर करने में अति उपयोगी है।

वैद्यनाथ प्रसारिणी तैल—सब प्रकार के वात-कफ-जन्य रोग, अर्दित, ग्रंथिवात, अंगों का जकड़ना, गृध्रसी आदि में इसका प्रयोग गुणकारी होता है।

वैद्यनाथ पुनर्नवादि तैल—सब प्रकार के शोथ और पाण्डु में इसकी मालिश लाभदायक है।

वैद्यनाथ व्रणराक्षस तैल—पुराने और सड़े हुए खराब घाव में यह तैल गुणकारी है।

वैद्यनाथ ब्राह्मी तैल—उत्तम ब्राह्मी के स्वरस से बनाया गया है। यह बुद्धि-स्मृति-वर्द्धक एवं मस्तिष्क-दौर्बल्य-नाशक परम गुणकारी केश तैल है।

वैद्यनाथ वासाचन्दनादि तैल—यह तैल कास, ज्वर, रक्तपित्त, पाण्डु, कामला, क्षत-क्षीणता और श्वास-रोगों में उपयोगी है। मालिश से बल और अग्नि बढ़ती है।

वैद्यनाथ बिल्व तैल—कान-दर्द, कान में आवाज तथा सनसनाहट होने पर एवं बहरापन में इसका उपयोग विशेष रूप से किया जाता है।

वैद्यनाथ विष्णु तैल बृहत् (केशर-कस्तूरी-युक्त)—जिसका कोई अंग सूखता जा रहा हो या लड़खड़ा कर चलता हो, उसे अथवा वात-रोग, चक्कर आना, सिर एवं जोड़ों के दर्द में इसकी मालिश से बहुत लाभ होता है।

बैद्यनाथ मल्ल तैल (केशर-कस्तूरी-युक्त)—संखिया जहर के इस तैल में एक सींक डुबोकर पान में खाइए। यह दर्द, मन्दाग्नि और कमजोरी में लाभदायक है। इसकी विशेष जानकारी के लिए वैद्य से परामर्श कीजिए।

बैद्यनाथ महामरिचादि तैल—यह खाज-खुजली, फोड़े-फुन्सी, झाईं आदि चर्म और रक्त-रोगों के लिए मशहूर है। इसके व्यवहार से चमड़ी मुलायम होती है।

बैद्यनाथ महाचन्दनादि तैल (केशर-कस्तूरी-युक्त)—कमजोर रोगी को ताकतवर बनाने के लिए अनुभूत एवं शास्त्रीय तैल है। पुराने बुखार, कास-श्वास, शारीरिक कमजोरी आदि में भी बहुत फायदा करता है।

बैद्यनाथ महाविषगर्भ तैल—किसी तरह के तैल लगाने पर भी जब वात-वेदना (वायु का दर्द) शान्त न होता हो, तब इसे लगाना चाहिए, इससे अवश्य लाभ होगा।

बैद्यनाथ महानारायण तैल (केशर-कस्तूरी-युक्त)—यह सन्धिवात, सर्वांग-वेदना, आमवात, कमर के दर्द आदि सभी तरह के वात-विकारों की मशहूर दवा है। भारतीय जनता में इसका अत्यधिक प्रचार है। यह मालिश करने के अलावा खाने के भी काम में आता है। अल्प मात्रा में इसका डूस भी दिया जाता है। सिर पर मालिश से मस्तिष्क ठंडा रहता है।

बैद्यनाथ महाभृङ्गराज तैल—सिर के बालों को बढ़ाता, माथे को ठंडा रखता, गंज को मिटाता तथा बालों को काला करता है। यह परम गुणकारी केश-तैल है।

बैद्यनाथ महामाष तैल—अंगों में आई हुई अशक्तता को दूर कर उनमें नया जीवन लाता है। इसकी मालिश से विभिन्न प्रकार के कष्टसाध्य वात-रोग नष्ट होते हैं।

बैद्यनाथ महालाक्षादि तैल—इससे पुराने ज्वर, खाँसी, शारीरिक दुर्बलता, हाथ-पैर की जलन, हड्डी-पसली के दर्द और बालरोगों में बहुत लाभ होता है।

बैद्यनाथ श्रीगोपाल तैल (केशर-कस्तूरी-युक्त)—रईस लोगों के काम की वस्तु है। नित्य लगाने से बुढ़ापा नहीं व्यापता और वायुरोग नष्ट तथा शरीर पुष्ट होता है।

बैद्यनाथ रसोन तैल—जोड़ों के दर्द और सूजन में लाभदायक है।

बैद्यनाथ शुष्कमूलकाद्य तैल—इससे शोथ, पाण्डु, कामला आदि में लाभ होता है।

बैद्यनाथ शंखपुष्पी तैल—बच्चों के सूखा रोग में विशेष गुणकारी है। जन्म के बाद से ही इस तैल को लगाने से बालक पुष्ट और नीरोग रहते हैं।

बैद्यनाथ षड्बिन्दु तैल—इससे सिर-दर्द, सर्दी, जुकाम, पीनस आदि में लाभ होता है। इसे ५-६ बूँद नाक में डालकर सूँघना भी चाहिए।

बैद्यनाथ सैन्धवादि तैल बृहत्—सभी प्रकार के वृद्धि रोगों में इस तैल के प्रयोग से अच्छा लाभ होता है। आमवात, कमर एवं घुटने के दर्द आदि में भी उपयोगी है।

बैद्यनाथ सोमराजी तैल—इस तैल की मालिश से रक्तविकार, दाह, खुजली, फोड़ा, फुन्सी, चेहरे पर की कालिमा आदि में फायदा होता है।

बैद्यनाथ हिमसागर तैल—यह पीपरमेंट का फूल मिला हुआ हिमसागर तैल नहीं है। वायुर्वेद का यह तैल १५-२० दिन पकाने पर तैयार होता है। इससे सिर ठंडा रहता है।

बैद्यनाथ क्षार तैल—कान-दर्द, कर्ण-स्राव, सनसनाहट आदि वात-रोगों में गुणकारी है।



घृत

गुण-धर्म—आयुर्वेदीय पद्धति से निर्मित घृत अत्यन्त स्निग्ध और पौष्टिक होता है। औषधियों द्वारा सिद्ध होने के कारण यह अधिक पाचक तथा अँतड़ियों और वस्ति को शुद्ध करके मलावरोध और मूत्र-संकोच को दूर करता है। यह स्निग्ध होने से मलाशय, दिमाग, मांस, हड्डियों, नसों आदि को ताकत पहुँचाते हुए रोगों का नाश करता है।

मात्रा—गर्म दूध में १ तोला घृत मिलाकर पीना चाहिए या मिश्री के साथ चाट लेना चाहिए।

बैद्यनाथ अर्जुन घृत—शरीर में वायु अधिक हो जाने के कारण रोगी को घबराहट तथा धड़कन होने लगती है। अत्यधिक पसीना आने लगता है, मुँह सूख जाता है और निद्रा की कमी हो जाती है। उसके शरीर में रक्त-संचार ठीक से नहीं होता। इस स्थिति में यह घृत वात को शांत करके रोगी को आराम पहुँचाने में उपयोगी है।

बैद्यनाथ अश्वगन्धादि घृत—दोनों समय इसके सेवन से जोड़ों का दर्द, कमर का दर्द, वायु-विकार, अनिद्रा आदि दूर होते हैं। इससे रस-रक्तादि सप्त धातुओं की पुष्टि होकर शरीर स्वस्थ रहता है।

बैद्यनाथ अशोक घृत—स्त्रियों के स्वास्थ्य और सौन्दर्य को बढ़ानेवाली यह प्रसिद्ध महौषधि है। सभी गुण अशोकारिष्ट के समान ही हैं। किन्तु, इसमें वातनाशक गुण अधिक है।

बैद्यनाथ कासीसादि घृत—इसके उपयोग से रक्त-दोष, दाद, खुजली, बीची, दुष्ट घाव, भगन्दर और मकड़ी का जहर दूर होता है।

बैद्यनाथ त्रिफला घृत—इसके सेवन से आँख की ज्योति बढ़ती है तथा रक्त-दुष्टि, रक्त-स्राव, तिमिर, नेत्र-पीड़ा और नेत्र-विकार दूर होते हैं। त्रिफला के पूर्ण गुण होने के साथ-साथ इसमें स्निग्धता भी है।

बैद्यनाथ महात्रिफला घृत—उपर्युक्त से विशेष गुण इसमें है।

बैद्यनाथ महातिक्त घृत—रक्तपित्त, विद्रधि, फोड़ा-फुन्सी आदि सभी तरह के रक्त-विकार-जन्य रोगों में लाभदायक है।

बैद्यनाथ पंचतिक्त घृत—पुराने रक्त-विकार (खून के जहर) इससे दूर होते हैं। यह पित्त-विकारों में विशेष उपयोगी है।

बैद्यनाथ पुराना घृत—इसकी मालिश से छाती में जमा हुआ कफ ढीला होकर निकल जाता है। खासकर इसका उपयोग निमोनिया में किया जाता है।

बैद्यनाथ फलकल्याण घृत—यह घृत स्त्रियों के लिए परम लाभदायक है। इसके सेवन से वे स्वस्थ रहती हैं और सुन्दर सन्तान की जननी बनती हैं।

बैद्यनाथ ब्राह्मी घृत—इसके सेवन से स्मरण-शक्ति बढ़ती है।

Baidyanath बैद्यनाथ

आसव अरिष्ट

गुण-धर्म—आयुर्वेदीय चिकित्सा में क्वाथ या काढ़ा के अनन्त गुण वर्णित हैं। किन्तु, क्वाथ की मात्रा अधिक होती है और उसे रोज तैयार करना पड़ता है। पंसारियों के यहाँ से क्वाथ के लिए आवश्यक शुद्ध मूल द्रव्य प्राप्त करने में भी कठिनाई होती है। लोगों को इसी झंझट से बचाने के लिए शास्त्रों में आसव-अरिष्टों के निर्माण और उपयोग की विधि बताई गई है।

आसव-अरिष्ट की उत्तमता—आसव-अरिष्ट जितने पुराने होते हैं, वे उतने ही अधिक लाभ पहुँचाते हैं। विशुद्ध रीति और उत्तम जड़ी-बूटियों के योग से तैयार पुराने आसव-अरिष्ट का प्रभाव रोगों पर तत्काल और निश्चित होता है।

बैद्यनाथ आसव-अरिष्ट—श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्राइवेट लि० इस कार्य के लिए देश में सुप्रसिद्ध है। हमारी पाँच निर्माणशालाओं में हजारों मन आसव-अरिष्ट हमेशा तैयार रहते हैं और वे पुराने होने पर ही बिक्री के लिए भेजे जाते हैं।

अशोकारिष्ट—आयुर्वेदशास्त्र में असली अशोक के बहुत गुण वर्णित हैं। यह शीतल, तृषा, दाह और रक्त-दोष नाशक होता है। इसकी छाल के प्रयोग से स्त्रियों के स्वास्थ्य तथा सौन्दर्य की अभिवृद्धि होती है। इस देश में पर्दा आदि कतिपय कुप्रथाओं के कारण स्त्रियों का स्वास्थ्य बहुत गिरा हुआ रहता है। उन्हें अनेक ऐसे रोगों का शिकार हो जाना पड़ता है, जिनका नाम गिनाना यहाँ उचित नहीं। उन रोगों से बचने के लिए भी अशोक की छाल का सेवन बहुत गुणदायक होता है, वह स्थायी लाभ करता है तथा उनकी अनेक तरह की शारीरिक विकृतियों को दूर करता है।

बैद्यनाथ अशोकारिष्ट—बंगाल और दक्षिण भारत की असली अशोक छाल तथा अन्य अनेक उत्तमोत्तम जड़ी-बूटियों के योग से तैयार किया जाता है। यह पूर्ण गुणयुक्त होने के कारण सचमुच 'अशोक' अर्थात् स्त्रियों का दुःख दूर करनेवाला है। बैद्यनाथ अशोकारिष्ट के सेवन से स्त्रियों के हाथ-पाँव के तलवों की जलन, पेड़ू-पेट तथा सिर के दर्द, पित्त-दाह और उदर-शूल आदि दूर होते हैं। इससे उनके शरीर की शक्ति और मुख की कान्ति बढ़ती है। यह वयः-स्थापक है अर्थात् बुढ़ापे को रोकता है।

बैद्यनाथ अर्जुनारिष्ट—शरीर में वायु अधिक हो जाने के कारण हृदय धड़कता है और शरीर में पसीना आने लगता है, मुँह सूख जाता है, नींद कम आती है, शरीर में रक्त-संचार ठीक से नहीं होता, मन घबड़ाता है और रोगी को मृत्यु-भय सताने लगता है। ऐसी स्थिति में बैद्यनाथ अर्जुनारिष्ट का व्यवहार बहुत ही लाभदायक सिद्ध होता है।

बैद्यनाथ अभयारिष्ट—सभी तरह के बवासीर की प्रसिद्ध दवा है। कब्जियत, मन्दाग्नि आदि उदर-रोगों को समूल दूर कर अग्नि को बढ़ाता है।

बैद्यनाथ अमृतारिष्ट—विषमज्वर, पित्त-ज्वर और जीर्णज्वर में विशेष लाभदायक है।

बैद्यनाथ अरविन्दासव—बालकों के सूखा (सुखण्डी) रोग, अतिसार, अपच, ग्रह-दोष आदि रोगों को दूरकर उन्हें हृष्ट-पुष्ट, बलवान और दीर्घायु बनाता है।

बैद्यनाथ अश्वगन्धारिष्ट—असली अश्वगन्धा से शक्तिवर्द्धक तथा दिमाग को पुष्ट करनेवाली अनेक गुणदायक जड़ी-बूटियों द्वारा तैयार किया जाता है। इसके सेवन से अकारण भय, चित्तभ्रम, अनिद्रा, याददाश्त की कमी, मन्दाग्नि, कब्जियत, सिर-दर्द, काम में चित्त न लगना आदि दूर होकर बल, विक्रम, कान्ति और बुद्धि की वृद्धि होती है। यह उत्तम टॉनिक के रूप में भी व्यवहार्य है।

बैद्यनाथ अंगूरासव—शक्ति-स्फूर्तिदायक अत्युत्तम पेय है। इसके नियमित व्यवहार से शरीर के दुर्बल स्नायु-मण्डल की परिपुष्टि और मानसिक बल की प्राप्ति होती है।

बैद्यनाथ उशीरासव—रक्तपित्त, उदर्द आदि सम्पूर्ण पित्त-विकारों में लाभदायक है।

बैद्यनाथ कनकासव—नये व पुराने दमा—विशेषकर कफ और वायु की अधिकता से उत्पन्न होनेवाले दमा में उपयोगी है। पुरानी खाँसी में भी इसके व्यवहार से लाभ होता है।

बैद्यनाथ कालमेघासव—जीर्णज्वर, तिल्ली, काला ज्वर, पाण्डु आदि की श्रेष्ठ औषधि है।

बैद्यनाथ कुटजारिष्ट—आँव, खून के दस्त, संग्रहणी, खूनी बवासीर, आमांश (Amebic Dysentery), जीर्णज्वर आदि की उत्तम दवा है। इससे रक्त का गिरना भी बन्द होता है।

बैद्यनाथ कुमारी आसव—इसके सेवन से आठ तरह के उदर-रोग (तिल्ली, जिगर, जलन्धर आदि), पंक्ति-शूल (भोजन के बाद का पेट-दर्द), कब्जियत, गुल्म (वायुगोला) आदि उदर-रोग दूर होते हैं और खाया हुआ पदार्थ अच्छी तरह पच जाता है।

बैद्यनाथ कुमारी आसव नं० ३—यह बालकों के यकृत् (Liver) के रोग, कब्जियत, बदहजमी, रक्ताल्पता आदि में विशेष लाभदायक है।

बैद्यनाथ खदिरारिष्ट—सब प्रकार के चर्म-रोगों एवं रक्त-विकारों में लाभदायक है।

बैद्यनाथ चन्दनासव—पेशाब की जलन, कड़क, पथरी आदि में गुणकारी है।

बैद्यनाथ जीरकाद्यरिष्ट—हाथ-पाँव की जलन, अतिसार एवं संग्रहणी रोग-नाशक है।

बैद्यनाथ दशमूलारिष्ट (कस्तूरी-युक्त)—संग्रहणी, मन्दाग्नि, अरुचि, उदर-रोग, खाँसी, दमा, कमजोरी आदि रोगों की शास्त्रोक्त दवा है। इससे बल और कान्ति बढ़ती तथा शरीर पुष्ट होता है। प्रसव के बाद इसके सेवन द्वारा माताएँ अपनी और अपने शिशु के स्वास्थ्य की रक्षा करती हैं एवं सुखमय जीवन बिताती हैं।

बैद्यनाथ द्राक्षासव—ताकत और ताजगी से भरा हुआ सुमधुर टॉनिक है। यह बढ़िया अंगूरी दाखों से तैयार किया जाता है। बहुत से धनी बारहों मास इसका सेवन करते हैं। बैद्यनाथ द्राक्षासव पीने में अत्यन्त जायकेदार है। यह भूख बढ़ाता, दस्त साफ लाता, कब्जियत मिटाता, ताकत पैदा करता, नींद लाता और दिल तथा दिमाग में ताजगी पैदा करता है और कफ, खाँसी, सर्दी, जुकाम आदि में फायदा पहुँचाता है।

बैद्यनाथ महाद्राक्षासव—उपर्युक्त से अधिक गुणदायक है। शारीरिक क्षीणता और अग्निमांद्य तथा कब्जियत आदि को दूर करने में अद्वितीय है।

बैद्यनाथ द्राक्षारिष्ट—इसके गुण भी द्राक्षासव के समान ही हैं। कफ, खाँसी, शारीरिक क्षीणता और कब्जियत में इसका विशेष रूप से व्यवहार किया जाता है।

बैद्यनाथ देवदार्वाद्यरिष्ट—यह रक्तशोधक और मूत्र-दोष निवारक है। पेशाब रुक-रुककर होना, संग्रहणी, अर्श, वातरोग एवं प्रसव के बाद होनेवाले विकारों में गुणदायक है।

बैद्यनाथ पत्रांगासव (केशर-युक्त)—स्त्रियों के विभिन्न कष्ट, ज्वर, पाण्डु, सूजन, अग्निमांद्य, कमजोरी आदि को दूर करता है।

बैद्यनाथ पिप्पल्यासव—इसके सेवन से मन्दाग्नि, कफ-खाँसी, शारीरिक क्षीणता, गुल्म, अर्श, संग्रहणी आदि रोग दूर होते हैं।

बैद्यनाथ पुनर्नवारिष्ट—यह शोथ, उदर-रोग, प्लीहा-वृद्धि, अम्लपित्त, बढ़े हुए लीवर, गुल्म आदि रोगों को दूर करता है। इसका प्रभाव हृदय पर विशेष रूप से होता है।

बैद्यनाथ बब्बुलारिष्ट—अतिसार, कफ-खाँसी, उरःक्षत, रक्तपित्त तथा रक्तरोग में गुणकारी है। यह श्वास-नलिका को साफ कर खाँसी के साथ आनेवाले खून को बन्द करता है।

बैद्यनाथ बलारिष्ट—वात-रोग-नाशक, स्नायु-पुष्टिकारक एवं अत्यन्त बलवर्धक है।

बैद्यनाथ वासारिष्ट—ज्वर-युक्त पुरानी खाँसी, खाँसने के साथ-साथ कफ और खून का निकलना, श्वास, सूखी खाँसी तथा रक्तपित्त के लिए अत्युत्तम है।

बैद्यनाथ विडङ्गासव—पेटमें होनेवाले सभी प्रकार के कृमि-रोगों में इसका उपयोग होता है। यह गुल्म, विद्रधि, कफ, खाँसी, श्वास, भगन्दर आदि रोगों में भी लाभदायक है।

बैद्यनाथ भृङ्गराजासव—शारीरिक क्षीणता और सभी तरह की खाँसी में गुणकारी है। यह बालों को गिरने, सफेद होने से बचाता तथा गंज को मिटाता है।

बैद्यनाथ महामंजिष्ठाद्यरिष्ट—सर्वश्रेष्ठ खूनसफा है। रक्तदोष, खाज-खुजली और श्लीपद रोगों में गन्धक या रस-माणिक्य के साथ लेने से अच्छा लाभ होता है।

बैद्यनाथ मुस्तकारिष्ट—अतिसार, अजीर्ण, अग्निमान्द्य, संग्रहणी, हैजा आदि में लाभदायक है। यह पतले दस्त को गाढ़ा करता है तथा कुपित वात को शान्त कर जठराग्नि को दीप्त करता है।

बैद्यनाथ रोहितकारिष्ट—यह तिल्ली, वायुगोला, अग्निमान्द्य, पाण्डु आदि रोगों को दूर करता है। लीवर और तिल्ली के बढ़ जाने पर इसके उपयोग से विशेष लाभ होता है।

बैद्यनाथ लोध्रासव—पेशाब की जलन आदि बीमारियों में इसका उपयोग होता है। यह स्त्रियों के लिए विशेष उपयोगी है।

बैद्यनाथ लोहासव—खून बढ़ाने की सुप्रसिद्ध औषधि है। रक्ताल्पता (Anaemia), जीर्णज्वर, ज्वरान्त-दौर्बल्य एवं बढ़े हुए जिगर और तिल्ली में विशेष लाभदायक है।

बैद्यनाथ सारस्वतारिष्ट—ब्राह्मी का यह अपूर्व कल्प दिमागी ताकत, स्मरण-शक्ति, कान्ति एवं बुद्धि बढ़ाने में श्रेष्ठ है। मानसिक एवं शारीरिक दुर्बलता, नींद न आना, स्वरभंग, रुक-रुककर बोलना, कानों में तरह-तरह की आवाज का होना, कम सुनाई देना आदि में भी इससे अच्छा लाभ होता है। दिमागी काम करनेवालों के लिए उत्तम ब्रेन टॉनिक है।

बैद्यनाथ सारिवाद्यरिष्ट—रक्त-शुद्धि की मशहूर दवा है। यह खून और पित्त की खराबी को मिटाता है। खून के जहर को जड़ से दूर करता है। यह जिगर (लीवर) के दोष और अम्लपित्त में भी फायदेमन्द है। यह फोड़े-फुन्सी, खाज-खुजली, चकत्ता, भगन्दर, हाथ-पैर, आँख, छाती की जलन, आमवात, वातव्याधि, अशुद्ध पारे के विकार, कुनाइन से पैदा हुआ उपद्रव, कमजोरी, खून की कमी आदि की उत्तम शास्त्रोक्त दवा है।

बैद्यनाथ सारिवाद्यासव—गुण-धर्म उपरोक्त सारिवाद्यरिष्ट के समान हैं।



प्रवाही क्वाथ

आयुर्वेदीय चिकित्सा में क्वाथों का बहुत महत्व है। यह बहुत गुणकारी एवं उपयोगी होते हैं। किन्तु, बनाने में झंझट के कारण इनका उपयोग बहुत कम होता है। अत: लोगों को इस झंझट से बचाने के लिए विशेष गुणकारी कुछ क्वाथों का 'प्रवाही क्वाथ' तैयार किया गया है।

बैद्यनाथ दशमूल काढ़ा—वात-रोगों तथा बच्चा होने के बाद स्त्रियों के लिए लाभदायक है।

बैद्यनाथ देवदार्वादि काढ़ा—प्रसूत-ज्वर में फायदेमन्द है।

बैद्यनाथ धान्यपंचक काढ़ा—आमातिसार और आमशूल में उपयोगी है।

बैद्यनाथ पुनर्नवादि काढ़ा—पाण्डु-रोग और सर्वाङ्ग-शोथ में उपयोगी है।

बैद्यनाथ महामंजिष्ठादि काढ़ा—रक्तातिसार में पूर्ण गुणकारी है।

बैद्यनाथ महारास्नादि काढ़ा—समस्त वात-रोगों में लाभकारी है।

बैद्यनाथ महासुदर्शन काढ़ा—विषमज्वर, मलेरिया, जीर्णज्वर आदि में लाभदायक है।



शरबत अर्क सिरके

अन्यान्य औषधियों की तरह शरबत-अर्क-सिरके भी गुणकारी होते हैं। औषधि के अनुपान रूप में इनका उपयोग किया जाता है। किन्तु, बाजार में उत्तम, विश्वासी शरबत, अर्क और सिरके नहीं पाये जाते ; सड़ी-गली चीजें मिलाकर अक्सर लोगों को धोखा दिया जाता है। अत: अपने चिकित्सकों, दवा-विक्रेताओं एवं प्रेमी ग्राहकों के विशेष आग्रह के कारण श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्रा० लि० ने इन्हें भी तैयार किया है। इनमें मूल वस्तुओं के सार तत्व के सिवा कोई दूषित मिलावट नहीं रहती। इनके असली और गुणकारी होने की गारण्टी है।

(सुगन्धित शरबत)

बैद्यनाथ अनार शरबत—ताजगी और तरावट से भरपूर।

बैद्यनाथ अंगूर शरबत—शक्ति-स्फूर्तिप्रद उत्तम पेय।

बैद्यनाथ केवड़ा शरबत—तरावट देता एवं सिर-दर्द और मिचली को दूर करता है।

बैद्यनाथ खस शरबत—पेशाब की जलन, दाह और पित्त-विकार में लाभदायक है।

बैद्यनाथ गुलाब शरबत—गर्मी के कुप्रभाव से शरीर को बचाता है और तृषा-निवारक है।

बैद्यनाथ चन्दन शरबत—पेशाब की जलन, दाह, कलेजे की गर्मी आदि में गुणकारी है।

(औषधि शरबत और अर्क)

बैद्यनाथ गुलबनफशा शरबत—सर्दी, जुकाम, खाँसी आदि में लाभदायक है। अनुपान में भी काम करता है।

बैद्यनाथ ब्राह्मी शरबत—गरम मौसम के लिए शीतल और सुमधुर पेय है। इससे दिल-दिमाग में ताजगी और शरीर में स्फूर्ति आती है। यह स्मरण-शक्तिवर्द्धक है।

बैद्यनाथ शंखपुष्पी शरबत—स्मरण-शक्तिवर्द्धक और मस्तिष्क को बलवान बनानेवाला अत्युत्तम शरबत है। इससे स्मरण-शक्ति की कमी दूर होती है।

बैद्यनाथ अजवायन अर्क—मन्दाग्नि, पेट-दर्द, मरोड़ और वायु-विकार में उत्तम है।

बैद्यनाथ उस्बा अर्क—खून साफ करने के लिए मशहूर है।

बैद्यनाथ गोरखमुण्डी अर्क—खून साफ करके फोड़ा-फुन्सी ठीक करने के लिए उत्तम है।

बैद्यनाथ दशमूल अर्क—प्रसूत-ज्वर, सन्निपात-ज्वर एवं वात-रोगों में लाभदायक है।

बैद्यनाथ पुनर्नवा अर्क—यह अत्यन्त मूत्र-विरेचक एवं शोथ-नाशक है।

बैद्यनाथ ब्राह्मी अर्क—स्मरण-शक्ति एवं बुद्धिवर्द्धक है।

बैद्यनाथ महामंजिष्ठादि अर्क—रक्त-वृद्धि के लिए प्रसिद्ध है।

बैद्यनाथ महासुदर्शन अर्क—मलेरिया, कुनाइन के अत्यधिक प्रयोग से अटके हुए बुखार आदि में फायदेमन्द है।

बैद्यनाथ सौंफ अर्क—आँव, पेचिश, मरोड़ में महोपकारी है।



सुगन्धित केश तैल

आयुर्वेदीय प्रतिष्ठान होने के नाते, लोक-कल्याण की भावना से, हम निम्नलिखित तैल भी बनाते हैं और इनकी विशुद्धता तथा मनोरंजकता का पूरा ध्यान रखते हैं। बैद्यनाथ तैलों में विशुद्ध तिल तैल और उत्तम मूल द्रव्य डालने की हमारी गारण्टी है।

बैद्यनाथ आँवला केश तैल (स्पेशल)—नित्य व्यवहार से बाल रेशम की तरह मुलायम और भौंरे की तरह काले हो जाते हैं।

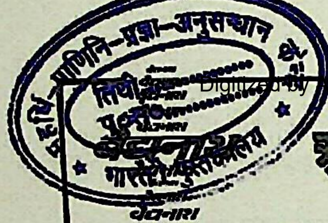
बैद्यनाथ आँवला तैल—उत्तम सुगन्ध-युक्त तैल है। फायदेमन्द भी पूरा है।

बैद्यनाथ ब्राह्मी तैल (औषध-सिद्ध एवं सुगन्धित)—यह बुद्धि-स्मृति-वर्धक परम गुणकारी केश-तैल है।

बैद्यनाथ ब्राह्मी-आँवला तैल—यह तैल ब्राह्मी और आँवला के स्वरस से तैयार किया गया है। यह माथे को ठंडा रखने एवं बुद्धि तथा स्मरण-शक्ति बढ़ाने में उत्तम है।

बैद्यनाथ महाभृङ्गराज केश तैल (सुगन्ध-युक्त)—असमय में बाल का पकना, गिरना, गंज आदि को दूर कर केश को घना, काला बनाता है।

बैद्यनाथ हिमानी कल्याण तैल—ठंडा एवं सिर-दर्द-नाशक।



अंजन वर्ति सुरमा मंजन

बैद्यनाथ दन्तमंजन लाल—यह दन्त-रोग-नाशक आयुर्वेदीय दवाओं द्वारा तैयार किया जाता है। मसूढ़े से खून या मवाद का आना, मुँह से दुगन्ध आना आदि शिकायतें इससे मिटती हैं।

बैद्यनाथ दन्तमंजन सफेद—पायरिया-नाशक उत्तम मंजन है।

बैद्यनाथ दन्तमंजन काला—मुख-दुर्गन्ध और दन्तरोग-नाशक है।

बैद्यनाथ चन्द्रोदयावर्ति—नेत्र-रक्षक सुप्रसिद्ध आयुर्वेदीय औषधि है।

बैद्यनाथ नयनी (काजल)—आँखों को स्वस्थ रखती है।

बैद्यनाथ नेत्रामृत सुरमा—नेत्र-रोग-नाशक परमोत्तम सुरमा है।

बैद्यनाथ ममीरे का सुरमा—आँखों को शीतल रखता है।

बैद्यनाथ मोती का सुरमा—आँखें निर्मल और ठण्डी रहती हैं।

बैद्यनाथ हिमालय सुरमा—इससे नेत्र नीरोग रहते हैं।



आयुर्वेदीय-विविध एवं उपयोगी द्रव्य-समूह

इस प्रकरण में कुछ ऐसी आयुर्वेदीय औषधियों, उपयोगी मूल द्रव्यों और दवाओं के तैल का विवरण हम संक्षिप्त गुण-धर्म के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं, जो बहुत ही लाभदायक और समय पर काम आनेवाले हैं। बैद्यनाथ-दवाओं के निर्माण में इनकी आवश्यकता हमें होती है, अतएव इनका संग्रह हमें प्रचुर मात्रा में बराबर अपने पास रखना पड़ता है और ग्राहकों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर इन्हें बिक्री के लिए भी भेजा जाता है।

अम्बर—सुन्दर सुगन्धदायक और कफ-वायु-नाशक है।

बैद्यनाथ केवड़ा जल—दाह, जलन, तृषा-नाशक है।

बैद्यनाथ गुलाब जल—दिल-दिमाग को तरावट देता है।

बैद्यनाथ गिलोय सत्व—हाथ-पैरों की जलन, उष्णता, पित्तविकार में लाभदायक है।

बैद्यनाथ चौंसठप्रहरी पीपल—ज्वर-युक्त खाँसी, कफ, श्वास, दुर्बलता आदि में अकेले या वसन्तमालती रस के साथ लेने से लाभ होता है।

बैद्यनाथ शंखद्राव—अजीर्ण, मन्दाग्नि आदि उदर-विकारों की दवा है।

बैद्यनाथ महाशंखद्राव—उपर्युक्त से विशेष गुण-युक्त है।

बैद्यनाथ सुगंधित धूप—इस धूप को जलाने से घर का कोना-कोना सुगन्धित और रोग-कीटाणु-रहित हो जाता है। शुद्ध पूजा-पाठ और स्वास्थ्य-सुख की इच्छा रखनेवालों को इस धूप का रोजाना व्यवहार करना चाहिए।

गोरोचन—शीतवीर्य, कान्तिवर्धक और रक्त-दोष-नाशक है।

मधु आयु औ—शीत, लघु, ग्राही, अग्निदीपक नेत्र-हितकारी है।

चालमूँगरा का तैल—रक्त-विकार एवं चर्मरोग के लिए सर्वश्रेष्ठ दवा है। फोड़ा-फुन्सी में लगाने और रक्त-विकार में खाने से लाभ होता है।

मालकाँगनी (ज्योतिषमती) तैल—वात-नाशक एवं नेत्र-ज्योति-वर्द्धक है।

नीम का तैल—खाज-खुजली, फोड़ा-फुन्सी में लाभदायक तथा कीटाणु-नाशक है।

बादाम का तैल—दिमागी ताकत के लिए खाया और लगाया जाता है।

बैद्यनाथ दशांग लेप—दुष्ट व्रण, फोड़े-फुन्सी, विसर्प, तेज बुखार और सिर की पीड़ा में लेप करने से यूडीकोलन की तरह आराम मिलता है।

अजवायन तैल—मन्दाग्नि, अजीर्ण और पेट-दर्द में लाभदायक।

विशुद्ध एरण्ड तैल—वायु-प्रधान कोष्ठवालों के लिए उत्तम जुलाब।

चन्दन का तैल—पेशाब की जलन, कड़क आदि में गुणकारी।

सौंफ का तैल—आँव-पेचिश, दस्त आदि में लाभदायक।

नीलगिरि तैल—सर्दी-जुकाम में सूंघने से कफ बाहर निलकता है।

दालचीनी का तैल—सिर-दर्द में परम उपयोगी।

पिपरमेण्ट का तैल—अजीर्ण-नाशक और सिर-दर्द में लाभदायक।

लवंग का तैल—दाँत-दर्द और वायु-नाशक।

ग्लूकोज—इसके व्यवहार से रोगी का बल बना रहता है और रोग का सामना करने में वह सक्षम होता है। छोटी उम्र के बच्चों के लिए तो यह एक पौष्टिक खाद्य है।

बैद्यनाथ बार्ली—रोगियों के लिए पथ्य और बच्चों के लिए सुपाच्य खाद्य है।

क्लोरोडिन बी. पी. सी.—दस्त, आँव, पेचिश, मरोड़ और पेट की ऐंठन की घरेलू दवा तथा बच्चो के हरे-पीले दस्तों में गुणकारी है।

टिंचर आयडिन आई. पी—चोट, सूजन, गिल्टी पर लाभदायक।

जो नुस्खे अत्यन्त गुणकारी सिद्ध हुए हैं, उन्हें अनुभूत औषधियों के नाम से हमने प्रचलित किया है। भारतवर्ष के प्रधान वैद्यराजों से अनुमोदन-प्राप्त ये योग जनता के लिए बड़े उपयोगी सिद्ध हुए हैं; क्योंकि इनके सेवन से लोग आसानी से रोग-मुक्त हो जाते हैं।

इन दवाओं में कोई विषैली या तेज दवा नहीं डाली जाती। प्रत्येक दवा के साथ उनकी छपी हुई सेवन-विधि, पथ्य-परहेज के नियम और उनके नुस्खे दिये जाते हैं। आयुर्वेदीय दवाओं के साथ-साथ इन अनुभूत औषधियों को भी हमारे अधिकृत बिक्रेता बेचते हैं। आपको जिस किसी दवा की जरूरत हो, हमारे अधिकृत विक्रेताओं से खरीदिये।

वैद्यनाथ अनुभूत औषधियाँ

वैद्यनाथ Baidyanath वैद्यनाथ अनन्त सालसा

यह बहुत ही अच्छा सालसा है। इसके सेवन से खून की खराबी दूर होती है, शरीर पुष्ट होता है और शरीर में नया खून बनता है। अशुद्ध पारे के व्यवहार से खून बिगड़ कर शरीर में अनेक रोग पैदा हो जाते हैं। वैद्यनाथ अनन्त सालसा उस हालत में भी उपयोगी है। इससे खाज-खुजली, फोड़ा-फुन्सी, कमर और जोड़ों के दर्द, चमड़े का फटना, सिर के बालों का गिरना आदि शिकायतें दूर होती हैं।

वैद्यनाथ Baidyanath वैद्यनाथ अर्क कपूर

हैजे की प्रारम्भिक अवस्था में इसके व्यवहार से दस्त और कै थोड़ी देर में बन्द हो जाते हैं, ऐंठन मिट जाती है, प्यास कम हो जाती है और हाथ-पैर में गर्मी आकर रोगी को नींद आ जाती है। १-२ बूंद वैद्यनाथ अर्क कपूर लेते रहने से हैजा होने का भय नहीं रहता।

वैद्यनाथ Baidyanath वैद्यनाथ अर्क पुदीना

यह पुदीना की ताजी-हरी पत्तियों का सत्त है। रंग और खुशबू ठीक, हरी पत्तियों जैसी है। पेट फूलना, खट्टी डकार आना, अजीर्ण, जी मिचलाना, भूख कम लगना, पेट-दर्द आदि के लक्षण में इससे फायदा होता है। बच्चों के हरे-पीले दस्त और दाँत उठने के समय के अपच में भी लाभदायक है। यह समय पर बहुत काम आता है।

वैद्यनाथ Baidyanath वैद्यनाथ आइ-आँख

दुखती आँखों की बढ़िया दवा। हिन्दुस्तान गर्म देश है। यहाँ धूल भी बहुत उड़ती है, जिससे आँख आने का रोग अक्सर होता रहता है। आँख आने पर आँख में दर्द होने लगता है, सूजन, लाली, पानी गिरना, चिपकना, जलन आदि उपद्रव हो जाते हैं, जिससे रोगी को बहुत कष्ट होता है। इसके लिए वैद्यनाथ आइ-आँख बहुत ही उपयोगी और जल्द फायदा देनेवाली दवा है।



इसबगोल, बेल, कुटज आदि आँवनाशक दवाओं के योग से यह दवा बनी है, जो आँव, पेचिश, मरोड़, आमातिसार, खून के दस्त (डिसेन्ट्री), कब्जियत आदि में बहुपरीक्षित एवं उपयोगी है। पुराना आमांश होने से पेट में वायु का प्रकोप होने और गैस बनने पर यह तत्काल लाभ करता है।



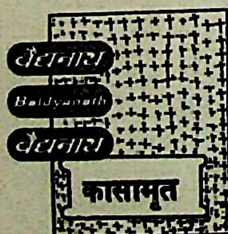
एक्जिमा (विचर्चिका) हाथ-पैर के अगले हिस्सों में हो जाता है। रोग बढ़ने पर इसमें त्वचा पर काला-काला दाग जैसा दिखाई पड़ता है और उसमें पानी आता है। इस रोग पर बैद्यनाथ एक्जिमा मलहम लगाने से एक्जिमा जल्द आराम होता है।



खाँसी नई हो या पुरानी, कफवाली हो या सूखी, कठिन हो या मामूली, किसी तरह की भी क्यों न हो, बैद्यनाथ कफ-मिक्सचर की ३-४ खुराक पीते ही लाभ होने लगता है। इसके व्यवहार से कफ बाहर निकल जाता है और सर्दी, जुकाम जल्दी ठीक हो जाता है।



बच्चों के पेट में गोल व लम्बे कई तरह के कीड़े पैदा हो जाते हैं, जिससे उनका खून सूख जाता है, आँखें सफेद हो जाती हैं और बदहजमी होने लगती है। नाक और गुदा में खुजली होती रहती है। बच्चे सोते समय दाँत किटकिटाते और चौंक उठते हैं। बच्चों के पेट के कीड़ों को दूर करने के लिए बैद्यनाथ कृमिहर सिरप बहुत उपयोगी व निर्दोष दवा है।



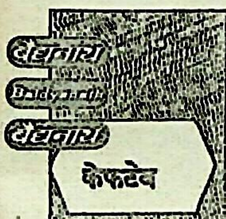
खाँसी मामूली रोग होने पर भी पुरानी हो जाने से दमा, तपेदिक आदि रोग पैदा करती है। बालकों को तो खाँसी बहुत ही बेहाल कर देती है, इसलिए खाँसी होते ही बैद्यनाथ कासामृत पिलाइये, बहुत जल्द रोग से छुटकारा मिल जायेगा।



कान के भीतर मैल जमा होने, फोड़ा-फुन्सी होने तथा चोट आदि लगने से कान में दर्द होने लगता है और बड़ी बेचैनी रहती है। इस प्रकार की शिकायत बच्चों को अक्सर होती है। ऐसी हालत में यह दवा कान में डालनी चाहिए। इसके व्यवहार से कान के फोड़े-फुन्सी दूर होंगे और दर्द से राहत मिलेगी।



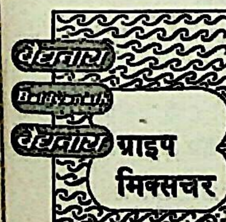
कान बहने की बीमारी बहुधा बच्चों और कभी-कभी बड़ी उम्र के स्त्री-पुरुषों को हो जाती है। पहली दशा में कान से इतनी बदबू आती है कि कान बहने का रोगी जहाँ खड़ा हो जाता है, वहाँ उसके पास के सभी आदमी उससे बबड़ा जाते हैं। पुराना हो जाने पर बदबू मिट जाती है। बड़ी खोज के बाद वैद्यनाथ कानपी नाम की दवा कान बहने के रोग के लिए बनाई गई है।



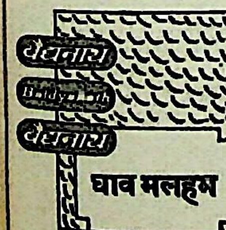
गले की खराबी, अचानक सर्दी, नजला आदि किसी भी कारण से हुई खाँसी में इस टेबलेट को चूसने से शीघ्र लाभ होता है।



सर्दी, जुकाम, उदर-रोग आदि के कारण गले की टॉन्सिल बड़ी और प्रदाहयुक्त हो जाती है। इससे गले में सुरसुराहट होकर खाँसी बहुत होती है। कफ बिल्कुल नहीं निकलता। किसी-किसी को उल्टी भी हो जाती है। मन्द-मन्द ज्वर रहता है। बालकों को यह रोग अक्सर हुआ करता है और बहुत दिनों तक बना रहता है। ऐसी हालत में वैद्यनाथ गुल्लरीन बहुत ही उपयोगी है।



यह मिक्सचर बच्चों के लिए बहुत गुणकारी है। छोटे बच्चों को अपच, मरोड़ और अफरा की शिकायत अक्सर हुआ करती है। दाँत निकलते वक्त उनकी यह शिकायत और अधिक बढ़ जाती है। इस अवस्था में इसके व्यवहार से उन्हें बहुत ही आराम मिलता है और उनकी हाजमा-शक्ति बढ़ जाती है।



यों तो घाव और फोड़े-फुन्सी में लगाने के लिए अनेक तरह के पेटेन्ट मलहम बाजार में मिलते हैं; किन्तु यह मलहम उन सबों में अच्छा है। इसके लगाने से घाव शीघ्र सूखकर अंकुर भरता है और नया मांस पैदा होता है। इससे सड़े-गले तथा पुराने घाव जल्द आराम होते हैं। सूखी और पीबदार खुजली में भी यह लाभदायक है।



इस दवा के लगाने से त्वचा पर होनेवाली तरह-तरह के रोग, जैसे—घाव, अपरस, फुन्सी, खाज-खुजली आदि जल्द आराम होते हैं। चर्म-रोगों में विशेष फायदा करनेवाली दवाओं को इस दवा में सम्मिलित किया गया है। खाज-खुजली आदि चर्म-रोगों से परेशान लोग इस दवा का व्यवहार करें, इससे उन्हें अवश्य आराम मिलेगा।



जन्म के बाद से ही बच्चों को इसका सेवन कराने से उनके स्वास्थ्य में कोई गड़बड़ी नहीं होती। इससे बुखार, खाँसी, सर्दी, जुकाम, अजीर्ण, उल्टी होना, टट्टी होना, पेट फलना आदि रोग दूर होते हैं। बैद्यनाथ जन्मघूँटी को सुमधुर अर्क-रूप में तैयार किया गया है, अतएव, छोटे-मोटे बच्चों को भी पिलाने में सहूलियत रहती है।



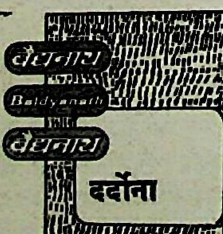
सर्दी-जुकाम होने से नाक व गले की झिल्ली का प्रदाह होता है। इससे छींकें आती हैं, नाक बहती है, सिर-दर्द व खाँसी होती है। इसके लिए वासकमूल, मुलेठी, गुलबनफ्शा, गाजवाँ, खूबकलाँ इत्यादि दवाएँ बहुत उपयोगी हैं। इन्हीं जड़ी-बूटियों के योग से निर्मित यह औषधि सर्दी-जुकाम में गुणकारी है।



इस दवा से नई या पुरानी-किसी तरह की तिल्ली (प्लीहा) क्यों न हो, जल्द आराम होती है। तिल्ली के कारण होनेवाले बुखार, कब्जियत, सिर-दर्द, भूख न लगना, खून की कमी, शरीर का पंजर-मात्र रह जाना आदि सभी शिकायतें दूर हो जाती हैं। इस दवा के खाने के बाद काला दस्त होगा, भूख बढ़ेगी और शरीर में नई ताकत पैदा होगी।



पायरिया के कारण मसूढ़ों से खून गिरना, दाँतों का हिलना या गिर-जाना, मसूढ़ों को दबाने से मवाद दिखाई देना और मुँह से दुर्गन्ध आना आदि लक्षण पैदा हो जाते हैं। पायरिया रोग का जहर निरन्तर पेट में जाता रहता है, जिससे बहुत जल्द कब्ज और बद-हजमी की बीमारी हो जाती है। बैद्यनाथ दन्तवेष्टारि इस अवस्था के लिए अति उपयोगी दवा है।



सर्दी, जुकाम, इन्फ्लुएंजा, अधकपारी, मलेरिया ज्वर की बेचैनी आदि में यह तुरन्त आराम देता है। वायु के कारण होनेवाले जोड़ों के दर्द, दाँत-दर्द आदि में भी इससे फायदा होता है।



काम-काज, सर्दी-जुकाम, इन्फ्लुएंजा, मलेरिया आदि किसी कारण से सिर-दर्द या अधकपाली हो, इसके व्यवहार से तुरन्त शान्ति मिलती है। मौसम बदलने, पानी से भींग जाने या तेज सर्दी-गर्मी से होनेवाले सिर-दर्द में भी यह लाभदायक है।



आजकल दाद की जितनी दवाएँ चली हैं, वे सब मलहम के रूप में ही बिकती हैं; किन्तु बड़े परिश्रम और खोज के बाद इसे पानी के रूप में तैयार किया गया है। यह त्वचा के भीतर पहुँचकर दाद के कीड़ों को नष्ट कर देती है। इस दवा के लगाने पर दुबारा दाद होने का भय नहीं रहता और कपड़ा पर दाग भी नहीं लगता।



बिना किसी तरह की तकलीफ के दाद को जड़-मूल से नष्ट करनेवाली दवाओं में वैद्यनाथ दाद-मलहम बहुत उत्तम दवा है। इस दाद को दादवाली जगह पर कुछ दिनों तक लगातार लगाते रहना चाहिए; दाद की जड़ में पहुँच कर यह दवा दाद के कीटाणुओं को सदा के लिए दूर कर देती है।



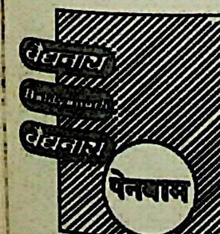
जब दाँत का दर्द बढ़ जाता है, तब रोगी बेचैन हो जाता है, खाने-पीने में कष्ट होने लगता है और उसे किसी तरह आराम नहीं मालूम होता है। वैद्यनाथ दाँत-दर्द की दवा लगाते ही मुँह से लार गिरकर तुरन्त आराम मिलता है।



वैद्यनाथ धारा, खाने और लगाने दोनों रूप में प्रयुक्त होती है। बुखार, खाँसी, दमा, हिचकी, कै-दस्त, हैजा, बदहजमी, पेट-दर्द, अरुचि, सर्दी, जुकाम, निमोनिया, संग्रहणी आदि रोगों में दवा खिलाने से और चोट, मोच, जलन, कटना, वायु के दर्द, जहरीले जानवरों के डंक मारने, सिर-दर्द आदि में लगाने मात्र से लाभ होता है। इसकी एक शीशी घर और सफर में हमेशा साथ रखना चाहिए।



भारतवर्ष गर्म देश है। यहाँ आँखों के रोग बहुत होते हैं। गर्मी के मौसम में खासकर आँखें उठती हैं, लाल हो जाती हैं और उनमें बड़ी वेदना होती है। यदि तुरन्त इसका उपाय नहीं किया गया, तो महीनों तक वे अच्छी नहीं होतीं। वैद्यनाथ नेत्र-रक्षक ऐसी हालत में बहुत गुणकारी। है अनेकानेक नेत्रोपयोगी दवाएँ डालकर इसे तैयार किया गया है।



सिर में भयानक दर्द हो, पसली या कमर में दर्द हो, गर्दन घुमाने में तकलीफ हो, कहीं चोट लग गई हो, किसी जानवर ने डंक मार दिया हो, सूजन हो, दाँत में दर्द हो, सर्दी-खाँसी या निमोनिया की शिकायत हो, तो इसके लगाने से तुरन्त आराम मिलेगा। सिर-दर्द में यह बहुत उपयोगी है।



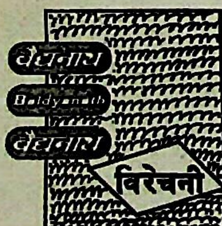
वैद्यनाथ प्राणदा से हर साल मलेरिया बुखार के लाखों रोगी प्राण-दान पाते हैं; इसलिए इसका नाम प्राणदा बिल्कुल सही है। हिन्दुस्तान के गाँव-गाँव और कस्बे-कस्बे में यह दवा मशहूर है। इकतरा, तिजारी, चौथिया, फसली, जूड़ी-पारी का बुखार, बरवट और तिल्ली, मलेरिया के ही भेद हैं। मलेरिया बुखारों की हर हालत में यह तुरन्त फायदा पहुँचाता है। बुखार के बाद भी दवा पीने से बुखार फिर लौटने का भय नहीं रहता है।



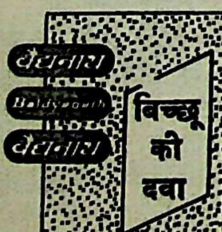
यह बवासीर के मस्से पर लगाने के लिए श्रेष्ठ मलहम है। बवासीर खूनी हो या बादी, इस मलहम के व्यवहार से तुरन्त फायदा होता है। मस्सों की जलन और वेदना शान्त हो जाती है और मस्से सूख जाते हैं, जिससे पाखाना होते समय उनके छिलने का भय नहीं रहता।



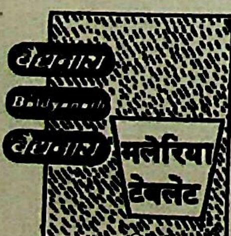
क्षीणता के कारण बच्चे पनपते नहीं, अपच बना रहता है, दूध पीते हैं और उल्टी कर देते हैं, कब्जियत बनी रहती है, दस्त गाढ़ा या पतला होता है, पेट निकल आता है, दुर्बलता बढ़ जाती है. दाँत बड़ी तकलीफ से निकलते हैं, आयु बढ़ने के साथ-साथ बच्चों का शरीर पुष्ट नहीं होता, फुर्ती के साथ चलने-फिरने, खड़े होने या खेलने नहीं पाते, सुस्त और ढीले बने रहते हैं, जरा-सी ठण्ड से कफ, खाँसी, सर्दी हो जाती है। इन सब में वैद्यनाथ बालामृत बड़ा लाभदायक सिद्ध होता है। मीठा, खुशबूदार होने के कारण बच्चे इसे खुशी-खुशी पीते हैं।



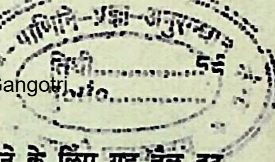
कोष्ठबद्धता आजकल की एक आम बीमारी है। लोगों को उससे बचाने के लिए इस दवा का आविष्कार किया गया है। इसको रात को सोते समय गर्म दूध या जल से लें। सबेरे एक या दो दस्त साफ आयेंगे, पेट हल्का रहेगा, भूख खुलकर लगेगी एवं शरीर स्वस्थ और मन प्रसन्न रहेगा।



बिच्छू के डंक मारने पर दर्द और बेचैनी के मारे लोग रोने-चिल्लाने लगते हैं। विषधर बिच्छू के डंक मारने से बेहोशी भी आ जाता है। ऐसे मौके के लिए यह दवा बहुत लाभदायक है। इससे दर्द दूर होता है और बिच्छू का जहर उतर जाता।



यह जाड़ा या कँपकँपी देकर आनेवाले मलेरिया बुखार की उपयोगी दवा है। जूड़ी, शीत लगकर आनेवाला पारी का बुखार, इकतरा, तिजारी, चौथिया आदि किसी भी तरह का ज्वर हो, इसके सेवन से आराम होता है। पहले जुलाब की दवा खाकर पेट साफ कर लेने से दवा जल्द असर करती है। कुनाइन की गोलियों की जगह इसका व्यवहार करें।





दुर्घटना कहकर नहीं आती। उससे बचने के लिए यह तैल हर घर में रहना चाहिए। आग से जलना, चोट या मोच, वायु का दर्द, कान का दर्द या बहना, फोड़ा-फुन्सी, सूजन और पसली का दर्द—इन सात तकलीफों को यह जल्द दूर करता है और समय पर बहुत काम आता है।

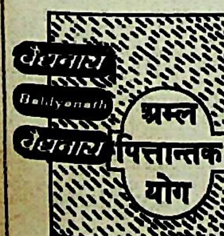


आग से जलने या झुलसने, खेल-कूद तथा मार-पीट से या किसी प्रकार की चोट से जख्मी होने, बिच्छू, बर्रे आदि जहरीले जानवरों के डंक मारने, पसली या शरीर के किसी भी भाग में दर्द होने आदि पर यह मलहम बहुत उपयोगी है। इसके व्यवहार से रोगी को कुछ मिनटों के भीतर ही चैन मिलता है और घाव २-४ दिन में आराम होने लगता है।

वैद्यनाथ आयुर्वेदीय अनुभूति औषधियाँ



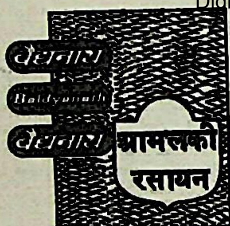
इसके सेवन से चेहरा लाल हो जाता है, वजन बढ़ता है तथा नया स्वास्थ्य और शक्ति प्राप्त होती है। यह जिगर और मेदे को ताकत देता है, भूख और हाजमे को बढ़ाता है तथा खून की कमी, पाण्डु, पेट के रोग, कफ, खाँसी आदि को दूर करता है। पूरा फायदा के लिए जाड़े के मौसम भर इसे खाना चाहिए।



अम्लपित्त रोग होने से खट्टी डकारें, खट्टा पानी मुंह में आना, छाती व गले में जलन, खाने के बाद पेट-दर्द या बेचैनी, कब्जियत, बदहजमी आदि लक्षण प्रकट होते हैं। अधिक भोजन करने से अजीर्ण की शिकायत होती है और रोग पुराना होने से पेट के भीतर घाव हो जाता है। अम्लपित्त रोग के लिए बैद्यनाथ अम्लपितान्तक योग बहुत अच्छी दवा है।



हाजमा को बढ़ानेवाली उत्तमोत्तम दवाओं के योग से यह चूर्ण तैयार किया गया है। इसके व्यवहार से अपच, आफरा, खट्टी डकार का आना आदि अजीर्ण-सम्बन्धी सभी शिकायतें तुरन्त दूर होती हैं। खाए हुए पदार्थों के परिपाक में यह बेजोड़ है। स्वादिष्ट और जायकेदार भी खूब है।



आँवले में विटामिन सी और बी. सन्तरे आदि गुणकारी फलों से भी अधिक रहते हैं। उन्हीं आँवलों के चूर्ण को १०० बार ताजे आँवले के रस में भावना देकर यह रसायन तैयार होता है। यह आयुर्वेद-शास्त्रों में लिखा हुआ पुराना नुस्खा और पौष्टिक रसायन है। इसके नियमित सेवन से दुर्बलता, सुस्ती, उदासी, कब्जियत, अम्लपित्त आदि अनेक रोग दूर होते हैं।



बैद्यनाथ कफ-मिक्सचर से यदि लाभ न हो तो समझना चाहिए कि खाँसी गले की खराबी से पैदा हुई है। ऐसी हालत में बैद्यनाथ कास बटी चूसने से तुरन्त लाभ होगा। यह गले की खराबी को ठीक करके खाँसी को जल्द दूर करती है।



आहार-विहार के बिगड़ जाने से अपच होकर पेट में गैस पैदा हो जाती है। वायु प्रतिलोम होने से दिल-दिमाग पर बुरा असर होता है, अपान वायु बन्द हो जाती है, तबियत घबराती है और लगता है जैसे हृदय की धड़कन बन्द हो जायगी। इन सब में बैद्यनाथ गैसान्तक वटी तत्काल लाभ करती है। यह अग्नि को बढ़ाकर अजीर्ण को दूर करती है, वायु का अनुलोमन करके चित्त में प्रसन्नता लाती है।



गुण उपर्युक्त के समान है। पेट की गैस को निकालने के साथ-साथ यह हाजमा की ताकत को बढ़ाता तथा कब्जियत को भी मिटाता है।



ग्रहणी एक बहुत कठिन रोग है। जब खाए हुए अन्न का पाक नहीं होता, तब दस्त आने लगते हैं। दस्त में आँव का भाग अधिक होता है। रोगी दिन-दिन क्षीण होता जाता है। भूख लगती है, परन्तु खाते ही दस्त होने लगते हैं। इस वटी के सेवन से संग्रहणी रोग जल्द आराम होता है।



यह दिल-दिमाग की ताकत के लिए बहुत उपयोगी है। स्वर्ण, अम्बर, कस्तूरी, पन्ना, मुक्ता आदि बहुमूल्य वस्तुओं के योग से यह तैयार होता है और कठिन तथा पुराने रोगों में काम आता है। बैद्यनाथ जवाहर मोहरा वास्तव में जवाहर मोहरा ही है।



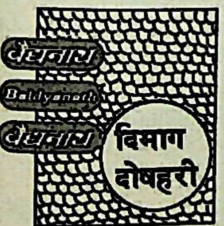
गुण जवाहर मोहरा नं० १ के समान है। स्वर्ण रहित होने के कारण कुछ देर से लाभ पहुँचाता है। वनऔषधिप्रेमी को इसका व्यवहार करना चाहिए।



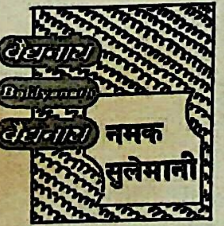
आयुर्वेद-शास्त्र में आयु को स्थिर रखनेवाले पदार्थों में आँवला प्रधान है। ताजे, हरे आँवलों में अष्टवर्ग, मकरध्वज, अभ्रक भस्म, प्रवाल भस्म, केशर, चाँदी-वर्क तथा रसायन और जीवनीय वर्ग की उत्तमोत्तम औषधियों के योग से यह रसायन तैयार होता है। इसके सेवन से सब प्रकार की दुर्बलता, कब्जियत, अग्निमान्द्य, कैल्शियम एवं खून की कमी, सुस्ती आदि रोग दूर होकर शरीर हृष्ट-पुष्ट हो जाता है। इसको हर आदमी हर मौसम में सेवन कर सकता है।



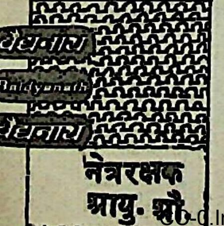
वर्तमान समय में जीवन-संघर्ष कठिन होने के साथ संतुलित भोजन और ब्रह्मचर्य के अभाव में दिमाग कमजोर हो जाता है और काम में भूलें होती हैं। याददाश्त कमजोर हो जाती है, बुद्धि में भ्रम होता है, अकारण चिन्ता और भय सताता रहता है। इन सभी लक्षणों में इस रसायन के सेवन से जल्द मानसिक बल प्राप्त होता है।



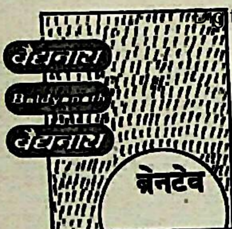
सर्पगन्धा भारतवर्ष की एक सुप्रसिद्ध और गुणकारी जड़ी है। ग्रामीण भाषा में इसे धनबरवा भी कहते हैं। यह बिना नशा के गहरी नींद लाती और दिमाग को नीरोग रखती है। इसी जड़ी में मकरध्वज आदि स्नायु-पुष्टिकारक उत्तमोत्तम दवाएँ मिलाकर और ब्राह्मी के रस की भावना देकर बैद्यनाथ दिमाग दोषहरी की टिकिया बनाई गई है, जो बहुत गुणकारी है।



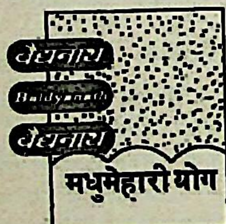
बैद्यनाथ नमक सुलेमानी पूर्ण यूनानी पद्धति से तैयार की गई है। यह खाने में बहुत ही स्वादिष्ट और गुण में उत्कृष्ट है। इसके व्यवहार से अरुचि दूर होती है और अपच, पेट का दर्द या मरोड़, तिल्ली, जिगर आदि बीमारियों में बहुत आराम पहुँचता है।



नेत्राभिष्यन्द (Conjunctivitis) आयुर्वेदानुसार एक संक्रामक नेत्र रोग है। इस रोग में आँखों की कोमल तथा पतली कलाओं में प्रदाह हो जाता है, जिससे वे लाल हो जाती हैं और उनसे पानी गिरने लगता है। आँखें सूज जाती हैं तथा उनमें भयंकर पीड़ा होती है। यदि समय रहते इसका उचित उपचार नहीं किया जाय तो भयंकर नेत्ररोग होने की आशंका रहती है। इस रोग का प्रभाव लगभग एक सप्ताह तक रहता है। बैद्यनाथ नेत्र रोगारि के प्रयोग से आप इस संक्रामक रोग से अपनी रक्षा निश्चित तौर पर कर सकते हैं।



दिमागी परिश्रम करनेवालों तथा अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के लिए यह एक उत्तम दिमागी टॉनिक है। इसके व्यवहार से स्मृति-शक्ति की वृद्धि होती है और विस्मृति आदि रोग दूर होते हैं।



मध्य-भारत में गुड़मार नामकी एक वनस्पति होती है जिसके खाने पर किसी भी मीठी वस्तु का स्वाद नहीं मालूम होता। उसी गुड़मार बूटी के साथ अन्य गुणकारी औषधियाँ तथा स्वर्ण भस्म मिलाकर यह योग तैयार किया जाता है। इसके व्यवहार से पेशाब में चीनी आने पर बड़ा लाभ होता है।



हाजमा खराब हो जाने से छाती और कंठ में जलन होती है, खट्टी और वायु की डकारें आती हैं, जी मिचलाता है, भोजन के बाद सुस्ती आती है और शरीर में उचित मात्रा में खून तैयार न होने से रोगी कमजोर हो जाता है। अन्न को पचाने में तेज, उत्तम आयुर्वेदीय दवाओं के योग से इसे तैयार किया गया है। इससे अन्न जल्दी हजम होता है, भूख खुलकर लगती और शरीर में खून बनता है।



आयुर्वेद की एक दिव्य औषधि होने के कारण हमने इसे पूर्ण वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है। इसमें केवल मादकता ही नहीं है। बाजारू मृतसंजीवनी सुरा की अपेक्षा यह कई गुना अधिक गुणदायक है। इनके सेवन से शरीर में नई ताकत आती है और अनेक तरह के रोग दूर होते हैं। प्रसूता स्त्रियों को सेवन करने से प्रसूत की तमाम शिकायतें दूर होकर नूतन शक्ति प्राप्त होती है।



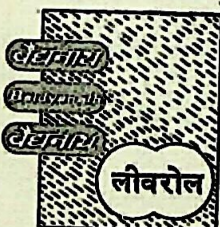
हैजा, मूत्रकृच्छ आदि बीमारियों में अक्सर पेशाब रुक जाता है और रोगी को बड़ी बेचैनी और तकलीफ होती है। ऐसी अवस्था में पेशाब उतारने के लिए एलोपैथिक चिकित्सक कैथेडर का इस्तेमाल करते हैं। किन्तु, आयुर्वेद में पेशाब उतारने की अनेकानेक सहज और उत्तम दवाइयाँ हैं। बैद्यनाथ मूत्रल पाउडर से पेशाब उतारने में बड़ी सहायता मिलती है। यह अम्लपित्त में भी लाभदायक है।



महामंजिष्ठादि काढ़ा में उस्वा, चोपचीनी आदि खून साफ करने वाली वनस्पतियाँ मिलाकर यह घनसत्व तैयार किया गया है और प्रत्येक खुराक में १ रत्ती शुद्ध गंधक भी मिलायी गयी है। इसके खाने से रक्त-विकृति के रोग शीघ्र दूर होते हैं। खाज-खुजली, पामा, फोड़ा, फुन्सी, एक्जिमा आदि खून की खराबी से होनेवाले सभी रोग आराम होते हैं।



कैल्शियम से ही शरीर की हड्डियाँ पुष्ट और सुदृढ़ बनती हैं। खासकर बच्चों के शरीर के विकास के लिए अन्य तत्वों के साथ-साथ उन्हें उत्तम कैल्शियम की बड़ी आवश्यकता रहती है। वैद्यनाथ लाइम वाटर से उन्हें उत्तम कैल्शियम तो मिलता ही है, साथ-ही-साथ इसके व्यवहार से उनकी पाचन-शक्ति बढ़ती है और दूध अच्छी तरह हजम होता है।



यकृत् के खराब होने से भोजन का पाक अच्छी तरह नहीं होता और बवासीर, संग्रहणी, पेचिश, मन्दाग्नि, कब्जियत, मन्द-ज्वर, खून की कमी, पाण्डु आदि अनेक रोग पैदा हो जाते हैं। बच्चों का जिगर अक्सर बढ़ जाता है, जिससे बच्चा बराबर रोगी और कमजोर बना रहता है। यकृत्-दोष से उत्पन्न होनेवाले रोगों के लिए वैद्यनाथ लीवरोल परीक्षित दवा है।



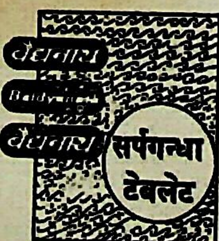
वर्षों के अनुसन्धान तथा अनुभव के पश्चात् रक्त-दोषों के लिए यह श्रेष्ठ औषधि बनाई गई है। विदेशों से भी इस दवा की माँग आती रहती है। सभी तरह के रक्त-दोषों की यह लाभकारी औषधि है। सरकारी संस्थानों द्वारा परीक्षित एवं प्रशंसित हो चुकी है।



यह दमा (कास) रोग की बहुत अच्छी दवा है। इस दवा का कुछ दिन तक बराबर सेवन करने से दमा-रोग में स्थायी फायदा होता है। जो लोग धतूरा, अफीम आदि अनेक तरह की विषैली, देशी वस्तुएँ तथा विलायती दवा खाकर निराश हो चुके हैं, वे वैद्यनाथ श्वासकल्प का सेवन एक बार अवश्य करें।



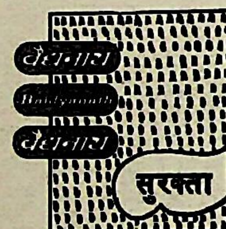
हर्रे के गुणों को सब कोई जानते हैं। जिन लोगों को बराबर कब्ज की शिकायत रहती है, वे प्रायः छोटी हर्रे का सेवन किया करते हैं। परन्तु छोटी हर्रे की अपेक्षा शोधी हुई यह हर्रे विशेष लाभदायक तथा खाने में निहायत जायकेदार है।



सर्पगन्धा इस देश की एक सुप्रसिद्ध और बहुत गुणकारी जड़ी है। रक्तचाप को कम करनेवाली अनेकानेक विदेशी दवाइयाँ जो आज बाजार में विविध नामों से बिक रही हैं, वे सभी इसी जड़ी के आविष्कार हैं। वैद्यनाथ सर्पगन्धा टेबलेट भी उसी जड़ी से पूर्ण शास्त्रीय विधि द्वारा तैयार किया गया है। इसके व्यवहार से मानसिक अशान्ति मिटती है और रोगी को गहरी नींद आती है।



आयुर्वेद-शास्त्र में स्त्री-रोगों के लिए अनेक प्रकार की उत्तमोत्तम लाभदायक दवाएँ हैं और उन्हीं दवाओं के योग से यह दवा तैयार की गई है। यह स्त्रियों के लिए बहुत फायदेमन्द है और उसके क्षीणहीन शरीर को पुष्ट और सुन्दर करती है। इससे खाँसी, आँख और हाथ-पैर के तलवों की जलन, पेट-दर्द, सिर का भारीपन, खून की कमी आदि दूर होते हैं एवं नया जीवन प्राप्त होता है।



रक्त की खराबी से होनेवाले रोगों की यह अनुभूत महौषधि है। इसके व्यवहार से खाज-खुजली, फोड़ा-फुन्सी, एक्जिमा आदि सभी तरह के चर्म और रक्त-रोग जड़-मूल से दूर होते हैं। इसमें प्रयुक्त होनेवाली सभी जड़ी-बूटियाँ रक्त को शुद्ध करनेके लिए सुप्रसिद्ध हैं।



यह भूख और रुचि बढ़ानेवाली दवाओं के योग से तैयार किया गया है। भोजन के बाद ५-७ मुनक्का खाने से अन्न अच्छी तरह हजम हो जाता है। इसे एक बार खाने पर बार-बार खाने को जी चाहता है।



भूख लगानेवाली यह बटी उत्तमोत्तम आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों से तैयार की गई है। भोजन के बाद दो-एक वटी खाने से अन्न अच्छी तरह हजम होता है और चित्त प्रसन्न रहता है। यह खाने में खूब जायकेदार भी है।

सचित्र आयुर्वेद

[आयुर्वेद का सबसे अच्छा और सबसे सस्ता सुसम्पादित सचित्र मासिक पत्र]

इकरंगे-बहुरंगे चित्रों से विभूषित १०० पृष्ठ के इस परमोपयोगी मासिक पत्र का वार्षिक चन्दा ५.०० और एक प्रति का ०.५० मात्र। वैद्यनाथ-प्रतिष्ठान और आयुर्वेद-विज्ञान की गतिविधियों से अवगत रहने के लिए आयुर्वेदविज्ञान के प्रेमी जनसाधारण के अतिरिक्त बैद्यनाथ-दवाओं के प्रत्येक अधिकृत विक्रेता को इसका ग्राहक बनना चाहिए।

श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्रा० लि०,
बैद्यनाथ भवन रोड, पटना—१

बैद्यनाथ आयुर्वेदीय प्रकाशन



यह कारखाना केवल औषधि-निर्माता ही नहीं है। शुद्ध अर्थ में यह एक आयुर्वेदीय प्रतिष्ठान है। इसका मूल उद्देश्य है भारतीय चिकित्सा-पद्धति आयुर्वेद का प्रतिसंस्कार और उसके स्वाभाविक मानव-कल्याणकारी गुणों, उसकी विशेषताओं और चिकित्सा-प्रणाली से जनता को लाभान्वित करना। औषध और ग्रन्थ, दोनों इसके साधन हैं। इसलिए एक ओर जहाँ इसने उत्तमोत्तम औषधि-निर्माण द्वारा आयुर्वेद की विशेषता को प्रमाणित करने की चेष्टा की है, वहीं दूसरी ओर प्रामाणिक ग्रन्थों के प्रकाशन का भी समुचित प्रवन्ध किया है।

अष्टांग-संग्रह (सूत्रस्थान) सर्वांग सुन्दरी व्याख्या-सहित। व्याख्याकार: वैद्य पं० लालचन्द्र शास्त्री। इस महत्वपूर्ण ग्रंथ की अब तक कोई ऐसी टीका हिन्दी में नहीं थी, जिससे संस्कृत के सामान्य ज्ञान रखनेवाले वैद्य तथा आयुर्वेद-प्रेमी जन लाभान्वित होते। इसी कमी की पूर्ति और आयुर्वेद की अभिवृद्धि की दृष्टि से भवन ने इस अभिनव ग्रंथ का प्रकाशन किया है।

आरोग्य प्रकाश (पन्द्रहवाँ संशोधित संस्करण)—बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्राइवेट लि० के मैनेजिंग डायरेक्टर वैद्यराज पण्डित रामनारायण शर्मा ने अनेक वर्षों के अथक परिश्रम के पश्चात् इस महान् ग्रन्थ—आरोग्य-प्रकाश—का प्रणयन किया है। इस ग्रन्थ का एक-एक वाक्य समय पर हजारों रुपयों का काम देता है। इसके पूर्वार्द्ध के व्यायाम, ब्रह्मचर्य, भोजन, दिन-रात्रि-ऋतुचर्या, सदाचार, उत्तम विचार आदि विषयों को पढ़कर और तदनुकूल आचारण कर सदा बीमार रहनेवाले व्यक्ति भी बिना दवा के ही नीरोग और तन्दुरुस्त हो जाते हैं।

आयर्वेदीय क्रियाशारीर (रायल अठपेजी साइज, बढ़िया कागज, सजिल्द और सचित्र)—लेखक: वैद्य रणजितराय देसाई, वाइस-प्रिन्सिपल आयुर्वेद महाविद्यालय, सूरत। आयुर्वेदीय महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम में पाठ्य-पुस्तक के रूपमें यह स्वीकृत है। इसे पढ़ने के बाद आयुर्वेद के विद्यार्थियों को 'हैलिबर्टन फिजिओलॉजी' खरीदने की जरूरत नहीं रहती।

आयुर्वेद-सार-संग्रह (पंचम संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण)—सम्पूर्ण आयुर्वेद-शास्त्र के मंथन के पश्चात् इस ग्रन्थ का सम्पादन किया गया है। इसमें रोगानुसार औषधों का गुण-धर्म, प्रयोग तथा औषध-निर्माण, औषध-अनुपान, पथ्यापथ्य आदि के विवरण सरल भाषा में हैं।

आयुर्वेदीय व्याधि विज्ञान (पूर्वार्द्ध)—ले० : आयुर्वेद-मार्तण्ड वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य। इसमें व्याधि-विज्ञान के साधनों का वर्णन बहुत रोचक ढंग से किया गया है।

आयुर्वेदीय व्याधि विज्ञान (उत्तरार्द्ध)—ले० : आयुर्वेद-मार्तण्ड वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य। यह ग्रन्थ उपर्युक्त ग्रन्थ का उत्तरार्द्ध है। इसमें रोगों के लक्षण, निदान, चिकित्सा आदि हैं।

आयुर्वेदीय पदार्थ-विज्ञान (द्वितीय संस्करण) ले० : वैद्य रणजितराय देसाई। आयुर्वेदीय पदार्थ-विज्ञान अन्य सभी आयुर्वेदीय विषयों का आधारभूत है, अतः इसका अध्ययन किस शैली से होना चाहिए, इस बात के विशद विवेचन का इसमें सफल प्रयास किया गया है।

आयुर्वेदीय हितोपदेश (द्वितीय संस्करण)—लेखक : वैद्य रणजितराय देसाई। आयुर्वेद के रहस्य-बोध के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है। विद्यार्थियों की इसी आवश्यकता को दृष्टि में रखकर अध्ययन-कार्य में दक्ष लेखक ने इस ग्रंथ का प्रणयन किया है।

उपचार-पद्धति (पंचम संस्करण)—उपचार और पथ्य पर सर्वोत्तम ग्रंथ।

किशोर-रक्षा और ब्रह्मचर्य—किशोर बालकों और तरुणों के लिए उपयोगी।

त्रिदोष-तत्त्व विमर्श (द्वितीय संस्करण)—लेखक : आयुर्वेद-बृहस्पति वैद्य रामरक्ष पाठक। इस ग्रन्थ में त्रिदोष-तत्त्व के विभिन्न स्वरूपों का वैज्ञानिक विश्लेषण किया है।

द्रव्यगुण विज्ञानम् (तृतीय संस्करण)—लेखक : आयुर्वेद-मार्तण्ड वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य। आयुर्वेदीय ग्रन्थों में सूत्र रूप में यत्र-यत्र बिखरे हुए द्रव्य-गुण-विषयक को संकलित कर संस्कृत तथा हिन्दी भाषा में विवेचन किया गया है, जो आयुर्वेद-ज्ञान के लिए उपयोगी है।

निदान चिकित्सा-हस्तामलक (प्रथम खण्ड)—लेखक : वैद्य रणजितराय देसाई। प्रस्तुत ग्रन्थ एक नवीनतम प्रयास है, जिसमें रोग-निदान के विषय में तुलनात्मक विवेचन के साथ-साथ अति गहन विषय को सरलतापूर्वक समझाने की चेष्टा की गयी है।

पदार्थ-विज्ञान (द्वितीय संस्करण)—लेखक : पं० रामरक्ष पाठक, आयुर्वेदाचार्य। देशभर की आयुर्वेदीय संस्थाओं एवं परीक्षा-समिति के पाठ्यक्रम में स्वीकृत।

मानस-रोग विज्ञान (द्वितीय संस्करण)—लेखक : डॉ० बालकृष्ण अमरजी पाठक। मानस-शास्त्र विषय पर सुचिन्तित प्रामाणिक ग्रंथ-रत्न।

यूनानी चिकित्सासार (द्वितीय संस्करण)—लेखक : हकीम ठाकुर दलजीत सिंह। यह पुस्तक वैद्य और हकीम दोनों के लिए अत्युपयोगी है।

यूनानी सिद्धयोग-संग्रह (तृतीय संस्करण)—यूनानी के नुस्खे आयुर्वेदीय नुस्खों की भाँति ही लाभदायक तथा सस्ते होते हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ चिकित्सकों तथा सर्वसाधारण के लिए उपयोगी है।

शार्ङ्गधर-संहिता—टीकाकार : आ० पं० राधाकृष्ण पाराशर। शार्ङ्गधर-संहिता की अनेक टीकाओं के बावजूद इस टीका में आयुर्वेद का रहस्य नये ढंग से समझाकर लिखा गया है।

संक्रामक रोग-विज्ञान (द्वि.सं.)—लेखक : कविराज बालकराम शुक्ल, आयुर्वेद-शास्त्राचार्य। संक्रामक रोगों पर सुचिन्तित ग्रंथ-रत्न।

सिद्धयोग-संग्रह (पंचम संस्करण)—आयुर्वेदोद्धारक वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य। इसमें आचार्यजी के अनुभव-सिद्ध योग हैं। अतएव, यह वैद्यों के लिए परम उपयोगी है।

मोटापन कम करने का उपाय—लेखक : श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी। मोटापा के अभिशाप ग्रस्त व्यक्ति इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें और उससे बचकर अपने जीवन को सुखी बनावें।

वनौषधि-शतक—लेखक : श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्राइवेट लि० के निदेशक प्राणाचार्य वैद्य पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा। इस ग्रंथ में ऐसी एक सौ वनौषधियों का विशद परिचय रंगीन चित्रों के साथ प्रस्तुत किया गया है, जिनके शुद्ध और उचित उपयोग द्वारा ही औषधि पूर्ण गुणकारी बन सकती है। अतएव, यह पुस्तक आयुर्वेद के विद्वानों, छात्रों, चिकित्सकों एवं आयुर्वेद से प्रेम रखनेवाले साधारण जनों के लिए परमोपयोगी है।

पारिषद्यं शब्दार्थं शारीरम्—सम्पादक : आयुर्वेदाचार्य पं० दामोदर शर्मा गौड़। भूमिका लेखक : आचार्य रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी। ११ सौ प्राचीन शब्दों के अर्थ आधुनिक शारीर शब्दों के साथ हिन्दी तथा संस्कृत में दिया गया है।

डायजशन एण्ड मेटाबोलिज्म इन आयुर्वेद (अंग्रेजी)—डा० सी० द्वारकानाथ द्वारा शरीर-तत्त्व और पाचन-संस्थान का वैज्ञानिक विवेचन।

ऐसी मुस्कुराहट के लिये हमें भी ये चाहिये

बैद्यनाथ

मंजन

लाल

ों के हिफाजत के लिये आप इसे व्यवहार करें

बैद्यनाथ

आंवला तैल

दिमाग को ठंढा रखने वाला महासुगन्धित तेल

विटामिन
'सी' से भरपूर
बैद्यनाथ च्यवनप्राश
सदा सब के लिये
सेवनीय रसायन



फेफड़ों के विकार, कफ़, खांसी, दमा,
जुकाम नाशक, आयु, बल वर्धक

बैद्यनाथ च्यवनप्राश

अष्टवर्गयुक्त

आज ही से व्यवहार करें

बैद्यनाथ
मृतसंजीवनी
सुरा

…ण एवं स्वस्थ दोनों के लिये समान
उपकारी शक्ति वर्धक टॉनिक